अजायब बानी

भजन माला-2010

सन्तबानी आश्रम
गाँव व डाकखाना : 16 पी.एस., वाया : मुकलावा
तहसील : रायसिंह नगर, जिला : श्री गंगानगर
पिन – 335 039 (राजस्थान)

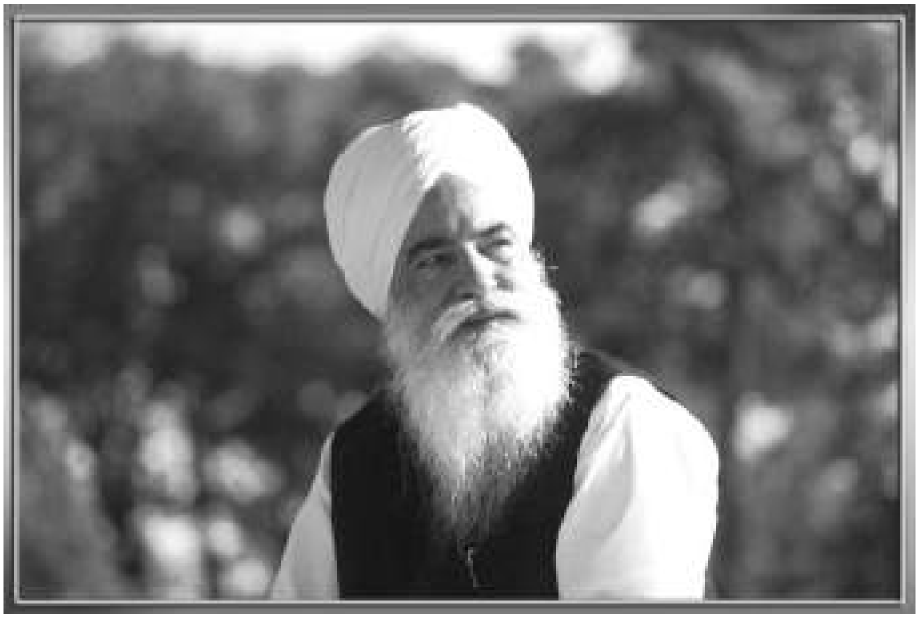

परम सन्तों द्वारा लिखे गए भजन-कविताएं या दुनियां के लोगों द्वारा लिखी गई कविताओं में जमीन-आसमान का फर्क होता है। दुनियावी लोग मन और बुद्धि के हिसाब से कविताएं लिखते हैं लेकिन परम सन्तों द्वारा लिखे गए भजन सच्चखंड से आते हैं।

परम सन्त अपने गुरु के आगे खड़े होकर भजन गाते हैं। परम सन्तों के लिखे भजनों को गाने से न केवल आत्मा को ठंडक पहुँचती है बल्कि मन भी मस्त होता है। परम सन्त सच्चखंड पहुँचकर परमात्मा-गुरु के आगे खड़े होकर अपने आपको नीच औगुणहारा बयान करते हैं। सन्तों के भजनों को प्यार, श्रद्धा और एकाग्र मन से गाने पर आत्मा को ठंडक पहुँचती है।

AJaib singh

(परम सन्त अजायब सिंह जी)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन	पृष्ठ क्र.
अजायब कृपाल नूं याद	1
अज शुभ दिहाड़ा ऐ	2
अज जग विच खुशियां	4
अड़ी वे अड़ी	5
अब मोहे नैनन स्यों	6
असां गुरां दे दवारे उत्ते	7
असी औगुणहारे जी	8
अंदर जोत जल रही	9
आ कृपाल कोल बैठ	10
आ कृपाल गुरु चित्त चरनी	11
आ कृपाल गुरु मैं शगन	12
आ गए दर ते भिखारी	13
आ कृपाल गुरु जी खलक	14
आपे तारे ते तारनवाली	15
आऐ जी तेरे दर ते भिखारी	16
आवो–आवो शाह कृपाल	17
आओ कृपाल प्यारे	18
आओ दयाल प्रभु कृपाल	19
आओ दर्शन करिऐ	20
आओ याद मनाईऐ	21
आवो सतगुरु आवो जी	22
आजा आजा आजा मेरे	23
आजा आवी जा	24
आजा सोहणया वे	25
आण के दवारे उत्ते	26
आया कृपाल अड़ियो नीं	27
आया लाहा लैंण प्राणी	28
आया सतगुरु आया नीं	29
आया सावन झड़ियां	30
उठ सुत्तया गाफला	31
इस प्रेम दी दुनियां विच	32
इक अरज अजायब	33
इक जोत निराली आई	34
ऐहे ते देश पराया	35
ऐहे दुनियां परौणी सजणा	36
ऐह मानस जामें नूं	37
ओ दर–दर दे फिरने नालों	38
ओ मन मूर्ख अब तो	39
ओ सिक्खा सिक्खी दा	40
क्यों गफलत विच मन	41
करके वेला याद	42
करां सिफत की गुरु	43
करो मन गुरु चरनों से	44
कैहंदे महिमा सतसंग दी	45
कृपाल अनामी अंतरयामी	46
कृपाल गुरु आ जा संगत	47
कृपाल गुरु जी साथो	48
कृपाल दा विछोड़ा	49

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन	पृष्ठ क्र.
कृपाल की महिमा	50
कृपाल यही संदेशा देता	51
कृपाल गुरु दा विछोड़ा	52
कोई ना किसे दा बेली	53
केहड़ा चंगा केहड़ा मंदा	54
कौन कहे मैं मर जाना है	55
खेल न्यारे बक्शनहारे	56
गम दुनियां दे हैंन बथेरे	57
कृपाल गुरु जी तेरा सहारा	58
कृपाल गुरु दा मुखड़ा	59
गुरु कृपाल मेरे घर आना	60
गुरु बिना ज्ञान नहीं	61
गुरु बिना गत्त नहीं	62
गुरु बिन नहीं बंदे	63
गुरु चुप रैहंदे सेवक बोल	64
गुरु मेरा चन्न वरगा	65
गुरु गुरु गुरु गुरु गुर बोल	66
गुरु तों बगैर बंदे	67
चड़े चेत हर चेत प्राणी	68
चलो मन सतगुरु के दरबार	69
चोरां तेरा घर लुटया	70
छड्ड झूठा जगत सरां दा	71
जप नाम गुरु दा ओऐ	72
जप लै तूं नाम गुरु दा	73
जपयो जिन गुरु कृपाल	74
जामा इंसान ऐ अमुल्ला	75
जिन्हां जपया कृपाल	76
जिसने नाम जपा	77
जी अज दी सुलखणी घड़ी	78
जीवन सफल बना ले	79
जे बंदया तैं रब नूं मिलना	80
जे सजना तैं मुर्शिद	81
जेहड़े गुरु भगती तों	83
जो बाणी पूरे सतगुरु दी	84
जोत रब दी है आई	85
झूठा संसार है	86
झूठे छड्ड के विहार	86
झूठी दुनियां च फसया	87
तक लै मना ओऐ	88
तपदे हिरदे ठारे	89
तुम बिन कौन सहाई	90
तुमसे मेरा जन्म–जन्म का	91
तुसीं अर्ज सुनों कृपाल	92
तुमसे मेरी प्रीत पुरानी	93
तूं डाडा बेपरवाह	94
तेरा सब दुनियां तो सोहणा	95
तेरी हरदम याद मना रहे	96
तेरी कुदरत तूं ही जाने	97

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन	पृष्ठ क्र.	भजन	पृष्ठ क्र.
तेरी सोच करे कृपाल	98	नाम तो बगैर बंदा	123
तेरा नाम ध्याईऐ जी	99	नाम साहेब दा चंबे दी	124
तेरे नाम दी बैरागण बनके	100	पक्क जा ओ सिक्खा	126
तेरे नाम ने बनाऐ	101	पानी देया बुलबुलया	127
तेरे प्रेम बावरी कीता	102	पीर दा विछोड़ा	128
तैनूं वारो वारी आखे मना	103	फिर याद सावन दी	129
दर्श पिया दा पा लवां	104	बक्शो बक्शनहार पीया	130
दाता जी कित्थे गयों	105	बदियां तों बच सजणा	131
दिल टुटदे आबाद करे	106	बणके रूहां दा व्यापारी	132
दिखादे दिखादे दिखादे	108	बंदा नाम जपणें नूं आया	133
दु:खां वाली घड़ी बंदे	109	बंदे दियां आसां सदा	134
दुनियां दे विच रूहां ते	110	बंदे नाम गुरु दा जप लै	135
दुनियां विच प्रीत लगाई	111	बंदा बण के आया	136
दीदार कृपाल प्यारे दा	112	बैठा घट–घट विच दातार	137
देख लया असीं देख लया	113	बिना नाम दे जपे	138
देखी बहुत निराली महिमा	114	भावैं जाण ना जाण	139
देजा तूं दर्श हुण लाईयां	115	भुल्लीं ना गुरां दे उपकार	140
देजा सहारा कृपाल प्यारे	116	मन जदों हठीला होवे	141
धन कृपाल प्यारेया	117	मन मंदिर में आओ	142
नहीं लब्भणा मानस जन्म	118	मनां परदेसिया सुण लै	143
नाम की महिमा अपरम्पार	119	मार चौकड़ी कदी ना	144
नाम गुरु दा जप लै	120	मानस जन्म लाल रतन	145
नाम जप क्यों लौना ऐ	121	मिल जाऐ मन मोहणा	146
नाम जप बंदया	122	मिलया सावन दा बेटा	147

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन	पृष्ठ क्र.	भजन	पृष्ठ क्र.
मिलो कृपाल प्यारेया	148	लिख सतगुरु वल पाईयां	173
मुड़ घर आ जा	149	लिखन वालेया तूं	174
मुझे अपना बना लो	150	वड्डे–वड्डे दुनियां दे	175
मेरा सतगुरु सोहणा आ	151	वाह मेरे सावन वाह मेरे	176
मेरा कागज़ गुनाह वाला	152	शब्द नाल जोड़ दातेया	177
मेरे दाता जी सुनो बेनती	153	शाह कृपाल प्यारेया	178
मेरे मनमोहन कृपाल	154	शुभ दिहाड़ा भागां भरया	179
मेरे विच ना गुरु जी	155	सईयो नीं मैं कमली होई	180
मेरे सतगुरु दीन दयाल	156	सईयो नीं कृपाल गुरु जी	181
मेरे सतगुरु प्यारे जी	157	साईयां तूं पार लंघावीं	182
मैं तो कृपाल से विछुड़	158	सईयो नीं इक नूर इलाही	183
मैं बलिहारे जावां	159	सईयो नीं सावन आया	184
मैनूं कृपाल मिलण दा	160	सच्चा नाम जप सोहणी	185
मैंनू पुच्छण आण सहेलियां	161	सच्ची बाणी अंदर हो	186
मैंनू तेरे बिना किसे दी नां	163	सतगुरु कृपाल जी दर्शन	187
याद गुरु कृपाल दी	164	सतगुरु कृपाल प्यारा	188
रब लब्भदा ऐं	165	सतगुरु जी बक्श लयो	189
रंग रूप दा माण ना करिऐ	166	सतगुरु जी दर्श दिखाओ	190
रूह मालिक तों होई दूर	167	सतगुरु माफ करीं	191
रूहां साडियां नूं पार लघां	168	सतगुरु प्यारे मेरी ज़िंदगी	192
रौंदी मैं दर–दर फिरदी	169	सतगुरु प्यारे ने मन	193
लक्खां शक्लां तक्कियां	170	सतगुरु ने दुनियां तारी	194
लग जाऐ ध्यान कृपाल दा	171	सतगुरु सच्चा	195
लिख चिट्ठियां लिख चिट्ठियां	172	सतगुरु सावन शाह	196

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन	पृष्ठ क्र.
सतगुरु सच्चे मेरे दाता	197
सतगुरु सोहणा मेरा है	198
सब पर दया करो	199
सन्तां दा कर लै संग	200
साडा ना कोई वे लोको	201
साडे मिरगां ने खेत	202
सानूं भुल्लयां नूं रस्ते	203
सावन कृपाल प्यारे	204
सावन केड़यां रंगा विच	205
सावन गुमदा–गुमदा गुम	205
सावन गुरु कृपाल जी	206
सावन चन्न वरगा	207
सावन दयालु ने रिम–झिम	208
सावन ते कृपाल दियां	209
सावन दा बेटा सोहणा	210
सावन प्यारे बक्शहारे	211
सावन शाह आया जग ते	212
सावन शाह जी आओ	213
सावन–सावन दुनियां	214
सावन–सावन पई ढुडेंदी	215
सुच्चे नाम दा सच्चा	215
सिमरन करिऐ नाम	216
सुण सिक्खा सिक्खी वाले	217
सिर गुरु चरनां ते रखनी	218
सोहणा–सोहणा मुखड़ा	219
सोहणा सावन शाह दा	220
सोहणा शाह कृपाल प्यारा	221
हार रानी दे गले विच	222
हे सखी सुन री सखी	223
हमारे प्यारे सतगुरु जैसा	225
हे सावन हे कृपाल	226
हे दयाल गुरु कृपाल	227
होऐ के दयाल कृपाल	228
होया सुख ओले	229

सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

भजन	पृष्ठ क्र.
आजा प्यारे सतगुरु	238
इक दर्दमंद दिल की	242
ओह सोहणा ऐनां सोहणा	246
चलो नीं सईयो सिरसे	260
जो बक्शो हमको	267
देखा है जबसे हमने	274
मलायक से बशर से	291
सावन कभी आओ	309
सावन गले लगाकर	312
हरि मोको ले चल	317

भजन	पृष्ठ क्र.
कबीर साहब जी	
अपना कोई नहीं है जी	231
उठ जाग मुसाफिर	243
गुरु समान नहीं दाता	251
छोटी जात दा कबीर	262
जाग मुसाफिर जाग	266
तेरे नाम दा भरोसा	273
पाखंड में कुछ नाहीं	283
मना रे तेरी आदत	289
महरम होऐ सो जाने	290
सुनो बेनती मेरी सतगुरु	313
ब्रह्मानंद जी	
अनहद की धुन	230
गुरु बिन कौन सहाई	253
गुरु बिना कौन मिटावे	254
घट ही में अविनाशी	258
सतसंगत जग सार साधो	300
मस्ताना जी	
क्या हुआ जे जन्म लिया	248
नाच रे मन नाच	278
मेरा सतगुरु प्रीतम	285
रे मन स्याना हो जा	295
सतगुरु के गुण गा ले	301

भजन	पृष्ठ क्र.
गुरु अर्जुनदेव जी	
असीं मैले सतगुरु जी	233
करौं बेनती सुनो मेरे मीता	250
चार पदार्थ जे को माँगे	261
जिसके सिर ऊपर तू स्वामी	263
जी सतगुरु प्यारे आ मिलो	264
जो माँगे ठाकुर अपने ते	269
ठाकुर तुम शरनाई आया	270
तती वाओ ना लगदी जी	270
तू मेरा पिता तू है मेरा माता	271
दु:ख भंजन तेरा नाम जी	275
धन–धन सतगुरु मेरा	277
नाम तुम्हारा हिरदे बासे	281
पाऐ लगो मोहे करौं बेनती	282
लोच रेहा गुरु दर्शन तांईं	294
सगल सृष्टि का राजा	305
साँस–साँस सिमरो गोविंद	313
हौं कुरबाने जाओं	318
गुरु रविदास जी	
ऐहे जन्म तुम्हारे लेखे	244
स्वामी जी महाराज	
करूँ बेनती दोऊ कर जोरी	249
भाई नंदलाल जी	
मेहरा वालेया साईयां	286

भजन	पृष्ठ क्र.
गुरु बानी	
अपने सेवक की आपे राखे	232
आ सजना देखां दर्शन	235
आज खुशी दिन आया	239
उडके गुरां नूं मिलिऐ	244
कोई गुण ना गुरु जी	252
गुरु गुरु गुर कर मन	255
गुरु सतगुरु का जो	256
गुरु साजन लाधा जी	257
चरन कमल तेरे धोऐ–धोऐ	259
चन्द लख चढ़ जावे जी	261
जी जुग भावैं चार जीविऐ	264
जे तूं ना औंदा रामा	268
जावां बलिहार जी	269
दर्शन देख जीवां गुरु	274
नाम गुरु दा सच्चा	280
नाम मिले नाम मिले	281
प्रेम कियो तिन ही प्रभ	282
बिसर गई सब तात	284
मिल मेरे प्रीतमा जीओ	288
मेरे दीन दयाला जी	288
मैं खड़ी उडीकां जी	289
मैं क्यों कर तोड़ां जी	293
लख पापी तर गए जी	293
सच्चया गुरु मेहरबाना	299

भजन	पृष्ठ क्र.
गुरु बानी	
सतसंगत बाजो जी	299
सतगुरु पूरा जिन सुणया	302
सतगुरु प्रीतम प्यारा	303
सभै घट राम बोलै	306
सन्त का मार्ग धर्म की	307
साधुआं धूड़ी कर इश्नान	308
साडा हाल मरीदां दा	309
साहिबा जी तेरे दर्शन दी	312
सोई धरत नसीबां वाली	314
सोई थान सुहावा	314
बाबा सोमनाथ जी	
तेरा नाम रसमुल्ला जी	272
सतगुरु सावन शाह	304
गुरु तेग बहादुर जी	
काहे रे वन खोजन जाई	248
तेरे चरनां दा आसरा	271
गुरु अमरदेव जी	
जे पारस होणा ऐ	268
बुल्लेशाह जी	
मैंनू छड्ड के कल्ली नूं	292
रब्बा लख–लख शुकर	296
साडे वल मुखड़ा मोड़	306

भजन	पृष्ठ क्र.	भजन	पृष्ठ क्र.
पाठी जी		**गुरु अंगददेव जी**	
आई रब्बी जोत	234	धुन घट में बज रही	277
आओ रलमिल दर्शन करिऐ	236	**फरीद साहब जी**	
आओ सईयो दर्शन करिऐ	240	जां होऐ कृपाल	265
इक जोत इलाही आई ऐ	241	**गुरमेल सिंह जी**	
दयो जी वधाईयां	276	आ सजणा चल	237
वंडदा हरदम नाम खज़ाने	297	**अन्य**	
सईयो नीं अज	298	ओ अक्ल के अंधे	245
सावन कृपाल प्यारे	310	गुरुदेव मेरी नैया	257
गुरु नानकदेव जी		सावन दा तूं लाल जी	311
चिट्टा कपड़ा ते रूप	262	सोहणे सतगुरु दा	315
भावें लख–लख तीर्थ	284		

आप जब संगत में भजन गाएं सबसे पहले भजन-माला का पृष्ठ क्रमांक अवश्य बोलें ताकि संगत भी आपके साथ भजन गा सके।

परम सन्तों ने जिस भाव से भजन लिखे हैं हमें भजन उसी भाव से गाने चाहिए। हम भजन गाते हुए अपनी तरफ से कोई अन्य शब्द या नाम का इस्तेमाल न करें अगर हम ऐसा करते हैं तो हम सन्तों की बानी का अनादर कर रहे होते हैं।

मुद्रक - नेशनल प्रिंटर्स, बी-56, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज-2, नई दिल्ली-110 028

अजायब कृपाल नूं याद करदा

अजायब कृपाल नूं, याद करदा,
विच राजस्थान दियां, झाड़ियां दे,
महल माड़ियां छड, फकीर होया,
बुरे दुःख वियोग कन्न, पाड़यां[1] दे,

1. बोल माता अजायब दी (2), मत्त देवे,
बच्चा मांण लै सुख, सरदारियां दे,
नहीं जाऊ बीमारी, शरीर विचों,
जीहनूं डंग[2] गए नाग, ऐह झाड़ियां दे,

2. कृपाल बाज[3] ना दुःखड़े[4] (2), दूर हुन्दे,
मिलदे वैद्य ना इश्क दियां, नाड़ियां दे,
अक्खां नाल लगा के, सन्त अक्खां,
रस खिचदे वांग[5], घुलाड़ियां[6] दे,

3. सच्ची दुःखिऐ अजायब दी (2), आवाज सुण के,
जंदे[7] खुले कृपाल दियां, ताड़ियां[8] दे,
जद कूक[9] सुणी, 'अजायब' दी, गई कलेजा चीर,
आसन छड सच्चखंड दा, आऐ कृपाल अखीर

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. पाड़यां – छिदवाना 2. डंग – डंक 3. बाज – बिना 4. दुःखड़े – दुःख 5. वांग – तरह
6. घुलाड़ियां – गन्ने का रस निकालने वाला 7. जंदे – ताले 8. ताड़ियां – समाधि 9. कूक – आवाज

अज शुभ दिहाड़ा ऐ

अज शुभ दिहाड़ा[1] ऐ, भागां नाल आया ऐ,
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ, (2)

1. जग औजड़[2] उलझे नूं, जग भुल्ले भटके नूं,
जग वहमां जकड़े नूं, जग थिड़के अटके नूं, (2)
बाणी उपदेश सुणा, गुरां राहे पाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा .....

2. कुझ[3] नूर दियां गल्लां, कुझ दूर दियां गल्लां,
होठां ते थिरकन एयों, ज्यों सागर दियां छल्लां[4], (2)
कुझ लंघे[5] वक्त दियां, कुझ ऐस्से[6] वक्त दियां,
कुझ अगले वक्त दियां, गल्लां कैह–कैह गुज्जियां[7],
दिल टुंब[8] जगाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा .....

3. इस फ़ानी[9] दुनियां चों, जो पुज्ज प्यारा ऐ,
जो वस है लालच दे, बेचमक सितारा ऐ, (2)
इस जग हनेरे[10] चों, पापां दे डेरे चों,
ओहदे ते ऐहदे चों, तेरे ते मेरे चों,
सच्चे ते झूठे दा, जिस भेद मिटाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. दिहाड़ा – दिन	2. औजड़ – भटकना	3. कुझ – कुछ	4. छल्लां – लहरें	5. लंघे – गुजरे हुए
6. ऐस्से – वर्तमान	7. गुज्जियां – भेदभरी	8. टुंब – गहराई से	9. फानी – नाशवान	10. हनेरे – अंधेरे

4. जो इस राहे आवे, जो इस राहे जावे,
नरकां दा भागी वी, स्वर्गां दी शह पावे (2)
ऐह अपनी खेती ऐ, ऐहनूं जेहड़ा करदा ऐ,
अगेती या पछेती ऐ, ना भुक्खा मरदा ऐ,
इस राहे हर पापी, टुर[1] भगत कहाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा .....

5. ना विच मसीत[2] मिले, ना विच मंदिर प्रभु,
ना विच उजाड़ां दे, है सब अंदर प्रभु, (2)
ऐन्हां बाहरी अक्खियां नूं, जद बंद कर लैंदे हां,
गुरुआं दी सिखया दा, सिमरन कर लैंदे हां,
गुरुआं इस राहे पा, रब आप मिलाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा .....

6. बूँदा दे ओहले चों[3] , बदलां दे ओहले चों,
कक्करां ते स्यालां[4] चों, गर्मी दे शोले चों, (2)
गुरुआं दी कृपा ने, गुरुआं दी बाणी ने,
गुरुआं दे वाकां[5] ने, लक्ख पापी कढे ने,
जीन्नां ने गुरुआं दा, इक नाम ध्याया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा .....

7. 'अजायब' दी टेक[6] ऐहो, कृपाल दे लग सेवे,
विच रज़ा दे रह राज़ी, प्रभु जो वी दे देवे, (2)
ऐह रस्ता है तेरा, इस तों जे भटकेंगा,
औजड़ विच पै जाऐंगा, जिल्लत[7] विच अटकेंगा,
जिस गुरु भुलाया ऐ, उस सुख ना पाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. टुर – चलकर 2. मसीत – मस्जिद 3. ओहले चों – ओट से 4. ककरां ते सयालां – बहुत सर्दी
5. वाकां – वचन 6. टेक – सार 7. जिल्लत – बेइज्जत

अज जग विच खुशियां

अज जग विच खुशियां वसियां[1] ने, (2)

1. सच्चा नूर जगत विच आया ऐ, गुलाब देवी दी कुख[2] तों जाया ऐ, (2)
कृपाल जी नाम रखाया ऐ, चन्न चढ़े ते रिश्मां[3] हसियां ने,
अज जग विच .....

2. पिता हुक्म सिंह दा प्यारा ऐ, दुनियां दा बणया सहारा ऐ, (2)
सच्चे नाम दा लाया नारा ऐ, रूहां मैलियां तो कीतियां अच्छियां ने,
अज जग विच .....

3. दुनियां च अंधेरा छाया ऐ, सतनाम दा चक्कर लाया ऐ, (2)
देसां–परदेसां च छाया ऐ, रूहां कढियां[4] जो काल ने डस्सियां ने,
अज जग विच .....

4. सावन तों सच्चा नाम लया, लक्ख वार उस तों कुरबान गया, (2)
सतगुरु दी शरणी आण पया, आसां सावन दियां रखियां ने,
अज जग विच .....

5. कोई जन्म दिहाड़ा मनौंदा ऐ, कोई बर्थ–डे कह के गौंदा[5] ऐ, (2)
'अजायब' कृपाल नूं चौहंदा ऐ, मनियां जो बातां सच्चियां ने,
अज जग विच .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. वसियां – बसना 2. कुख – कोख 3. रिश्मां – किरणें 4. कढियां – निकाल दी 5. गौंदा – गाना

अड़ी वे अड़ी

अड़ी[1] वे अड़ी, ना कर बंदे वे अड़ी,
लग्गी नाम दी झड़ी[2], नाम जप सोहणेयां वे,
मौत सिर ते खड़ी, नाम जप बंदेया वे, (2)

1. हत्थ आया समां लाहा[3] खट[4] लै तूं नाम ओऐ,
लभ्भणां ना वारो वारी जामा इंसान ओऐ, (2)
जिंद, रह जानी पड़ी, लग्गी नाम दी झड़ी,
नाम जप बंदेया .....

2. संगतां दे वालिया तूं संगत संभाल वे,
असीं हां यतीम[5] साडा रखणा ख्याल वे, (2)
पल–पल, घड़ी वे घड़ी, लग्गी नाम दी झड़ी,
नाम जप बंदेया .....

3. तेरे जेही[6] होर कोई दिसदी ना शान वे,
तेरे बिना सुन्ना मेरा हो गया जहान वे, (2)
रोवां, दर ते खड़ी, लग्गी नाम दी झड़ी,
नाम जप बंदेया .....

4. तेरे ते दयाल प्रभु होया कृपाल वे,
लभ्भ गया लाल ऐहनूं रख लईं संभाल वे, (2)
'अजायब', छड दे अड़ी, लग्गी नाम दी झड़ी,
नाम जप बंदेया .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. अड़ी – जिद्द 2. नाम दी झड़ी – नाम की बरसात 3. लाहा – लाभ 4. खट – कमाना 5. यतीम–अनाथ
6. जेही – जैसी

अब मोहे नैनन स्यों

अब मोहे, नैनन स्यों[1], गुरु दीया, (2)

1. दर–दर फिरती, पूछे ना कोई, ना जीवत ना समझुं मोई[2], (2)
मोहे गुरु ने जीवत कीया, (2)
अब मोहे .....

2. मैं अनजान, कछु ना जानूं, गुरु की महिमा ना पहचानूं (2)
मोहे माटी स्यों कंचन कीया, (2)
अब मोहे .....

3. नैनन में ना, सूझत[3] मोहे, रात अंधेरी रस्ता नाहें, (2)
मोहे गुरु ने रौशन कीया, (2)
अब मोहे .....

4. मोरे गृह में, सतगुरु आए, सूते हुए भाग जगाऐ, (2)
'अजायब' कृपाल सतगुरु लीया, (2)
अब मोहे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. नैनण स्यों – नैनों से 2. मोई – मरी हुई 3. सूझत – दिखना

असां गुरां दे दवारे उत्ते रोणां

असां[1], गुरां दे दवारे उत्ते रोणां, शायद मन मेहर पै जाऐ,
असां, झुक–झुक दर ते खड़ोणां[2], शायद मन मेहर पै जाऐ, (2)

1. लीरां–लीरां[3], करके सूहे, कासा[4] फड़के, बैठे बूहे[5], (2)
हुण तां, हंझुआं[6] दा हार परोणां[7], शायद मन मेहर पै जाऐ,
असां गुरां दे .....

2. दर तेरे ते, अलख जगाईऐ, मुँहों मंगियां, मुरादां[8] पाईऐ, (2)
भावें, दिन रातीं पै जाऐ खड़ोणां, शायद मन मेहर पै जाऐ,
असां गुरां दे .....

3. गिण–गिण दिन मैं, आसां लाईयां, मुश्किल दुःखड़े, सहण जुदाईयां, (2)
साडा, मिल जाऐ किते मन मोहणां, शायद मन मेहर पै जाऐ,
असां गुरां दे .....

4. मन दे फुरने[9], साडे फैले, जन्म–जन्म तो, हो गए मैले, (2)
धोबी, बणके रूहां नूं पया धोणां, शायद मन मेहर पै जाऐ,
असां गुरां दे .....

5. शाह कृपाल जी, साईं मेरे, बैठा 'अजायब' धूणां, लाई दर तेरे, (2)
झोली, फड़ तेरे दर ते खड़ोणां, शायद मन मेहर पै जाऐ,
असां गुरां दे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. असां – हमने 2. खड़ोणां – खड़े होना 3. लीरां लीरां – फटे हुए कपड़े 4. कासा– भीख मांगने वाला कटोरा
5. बूहे – दरवाजे 6 हंझुआं – आँसू 7. हार परोणां – हार बनाना 8. मुरादां – ख्वाहिशें 9. मन दे फुरने – मन के संकल्प

असीं औगुणहारे जी

असीं[1] औगुणहारे जी, अरजां करिऐ अरजां करिऐ (2)

1. मोह माया दे जाल च फसके, (2)
बण गए नकारे जी,
अरजां करिऐ .....

2. भवसागर विच बेड़ी[2] अड़ गई, (2)
लावो पार किनारे जी,
अरजां करिऐ .....

3. तेरी महिमा तूं ही जाणें, (2)
असीं कौण विचारे जी,
अरजां करिऐ .....

4. तेरे बिना दाता जी कोई ना साडा, (2)
मेरे सतगुरु प्यारे जी,
अरजां करिऐ .....

5. मैं अन्जाण 'अजायब' विचारा, (2)
कृपाल सहारे जी,
अरजां करिऐ .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. असीं – हम 2 बेड़ी – नाव

अन्दर जोत जल रही

अन्दर जोत, जल रही, बाहर मन, भूला फिरे, (2)

1. स कमल में, जोत रोशनाई, घंटा शंख, आवाज़ सुनाई, (2)
घट–घट में जग रही,
बाहर मन भूला .....

2. त्रिकुटी बादल, बजत मृदंगा, तारा मंडल, सूरज चंदा, (2)
चमन फुलवाड़ी लग रही,
बाहर मन भूला .....

3. दशम् दवारा, शब्द झुनकारा, सुन्न मंडल, त्रिवेणी धारा, (2)
किंगरी सारंगी बज रही,
बाहर मन भूला .....

4. भंवर गुफा मोती, महल अटारी, सुरत निरत धुन, बीन सुनारी, (2)
सन्त मंडली सज रही,
बाहर मन भूला .....

5. सच्चखंड सुरत जा, अमृत पीया, सतपुरुष का, दर्शन कीया, (2)
धुन प्यार की बज रही,
बाहर मन भूला .....

6. सच्चा देश सच, तख्त सुहाया, दास 'अजायब', कृपाल ध्याया, (2)
सन्त दया बरस रही,
बाहर मन भूला .....

आ कृपाल कोल बैठ असां दे

आ कृपाल कोल बैठ असां[1] दे, फोल दिलां दे वरके[2],
होई कौण खनामी[3] साथों, लंघ जांदों[4] चुप कर के (2), (2)

1. असीं नहीं भुल्ल सकदे तैनूं, जिन्ना चिर[5] साह[6] वगदे ने[7], (2)
सच नहीं औंदा जे तैनूं, वेख[8] सीने हत्थ धर के, (2)
आ कृपाल कोल .....

2. तेरी ही हां तेरी सां, जद तों चाहेया तैनूं, (2)
प्यार तेरे संग कीता ऐ तां, की रैहणा फिर डर के, (2)
आ कृपाल कोल .....

3. दर तेरे ते आए हां कुछ, आस उम्मीदां लै के, (2)
पा दे खैर[9] यां मोड़ दे खाली, खुशियां दे सावन बण के, (2)
आ कृपाल कोल .....

4. वेख परख के सानूं सोहणी, वांग[10] आ जावांगी तर के, (2)
पर इक वारी बैह[11] कोल 'अजायब' दे, फोल दिलां दे वरके, (2)
आ कृपाल कोल .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. असां – हमारे	2. वरके – पन्ने	3. खनामी – गलती	4. लंघ जांदो – निकल जाना	5. चिर – देर
6. साह – सांस	7. वगदे ने – चलते हैं	8. वेख – देख	9. खैर – भीख	10. वांग – तरह	11. बैह – बैठ

आ कृपाल गुरु

आ कृपाल गुरु चित्त चरनी जोड़ देयो,
जांदा[1] बदियां[2] वल मन साडा[3] मोड़ लेयो, (2)

1. जेकर चौहंना ऐं तां भगती लौनां ऐं,
जेकर चौहंना ऐं तां दूर हटौनां ऐं, (2)
आ कृपाल गुरु .....

2. तेरी मंजिल साथों दूर दुराडी[4] वे,
तेरे हत्थ साईयां है डोर असाडी[5] वे, (2)
आ कृपाल गुरु .....

3. आवे मौज धरती हेठ बिठौनां ऐं तूं,
आवे मौज ते असमान उडौनां ऐं तूं, (2)
आ कृपाल गुरु .....

4. साडियां लग्गियां नूं हुण तोड़ निभा देवीं,
रूहां तेरियां नूं सच्चखंड पुचा देवीं, (2)
आ कृपाल गुरु .....

5. तैथों विछड़ेयां नूं तूं आप मिलौनां ऐं,
बोल 'अजायब' रेहा तूं जिवें[6] बुलौनां ऐं, (2)
आ कृपाल गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. जांदा – जाना 2. बदियां – बुराईयां 3. साडा – हमारा 4. दुराड़ी – बहुत दूर 5. असाडी – हमारी
6. जिवें – जैसे

आ कृपाल गुरु मैं शगन

आ कृपाल गुरु मैं शगन मनौंदी हां,
के दर्शन दे जाओ मैं वास्ते पौंदी हां[1], (2)

1. आओ सतगुरु जी मैं अरजां करदी हां,
तेरी संगत दा मैं पानी भरदी हां, (2)
आ कृपाल गुरु .....

2. तेरी झलकी तों सूरज शरमौंदा ऐ,
तेरी महिमा दा कोई अंत ना पौंदा ऐ, (2)
आ कृपाल गुरु .....

3. तेरे बचनां ते मैं आण[2] खड़ो[3] गई हां,
रख लै पत्त[4] साईयां मैं तेरी हो गई हां, (2)
आ कृपाल गुरु .....

4. भिच्छिया[5] पांवीं तूं हैं परउपकारी वे,
खाली मोड़ी नां[6] दर आए भिखारी वे, (2)
आ कृपाल गुरु .....

5. तेरी संगत दा तूं आप सहारा हैं,
तेरे दर आया 'अजायब' विचारा है, (2)
आ कृपाल गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वास्ते पौंदी हां – अर्ज कर रही हूँ 2. आण – आना 3. खड़ो – खड़े होना 4. पत्त – इज्जत 5. भिच्छिया – भिक्षा 6. मोड़ीं नां – वापस ना भेजना

आ गए दर ते भिखारी

आ गए, दर ते भिखारी, खैर[1] पांवीं दातेया, (2)

1. आऐ चल के सवाली[2], मोड़[3] देवीं नां तूं खाली, (2)
रेहा, आसरा ना कोई, फेरा पांवीं दातेया,
आ गए, दर ते .....

2. चल्ली कूड़[4] दी हनेरी[5], सच पौंदा नहीं फेरी, (2)
दाता, लांवीं ना तूं देरी, आ बचावीं दातेया,
आ गए, दर ते .....

3. रचना काल पसारी, धर्म उडया मार उडारी[6], (2)
हो गई, दुनियां बहुत लाचारी, ठण्ड वरताईं दातेया,
आ गए, दर ते .....

4. प्यार प्रेम कोई ना चाहवे, उल्टा वाड़[7] खेत नूं खावे, (2)
तेरे, बाज ना कोई बचावे, छेती आंवीं दातेया,
आ गए, दर ते .....

5. घटां पाप दियां आ छाईयां, बिना कृपाल रूहां मुरझाईयां, (2)
कहे, 'अजायब' क्यों देरियां लाईयां, आ के बचावीं दातेया,
आ गए, दर ते .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. खैर – भिक्षा 2. सवाली – सवाल करने वाला 3. मोड़ – वापिस 4. कूड़ – झूठ 5. हनेरी – आंधी
6. उड़ारी – उड़ जाना 7. वाड़ – बाड़

आ गुरु कृपाल जी

आ गुरु कृपाल जी, खलक[1] रो रही है, (2)

1. नहीं कोई जग ते तेरे जेहा[2] दर्दी,
तेरे बिना दुनियां पई मरदी, (2)
जुल्म हस रेहा है, खुशी रो रही है,
आ गुरु कृपाल जी .....

2. इक वारी जग ते तूं फेरा पा जा,
परमार्थ दा खेड़ा[3] वसा जा, (2)
सच्चाई दी हालत, बुरी हो रही है,
आ गुरु कृपाल जी .....

3. ईरखा[4] ते वैर दे भांबड़[5] चलदे,
तेरी दया बिना पिच्छे ना टलदे, (2)
जगावो साडी रूह, जन्मां तों सो रही है,
आ गुरु कृपाल जी .....

4. नूरी दर्श दी झलक दिखा जा,
तपदियां रूहां नूं ठण्ड वरता जा[6], (2)
'अजायब' दी अर्ज, सदा हो रही है,
आ गुरु कृपाल जी .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. खलक – दुनियां 2. जेहा – जैसा 3. खेड़ा – गाँव 4. ईरखा – ईर्ष्या 5. भांबड़ – आग की लपटें
6. वरता जा – बाँट जा

आपे तारे ते तारनवाली

आपे तारे[1] ते तारनवाली[2], आई ऐ इक, रब दी जोत निराली, (2)

1. ओह तां करदा संभाल सारे जग दी, जो–जो वी आवे,
आ के सुत्तियां ओह रूहां नूं जगोंदा, अते नाम जपावे, (2)
भरे झोलियां ना रखदा खाली,
आई ऐ इक .....

2. ओह घट–घट दे विच वसदा, रैहंदा है न्यारा,
ओह करे भगतां दी रखया, दंड दुष्टां नूं करारा[3], (2)
पैज रखदा जो आए सवाली,
आई ऐ इक .....

3. ओहनूं देवी–देवते मनदे, वेदां यश गाया,
ओह जल–थल दे विच वसदा, कोई अंत ना पाया, (2)
ओह कट दा काल दी जाली,
आई ऐ इक .....

4. ओह कदे सावन बण औंदा, रूहां नूं तारे,
ओह कदे कृपाल सदौंदा[4], तपदे दिल ठारे, (2)
रूह 'अजायब' दी आ के संभाली,
आई ऐ इक .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. तारे – पार करवाना 2. तारनवाली – मल्लाह 3. करारा – जोरदार 4. सदौंदा – कहलवाता

आऐ जी तेरे दर ते भिखारी

आऐ जी तेरे, दर ते भिखारी खैर[1] पावो, (2)

1. तेरा दरबार सच्चा, होवे दीदार सच्चा,
मिलदा है प्यार सच्चा, बेड़ा है पार सच्चा, (2)
आवो, बणके उपकारी खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

2. तेरी है शान निराली, दुःखियां दा तूं हैं वाली,
रूहां दे बाग दा माली, कट देवो आ यम जाली, (2)
तेरी, महिमा निराली खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

3. होमैं दा रोग हटावो, नूरी जो झलक दिखावो,
सच्चा जो शब्द सुनावो, नाम दी खैर पावो, (2)
देवो, झलक न्यारी खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

4. दुनियां दा देख पसारा, चलदा ना कोई चारा,
'अजायब' सी कौण विचारा, दित्ता कृपाल सहारा, (2)
साडी, कट दो बीमारी खैर पावो,
आऐ जी तेरे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. खैर – भीख

आवो-आवो शाह कृपाल साईं

आवो–आवो शाह कृपाल साईं,
सोहणा आ के दर्श दिखा देवो, (2)

1. तेरा दर्श इलाही[1] दुःख तोड़ देवे,
कई जन्मां दे टुटे दिल जोड़ देवे, (2)
आवो–आवो शाह .....

2. तेरी सोहणी झलक निराली ऐ,
ओह जीवन बक्शन वाली ऐ, (2)
आवो–आवो शाह .....

3. तांघां[2] मेरे दिल नूं लग्गियां पीया,
सट्टां[3] आण विछोड़े दियां वजियां[4] पीया, (2)
आवो–आवो शाह .....

4. असीं जन्मां दे अंधे ना रोल पीया,
बंद अक्खियां दया कर खोल पीया, (2)
आवो–आवो शाह .....

5. तेरा नाम सच्चा दुःख नाशक है,
'अजायब' तेरे चरनां दा आशिक है, (2)
आवो–आवो शाह .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. इलाही – परमात्मा जैसा 2. तांघां – चाह 3. सट्टां – चोट 4. वजियां – लगियां

आओ कृपाल प्यारे

आओ कृपाल प्यारे, दु:ख दर्द विछोड़ा पल–पल दा,
आओ–आओ ..... (2) (2)

1. तेरे ही प्यार विच, लाईयां सी मैं अक्खियां,
तक–तक राह तेरा, सोहणया वे थक्की आं, (2)
आ के नूरी झलक दिखा दे, तूं मालिक दाता जल–थल दा,
आओ–आओ ..... (2)

2. दुनियां ते दिस्से, तेरे जेहा कोई होर ना,
तेरे बिना सानूं होर, किसे दी वी लोड़ ना, (2)
तूं हैं दु:खी दिलां दा जानीं[1], है तेरा सहारा पल–पल दा,
आओ–आओ ..... (2)

3. याद तेरी विच असीं, दिन हां गुजार दे,
ठाठां[2] तेरे मारदे, समुन्द्र प्यार दे, (2)
करो तरस ते पार लगावो, कोई अन्त ना आवे दल–दल दा,
आओ–आओ ..... (2)

4. घट–घट विच तेरी, झलक दिखावें तूं,
आप दया कर नाम, जीवां नूं जपावें तूं, (2)
तेरे प्यार दा 'अजायब' भौरा, किवें सहे विछोड़ा पल–पल दा,
आओ–आओ ..... (2)

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. जानीं – जानने वाला 2. ठाठां – जोश

आओ दयाल प्रभु कृपाल

आओ दयाल प्रभु, कृपाल पीया, सानूं[1] दर्श दिखा जाओ, (2)

1. पा के दर्श मैं तपत बुझावां, वारी जावां ते घोली[2] जावां, (2)
आ के जीवां नूं अमृत, प्याल पीया,
सानूं दर्श दिखा .....

2. असीं जन्म–जन्म दे रोगी, कामी क्रोधी कपटी भोगी, (2)
साडा कटदे माया जाल पीया,
सानूं दर्श दिखा .....

3. हुण तां डोले[3] जग दा बेड़ा, बन्ने[4] लावे होर हुण केहड़ा[5], (2)
साडा दुःखियां दा रखयो, ख्याल पीया,
सानूं दर्श दिखा .....

4. नाम दान दी झोली भर दे, मुरदा रूहां नूं जिंदा कर दे, (2)
रूहां अपणियां आप संभाल पीया,
सानूं दर्श दिखा .....

5. आ कृपाल 'अजायब' दे साईयां, तेरे बाज[6] रूहां मुरझाईयां, (2)
लड़ लग्गयां दी[7] लज्जया[8] पाल पीया,
सानूं दर्श दिखा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सानूं – हमें 2. घोली – बलिहार 3. डोले – डगमगाना 4. बन्ने – किनारे 5. केहड़ा – कौन सा 6. बाज – बिना 7. लड़ लग्गयां दी – शरण में आए हुए की 8. लज्जेया – शर्म

आओ दर्शन करिऐ

आओ दर्शन करिऐ गुरु प्यारे दा, (2)

1. दर्शन जो कृपाल दा कर गए, नाम–दान दी झोली भर गए, (2)
नाम जपत है तरिऐ, सतगुरु प्यारे दा,
आओ दर्शन करिऐ .....

2. अंदर नाम जिन्हां ने रटया, जन्म–मरण दा गेड़ा कट्टया[1], (2)
सद बलिहारे करिऐ, सतगुरु प्यारे दा,
आओ दर्शन करिऐ .....

3. सतसंगत दे चोज़ न्यारे[2], भवसागर तो संगत तारे, (2)
लक्ख शुकराना करिऐ, गुरु नजारे दा,
आओ दर्शन करिऐ .....

4. मेर–तेर दा भरम चुकाया, सतनाम दा जाप कराया, (2)
उसतत्त[3] हरदम करिऐ, परउपकारे दा,
आओ दर्शन करिऐ .....

5. वाह–वाह सब दुनियां ते होई, दर तेरे बिना मिली ना ढोई[4] (2)
'अजायब' लड़ फड़िए[5], कृपाल दातारे दा,
आओ दर्शन करिऐ .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. गेड़ा कट्टया – चक्कर कट गया 2. चोज़ न्यारे – अलग तरीके 3. उसतत्त – महिमा 4. ढोई – सहारा
5. लड़ फड़िए – दामन पकड़ना

आओ याद मनाईऐ सावन दी

आओ याद मनाईऐ, सावन दी, कुल मालिक रूहां दा, व्यापारी ऐ,
रब धार के चोला, सावन दा, सच्चे नाम दा बणया, भंडारी ऐ, (2)

1. रूहां सुत्तियां नूं आंण[1], जगौंदा रेहा,
दातां नाम दियां सदा ही, लुटौंदा रेहा, (2)
ऊँच–नीच दे बंधन, तोड़ दित्ते, बण आया है, उपकारी ऐ,
आओ याद मनाईऐ .....

2. ओह जमण–मरण तों, उच्चा ऐ,
ओह सुच्चेयां तो वी, सुच्चा ऐ, (2)
ओह वासी सोहणा, सच्चखंड दा, कलयुग विच दुनियां, तारी ऐ,
आओ याद मनाईऐ .....

3. ओहदे नाम नूं जिसने, रटया है,
यश दोहां जहानां तों, खट्टया[2] है, (2)
ओह कटदा गेड़[3] चौरासी दे, ओहदे दर्श दी झलक, न्यारी ऐ,
आओ याद मनाईऐ .....

4. ओह जोत इलाही, आई है,
ओहदी घट–घट विच, रोशनाई है, (2)
'अजायब' गुण गाईऐ शाह, सावन दे, उस डुबदी दुनियां, तारी ऐ,
आओ याद मनाईऐ .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. आण – आकर 2. खट्टया – कमाना, 3. कटदा गेड़ – चक्कर खत्म करना

आवो सतगुरु आवो जी

आवो सतगुरु आवो जी, दु:खियां दे दर्द मिटावो,
दिलां दी तपश बुझावो, सतगुरु जी आवो, (2)

1. प्रेम तेरे विच बैठी हरदम, तेरी याद मनावां,
बिसर गया मैनूं खाना–पीना, तेरे ही गुण गावां, (2)
पावो फेरा पावो जी, अमृत दा जाम पिलावो,
दिलां दी तपश .....

2. मैं पापी अपराधी दाता, तूं बखशिंद प्यारा,
दु:खियां दे दु:ख दूर करन लई, देवो आप सहारा, (2)
ठावो[1] सतगुरु ठावो जी, जांदा[2] मन बदियां वल्लों[3],
दिलां दी तपश .....

3. तेरे पाये पूरनेयां[4] ते, डर–डर कदम टिकावां,
जिन्हीं राहीं मेरा साईं लंघया[5], न्यों–न्यों[6] शीश झुकावां (2)
आवो सतगुरु आवो जी, रूहां सच्चखंड पुचावो,
दिलां दी तपश .....

4. मैं गरीब 'अजायब' हाँ साईयां, तू शाह कृपाल प्यारा,
मेरा कोई नाम ना जाणे, सब तेरा खेल न्यारा, (2)
लावो सतगुरु लावो जी, अपने जी चरनी लावो,
दिलां दी तपश .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ठावो – हटाओ 2. जांदा – जाना 3. बदियां वल्लों– बुराईयों की तरफ से 4. पूरनेयां – मार्गदर्शिका
5. लंघया– निकला 6. न्यों न्यों – झुक झुककर

आजा आजा आजा मेरे कृपाल जी

आजा, आजा, आजा मेरे कृपाल जी, दु:खियां दे सहारे,
है कौन जो बिगड़ी, मेरी तकदीर सवारे, (2)

1. आ वेखीं[1] तेरे सेवकां दा, हाल की होया, है हाल की होया, (2)
अज खेरुं–खेरुं[2] हो गए ने, सब वीर प्यारे,
है कौन जो .....

2. अज तेरे बाजों दाता जी, अंधेर हो गया, अंधेर हो गया, (2)
देवो दर्शन आ के जी, सावन दे प्यारे,
है कौन जो .....

3. पापां दी हनेरी[3] चली ऐ, बचाओ आऐ के, बचाओ आऐ के, (2)
नां तेरे बाजों होर सहारा, सतगुरु जी प्यारे,
है कौन जो .....

4. इस दुनियां सड़दी–बलदी दे, भांबड़ हैं मच्च रहे[4], भांबड़ हैं मच्च रहे, (2)
दया करो दाता जी लावो, अमृत फुहारे,
है कौन जो .....

5. संगत दा तूं हैं राखा[5] जी, इक अर्ज 'अजायब' करे,
इक अर्ज 'अजायब' करे, (2)
मैं रखया आसरा तेरा छड्डे, होर सहारे,
है कौन जो .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वेखीं – देखना 2. खेरुं खेरुं – बिखरे हुए 3. हनेरी – आँधी 4. भांबड़ हैं मच्च रहे – आग की लपटें
5. राखा – रखवाला

आजा आवी जा

आजा, आवी जा, आवी जा सोहणया वे,
तरले मैं कर दी आं[1], वे सोहणया, वास्ते मैं पौंदी आं, (2)

1. तत्तड़ी उडीकदी आं[2], तरले मैं पौंदी आं,
आजा मेरे माहीं, तेरे वास्ते मैं पौंदी आं, (2)
तेरे नाल ज़िंदगी है, तेरे बाजों[3] मोई[4] वे,
वे सोहणया, वास्ते मैं पौंदी आं, (2), आजा, आवी जा .....

2. तेरे ना नसीब मैनूं, ज़िंदगी दे साह[5] वे,
तेरे बिना दाता सारी, संगत बेहाल वे, (2)
आजा हुण प्यारे मेरी, ज़िंदगी सवार दे,
वे सोहणया, वास्ते मैं पौंदी आं, (2), आजा, आवी जा .....

3. दे के दर्श छुप, गयों मेरे माहीं[6] वे,
होई बड़ी देर हुण, आ फेरी पाईं वे, (2)
मर गए आं असीं बाकी, मुरदे जे हो गए,
वे सोहणया, वास्ते मैं पौंदी आं, (2), आजा, आवी जा .....

4. तेरी हां मैं आत्मा तूं, सुण कृपाल वे,
आ देख 'अजायब' दा की, होया बुरा हाल वे, (2)
आ हुण आ, आके, सीने नाल ला लै,
वे सोहणया, वास्ते मैं पौंदी आं, (2), आजा, आवी जा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. तरले मैं कर दी आं – मैं मिन्नतें कर रही हूँ 2. ततड़ी उडीकदी आं – मैं बेचारी इंतजार में हूँ 3. बाजों – बिना
4. मोई – मरी हुई 5. साह – साँस 6. माहीं – पति

आजा सोहणयां वे आजा

आजा सोहणयां वे, आजा, आजा, सोहणयां वे, मुड़ आ,
मुड़ आ सोहणयां वे, घर आ, घर आ सोहणयां वे, आजा,

1. मैंनू तेरे मिलण दा झोरा[1] वे, दिल तड़फे चैन ना भोरा[2] वे, (2)
दिल मेरा कागज कोरा वे, सहा जाऐ ना तेरा विछोड़ा वे,
आजा सोहणयां वे .....

2. सुण मेरे दिल दी चीख जेही, तैनूं, दर्द नां आया भोरा वे, (2)
दिल मेरा ओसे रंग दा है, जे तेरा पिण्डा[3] गोरा वे,
आजा सोहणयां वे .....

3. मेरी उमरां पूरी बीत गई, पर तेरा भेद ना भोरा वे, (2)
मेरे दिल दे पीहड़े[4] बह के[5] वी, मेरे दिल दी रमज[6] ना भोरा वे,
आजा सोहणयां वे .....

4. परत औंण मुस्कानां ऐह, जे नेड़े हो जाऐं भोरा वे, (2)
बुल्लां दी मुस्कान वेख के, होया दिल दे विच मघोरा[7] वे,
आजा सोहणयां वे .....

5. कृपाल गुरु जी दर्श देवो, हुण सब्र ना हुन्दा भोरा वे, (2)
गरीब 'अजायब' है तेरा वे, मुक जाऐ ऐहे हुण झेड़ा[8] वे,
आजा सोहणयां वे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. झोरा – चिन्ता 2. भोरा – थोड़ा सा 3. पिण्डा – शरीर 4. पीहड़े – पलंग 5. बेह के – बैठकर 6. रमज – समझ 7. मघोरा – छेद 8. झेड़ा – झगड़ा

आण के दवारे उत्ते बैठे मेरे दातेया

आण के दवारे उत्ते बैठे मेरे दातेया,
अपणियां रूहां नूं संभाल मेरे दातेया, अपणियां रूहां नूं संभाल (2)

1. नरकां च सुटणे लई[1] काल है वंगारदा[2],
रूहां दे पसोणे[3] नूं बहुत रूप धारदा, (2)
वास्ता ई रब दा बचाईं मेरे दातेया,
दु:खियां दी सुणके पुकार मेरे दातेया, अपणियां रूहां नूं .....

2. कूड़ दा हनेरा जग उत्ते आ के छा गया,
छुप गया सच उड़ अंबरां नूं धा[4] गया, (2)
दया ते धर्म घबराऐ मेरे दातेया,
औखे वेले[5] पुछ लेओ सार मेरे दातेया, अपणियां रूहां नूं .....

3. सारियां जगंहां दे उत्ते पाऐ फंदे काल ने,
जाल जो बिछाऐ ऐहे टुटने मुहाल[6] ने, (2)
दरगाह च आण के बचाईं मेरे दातेया,
सतगुरु दीन–दयाल, मेरे दातेया, अपणियां रूहां नूं .....

4. धन कृपाल धन सावन प्यारेया,
तपदे 'अजायब' नूं पलां दे विच ठारेया[7], (2)
संगत नू दर्श दिखाईं मेरे दातेया,
भुलिऐ ना तेरा उपकार मेरे दातेया, अपणियां रूहां नूं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सुटणे लई – फैंकने के लिए 2. वंगारदा – ललकारता 3. पसोणे – फसाने 4. धा – पहुँचना
5. औखे वेले – मुश्किल समय 6. मुहाल – मुश्किल 7. ठारेया – ठंडा किया

आया कृपाल अड़िओ नीं

आया कृपाल अड़िओ नीं, चन्न[1] सावन दा रोशनाई, (2)

1. दर–दर फिरां भालदी[2], किते मिल जाईं मेरेया साईयां,
हाल मेरा बुरा अड़िओ[3], नीं मैं रोंदी विच जुदाईयां, (2)
पीड़ विछोड़े दी, मेरे सोहणे ने आ के ठाई[4],
आया कृपाल अड़िओ नीं .....

2. मैं सारा जग ढूंढ लया, दस्स पीया दी कोई ना पावे,
रोंदी फिरां धांहां[5] मार के, मेरा वस ना कोई वी जावे, (2)
नित रोवां याद करां, मैनूं आखण[6] लोक सदाई[7],
आया कृपाल अड़िओ नीं .....

3. दोवें हथ जोड़–जोड़ के, तेरे अग्गे वास्ते पावां,
होर कुछ मंगदा नहीं, तेरे नाम दा आसरा चाहवां, (2)
दया करी जीवां ते, सत संगत रीत चलाई,
आया कृपाल अड़िओ नीं .....

4. मैं तेरी हो गई ओदों सोहणया, तेरा तीर कलेजे विच वज्जया[8],
धन कृपाल प्यारेया, रख लई तैं 'अजायब' दी लज्जया[9], (2)
जागे मेरे भाग वीरनों[10], घर जोत इलाही आई,
आया कृपाल अड़िओ नीं .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. चन्न – बेटा 2. भालदी – ढूंढती 3. अड़िओ – सहेलियो 4. ठाई – हटाई 5. धांहां – छाती पीटकर रोना
6. आखण – कहना 7 सदाई – पागल 8. वज्जया – लगना 9. लज्जया – लाज 10. वीरनों – भाईओ

आया लाहा लैण प्राणी

आया लाहा लैण[1] प्राणी, आया लाहा[2] लैण, (2)

1. वड्डे भागां नाल है मिलया, जामा ऐह इंसानी,
जिवें बिरछ परछावां[3] ढलदा, ढलदी ऐंवें जवानी, (2)
सन्त शरण विच आजा बंदे (2), हो जाए कम असानी,
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण .....

2. चढ़ी जवानी हो मस्तानी, रब दी याद भुलाई,
ढलया सूरज हुस्न जवानी, रात बुढ़ेपा आई, (2)
वस पराऐ होणा पै गया (2), चले ना मनमानी,
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण .....

3. रस्ता बिखड़ा बड़ा भयानक, चलदा ना कोई चारा,
नाम दी पूँजी बन्न लै पल्ले[4], हो जाऐ पार उतारा, (2)
शरण गुरु दी पै जा बंदे (2), मिल जाऐ दिल दा जानी,
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण .....

4. अंत वेले कोई ना पुछदा, ना भैणा[5] ना भाई,
सतगुरु पूरा विच दरगाह दे, होवे आण सहाई, (2)
आ कृपाल 'अजायब' नूं मिलया (2), सफल होई जिंदगानी,
लाहा लैण प्राणी, आया लाहा लैण .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. लैण – लेने 2. लाहा – लाभ 3. बिरछ परछावां – पेड़ की परछाई 4. बन्न लै पल्ले – अपने साथ बाँध ले
5. भैणा – बहन

आया सतगुरु आया नीं

आया सतगुरु आया नीं, सोहणा कृपाल रंगीला,
मेरे ओह दिल दा जानी, माहीं मेरा आ गया, (2)

1. दिल मेरे विच तांघ[1] ओसदी, वांग पपीहे[2] बोलां
राह तक–तक के थक गई अड़िओ[3], दिन–रातीं मैं टोलां[4], (2)
आया फेरा पाया नीं, मेरा ओह कंत[5] रंगीला
मेरे ओह दिल .....

2. ओहदी झलक निराली अड़िओ, सूरज तों भी न्यारी,
सतनाम दा जाप कराके, तपदी दुनिया ठारी[6], (2)
आया भेद बताया नीं, दुःखियां दा बणे वसीला[7],
मेरे ओह दिल .....

3. गुलाब देवी माता दा जाया[8], है संगत दा वाली,
पिता हुक्म सिंह नूं देओ वधाईयां, आई जोत निराली, (2)
आया जग विच आया नीं, भगती भंडार जोशीला,
मेरे ओह दिल .....

4. सावन शाह दा बेटा नीं अड़िओ, नाम ओहदा कृपाल,
मैं परदेसण जिंद 'अजायब' ते, होया आण दयाल, (2)
आया घर विच आया नीं, सोहणा ओह है अणखीला,
मेरे ओह दिल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. तांघ – चाहत 2. वांग पपीहे – पपीहे की तरह 3. अड़िओ– सहेलियो 4. टोला – ढूंढना 5. कंत – पति
6. ठारी – ठंडा करना 7. वसीला – उपाय 8. जाया – जन्मा हुआ

आया सावन झड़ियां ला गया

आया सावन, आया सावन झड़ियां[1], ला गया,
रूहां सच्चखंड विच, पुचा गया, आया सावन, (2)

1. ओहदे मिठड़े बोल, सुहावणे, अमृत दियां बूंदां, बरस दियां,
ओहदी सोहणी–मोहणी, सूरत है, देखण नूं संगतां, तरस दियां, (2)
आया सावन .....

2. सच्चखंड तों सावन, आऐ के, ऐह सोहणा बाग, सजा गया,
सच्चे नाम दे बूटे[2], लाऐ के, सतसंग दा पानी, पा गया, (2)
आया सावन .....

3. ओह तन करके ही, दूर है, सच्चा शब्द ओह साथों, वक्ख[3] नहीं,
ओह घट–घट दे विच, वस रेहा, साडी देखण वाली, अक्ख नहीं, (2)
आया सावन .....

4. तेरे परउपकार नां, लिख सकां, मेरे सावन शाह, प्यारेया,
लख–लख शुक्राना, 'अजायब' करे, साडे तपदे दिलां नूं, ठारेया[4], (2)
आया सावन .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. झड़ियां – बरसात का मौसम 2. बूटे – पौधे 3. वक्ख – अलग 4. ठारेया – ठंडा करना

उठ सुतया गाफला होश कर लै

1. उठ सुतया गाफला होश कर लै, नेकी जग ते तूं कमौंण आयों,
इक मिन्ट ना उसनूं याद करदा, अट्ठों पहर ही जीन्नूं ध्योण आयों,
जेड़े पाप कीते हत्थी आप सारे, ऐनां जुल्मा नूं तूं मिटोण आयों,
ओऐ मौका कदे ना याद कीता मंगला चरन जिसदे सदा ही गौण आयों,
मानस जन्म अमुल्ड़ा[1] लाल मिलया, भा[2] कौडियां दे तेरा विकया ऐ,
बाज गुरु तों मुक्त ना होऐ कोई, बाणी गुरु ग्रंथ विच लिखया ऐ,

2. धीयां पुत्र कुटुम्ब हुकूमतां ने, इक दिन तेरा साथ छडणा ऐ
बाज गुरु तों फिरे जे सजणा तूं, अंत यमां ने तेरा दम कढ़णा ऐ,
पुन्न–दान पूजा–पाठ होण भावें[3], वेले अंत दे कोई ना रक्खदा ऐ,
गुरु करे कमाई नाम देवे सच्चा, बेड़ा पार होवे आखिर सच दा ऐ,
सदा ऐस जहान ते नहीं रहना, झूठा कूड़ जहान सब मिथ्या ऐ,
बाज गुरु तों .....

3. होया विषयां दे विच मस्त इतना, चेत्ता[4] नाम जपने दा भुल्ल गया,
हीरा हत्थ आया कदर ना कीती, हत्थों डिग्गया मिट्टी च रुल गया,
तैनूं समां मिलया नाम जप सच्चा, सोहणा बणया रब दा बंदा ऐ तूं,
जे गुरु ना मिलया कीती बंदगी ना, बिना बंदगी गंदे तो गंदा ऐ तूं,
नगरी दुःखां दी सारा संसार दुःखिया, सुखी कोई ना जग ते दिस्सया ऐ,
बाज गुरु तों .....

4. रखे माण हंकार जो दिल अंदर, नाम गुरु दे नूं जेहड़ा भुल्ल जावे,
अरबांपति बन जाऐ भावे जग उत्ते, दरगाह विच ओह ना मुल्ल[5] पावे,
मिलना चाहे जेहड़ा सच्चे रब ताईं[6], अंदरों दुई–दवैत नूं कढ देवे,
हर दिल अंदर बैठा कुल मालिक, किसे दा दिल दुःखाणा ओह छड देवे,
'अजायब' छड झगड़े जप लै नाम सच्चा, सच्ची गुरु कृपाल दी सिक्खया ऐ,
बाज गुरु तों .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. अमुल्ड़ा – अनमोल 2. भा – भाव 3. भावें – चाहे 4. चेत्ता – याद 5. मुल्ल – कीमत 6. ताईं – तक

इस प्रेम दी दुनियां विच सजणा

इस प्रेम दी दुनियां, विच सजणा, नुकसान उठौणा, पैंदा है,
पिच्छों प्रीतम प्यारा, तां मिलदा, पहलां सिर कटवौणा[1], पैंदा है, (2)

1. जिसने वी प्रेम, कमाया ऐ, ना अपना आप, लुकाया[2] ऐ,
जो वी मन भेंट, चढ़ौंदा ऐ, ओह हाजिर रब नूं, पौंदा ऐ, (2)
वेहड़ा[3] है जे कर, साफ दिल दा, विच प्रीतम आ के, बैहंदा ऐ,
इस प्रेम दी दुनियां .....

2. ऐह प्रेम दा रस्ता, बिखड़ा[4] ऐ, खंडे[5] दी धार तों, तिखड़ा[6] ऐ,
सूली ते चढ़ना, सौखा ऐ, सच्चा प्रेम कमौणा, औखा ऐ, (2)
ओह मालिक तां ही, खुश होवे, ज्योंदे ही मरना, पैंदा ऐ,
इस प्रेम दी दुनियां .....

3. ना मिलदा प्रेम, बजारां विच, ना पर्वत ना, पहाड़ां विच,
ना सागर दियां लहरां, धारां विच, ना शहरां ते ना, उजाड़ां विच, (2)
उस प्रभु दा मंदिर, अंदर है, जो प्रेम करे सो, लैंदा ऐ,
इस प्रेम दी दुनियां .....

4. सच्चा प्रेम जो अंदरों, करना चाहे, ओह शीश तली[7] ते, धर के आऐ,
जो सिर चरणां ते, धरदा ऐ, ओह मरणो मूल ना, डरदा ऐ, (2)
कृपाल गुरु जी, बक्श लवो, 'अजायब' दुःखड़े, सैहंदा ऐ,
इस प्रेम दी दुनियां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. कटवौणा – कटवाना 2. लुकाया – छिपाया 3. वेहड़ा – आंगन 4. बिखड़ा – मुश्किल
5. खंडे – तलवार जैसा शस्त्र 6. तिखड़ा – तीखा 7. तली – हथेली

इक अरज अजायब गुज़ारे

इक अरज अजायब गुज़ारे[1], लग्गियां तांघां[2] कृपाल दियां,
मैं जावां तैथों[3] वारे, कुछ गल्लां सुण लै प्यार दियां,
ऐह रूहां सत करतार[4] दियां, (2)

1. काल दे काबू जो वी औंदा, हर वेले पछतावे,
फड़के नत्थ[5] कसूती[6] पौंदा, बांदर वांग[7] नचावे, (2)
दुःख दे के तसीहे[8] मारे,
कुछ गल्लां सुण लै .....

2. दुनियां दे विच मालिक औंदा, अपणा आप छुपा के,
परमार्थ दा दस्से रस्ता, संगत विच सुणा के, (2)
तन–मन संगत तों वारे,
कुछ गल्लां सुण लै .....

3. सतसंगत दी महिमा उच्ची, सुणदे आ वडभागी,
जागे भाग पुराणे सज्जणो, सुत्ती किस्मत जागी, (2)
सतगुरु दा नाम उचारे,
कुछ गल्लां सुण लै .....

4. तेरी महिमा अजब न्यारी, तूं संगत दा वाली,
सावन शाह तों लै के भिच्छिया[9], झोलियां भरदा खाली, (2)
'अजायब' दे काज सवारे,
कुछ गल्लां सुण लै .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. गुजारे – करे 2. तांघां – इन्तजार करना 3. तैथों – आपसे 4. करतार – परमात्मा 5. नत्थ – नकेल 6. कसूती – मुश्किल 7. बांदर वांग – बंदर की तरह 8. तसीहे – कष्ट 9. भिच्छिया – भिक्षा

इक जोत निराली आई

इक जोत निराली आई, दुःखियां दा बने सहाई,
दर्द मिटावण नूं, जी, नाम जपावण नूं, (2)

1. जद कूड़ दी मस्या[1] आऐ, सच छिप जांदा ऐ,
जद जुल्म दे बद्दल ओण, धर्म कुमलौंदा[2] ऐ, (2)
जद मौज प्रभु दी आऐ, ओह जाहरी[3] कला दिखाऐ
जुल्म हटावण नूं, जी, नाम जपावण नूं, इक जोत .....

2. ओह सब दा सांझीवाल[4], ते नाम जपौंदा ऐ,
मन हुक्म गुरु दा अमृत जाम, पिलौंदा ऐ, (2)
ओह बंदा बणके आया, सच्चखंड दा भेद बताया
मिलके सावन नूं, जी, नाम जपावण नूं, इक जोत .....

3. असीं जन्म–जन्म दे मैले, उज्जल करौंदा ऐ,
बण रूह दा धोबी आप मैल नूं, लौहंदा ऐ, (2)
साडी पेश ना कोई जावे, ओह हरदम ही समझावे
रस्ते पावण नूं, जी, नाम जपावण नूं, इक जोत .....

4. पिता हुक्म सिंह दा प्यारा, नूर इलाही ऐ,
गरीब 'अजायब' चाहे सहारा, होऐ सहाई ऐ, (2)
मिलके है संगतां आईयां, गुलाब देवी नूं देयो वधाईयां
भंडारा कृपाल मनावण नूं, जी, नाम जपावण नूं, इक जोत .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मस्या – अमावस्या	2. कुमलौंदा – मुरझाना	3. जाहरी – खुली	4. सांझीवाल – हिस्सेदार

ऐहे ते देश पराया ओऐ सजणा

ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना, पाया ओऐ सजणा, (2)
ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,

1. आया जो ऐत्थे, सबने तुर जाणा[1],
रहना ना ऐत्थे, कोई राजा राणा, (2)
जिंदगी बिरछ[2] दी, छाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

2. कोई दिन ऐत्थे, रैण बसेरा,
झूठे सब नाते, कोई ना तेरा, (2)
सतगुरु ने, समझाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

3. करके सिमरन, मन समझा लै,
भुल्लां गुरु तों, माफ करा लै, (2)
दाते दा नां[3] क्यों, भुलाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

4. पल्ला गुरु, कृपाल दा फड़[4] लै,
भवसागर तों, 'अजायब' तूं तर लै, (2)
झूठा जगत, झूठी माया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. तुर जाणा – चले जाना 2. बिरछ – वृक्ष 3. नां – नाम 4. फड़ – पकड़ना

ऐहे दुनियां परौणी सजणा

ऐहे दुनिया परौणी[1] सजणा ओऐ, इस जगत सरां[2] नूं छडणा ओऐ,
भांडा[3] जो घड़या (2) भजणा[4] ओऐ, ऐत्थों कूच[5] नगारा वजणा ओऐ,
वीर मेरेया ज़िंदगी, ज़िंदगी दा कोई दिन मेला ऐ,
हुण नाम जपण दा वेला ऐ,

1. जो मेरी–मेरी करदा ऐ, ओह मरनो मूल[6] ना डरदा ऐ,
जो बाज[7] गुरु तों (2) मरदा ऐ, होमैं विच सड़दा–बलदा[8] ऐ,
वीर मेरेया ज़िंदगी, ज़िंदगी दा कोई दिन मेला ऐ,
हुण नाम जपण .....

2. जेहड़ी सोहणी शक्ल निराली ऐ, बिना नाम तो ज़िंदगी खाली ऐ,
दुनियां दी झूठी (2) लाली ऐ, समझो ऐह जहर प्याली ऐ,
वीर मेरेया ज़िंदगी, ज़िंदगी दा कोई दिन मेला ऐ,
हुण नाम जपण .....

3. जो राम–राम ना कैहंदा ऐ, ओह दण्ड यमां दा सैहंदा ऐ,
जा विच चौरासी (2) पैंदा ऐ, नरकां दे दुःखड़े सैहंदा ऐ,
वीर मेरेया ज़िंदगी, ज़िंदगी दा कोई दिन मेला ऐ,
हुण नाम जपण .....

4. 'अजायब' जदों घबराया सी, चल के कृपाल जी आया सी,
छाती नाल फड़के (2) लाया सी, रुड़दे नूं[9] आण बचाया सी,
वीर मेरेया ज़िंदगी, ज़िंदगी दा कोई दिन मेला ऐ,
हुण नाम जपण .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. परौणी – मेहमान 2. सरां – धर्मशाला 3. भांडा – बर्तन 4. भजणा – टूटना 5. कूच – चले जाना
6. मूल – बिल्कुल 7. बाज – बिना 8. सड़दा बलदा – जलता 9. रुड़दे नूं – पानी में बहते हुए को

ऐह मानस जामे नूं

ऐह मानस जामे नूं, सोहणया लावीं तूं हुण[1] लेखे, (2)

1. ना संगत विच तू औंदा ऐं, ना अंदर झाती पौंदा[2] ऐं, (2)
जे अपना मन समझावें वे, तूं लाहा खट्टके जावें, (2)
छड दे अड़ियां[3] मन समझा लै, दिल चौं कढ भुलेखे[4],
ऐह मानस जामे .....

2. तूं याद प्रभु नूं करया वे, ना विच गर्भ दे सड़या वे, (2)
मालिक ने आण बचाया वे, तूं बाहर आण भुलाया, (2)
कर लै बंदगी बचणा जे, तूं ज़िंदगी लावीं लेखे[5],
ऐह मानस जामे .....

3. गुरु पूरा लब्भीं अपणा वे, जूनां तों जे कर बचणा वे, (2)
विषयां विच काल पसावे वे, कोई विरला बच के जावे, (2)
बिना गुरु तों रूह जे मिल जाऐ, गिण–गिण लैंदा लेखे,
ऐह मानस जामे .....

4. जो हिरदा साफ बणाऐ वे, ओत्थे ही मालिक आऐ वे, (2)
बोले 'अजायब' नकारा वे, मिलया कृपाल प्यारा, (2)
ऐह गल्लां दा मजबून[6] नहीं, कोई वी करके देखे,
ऐह मानस जामे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. हुण – अब 2. झाती पौंदा– देखना 3. अड़ियां – जिद्द 4. भुलेखे – गलतफहमी 5. लेखे – अच्छे काम में लगाना 6. मजबून – विषय

ओ दर-दर दे फिरने नालों

ओ दर–दर दे फिरने नालों, सतगुरु दे दर ते ढेह जा[1],
ओ धंधे सब झूठे छड के, लाहा[2] खट[3] जग तों लै जा, (2)

1. नाम भुलावें दुःख उठावें, कीते कर्मां दा फल पावें, (2)
नाम गुरु दा जप लै सच्चा, भाणें दे विच रह जा,
लाहा खट जग .....

2. तेरा–तेरा कैहंदा ऐं तूं, सुक्खां दा साह लैंदा ऐं तूं, (2)
रस्ता झूठा छड के सजणा, सच्चे रस्ते पै जा,
लाहा खट जग .....

3. जो वी शरण गुरु दी आवे, मुँहों मंगियां मुरादां[4] पावे, (2)
छड के झूठे झगड़े सारे, गुरु शरण विच पै जा,
लाहा खट जग .....

4. 'अजायब' सच्चा प्यार होणा, लब्भ[5] जाए कृपाल सोहणा, (2)
सच्चा सतगुरु मिल गया, सतगुरु दी शरणी पै जा,
लाहा खट जग .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. ढेह जा – गिर जा 2. लाहा – लाभ 3. खट – कमाकर 4. मुरादां – इच्छाएं 5. लब्भ – मिल जाए

ओ मन मूर्ख अब तो जाग

ओ मन मूर्ख, अब तो जाग, (2)

1. रात अंधेरी, पथ अनजाना, सिर पर है, पापों का भार,
गहरी नदिया, नाव पुरानी, और उसमें भी, छेद हजार, (2)
बीत गए युग, सोते–सोते, अरे आलसी, निंद्रा त्याग,
ओ मन मूर्ख .....

2. मात–पिता, भाई सुत दारा, समझ रहा जिनको, अति प्यारा,
प्राणों का पंछी, उड़ते ही, कर जाऐंगे, सभी किनारा, (2)
सबकी अपनी–अपनी, ड़फ़ली, सबका अपना–अपना, राग,
ओ मन मूर्ख .....

3. सकल सत्य का, सार नाम है, जीवन का, आधार नाम है,
प्रेम नाम है, प्यार नाम है, कहते बेड़ा, पार नाम है, (2)
गुरु का पावन, कृपाल नाम है, करे प्रतिपाल[1], और अनुराग[2],
ओ मन मूर्ख .....

4. सौ काम छोड़, सतसंग में जाना, हज़ार काम छोड़, बंदे ध्यान लगाना,
जितनी ज़रूरत, तन को खाने की, आत्मा भी माँगे, सिमरन खाना, (2)
वाक 'अजायब' याद, रख कृपाल का, खा ली ठोकरें, अब तो जाग,
ओ मन मूर्ख .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. प्रतिपाल – रक्षा 2. अनुराग – प्यार

ओ सिक्खा सिक्खी दा निभौंणा औखा ऐ

ओ सिक्खा, सिक्खी दा निभौंणा, औखा ऐ, (2)

1. मैं मेरी हटौणी पैंदी ऐ, भेटा सिर दी चढ़ौणी पैंदी ऐ, (2)
सिक्ख नाम रखौणा, सौखा ऐ,
ओ सिक्खा .....

2. पहलां अंदरों मैल नूं, धोणा पवे,
फिर सोहणे दी याद विच, रोणा पवे, (2)
ठंडा भरना पैंदा, हौंका[1] ऐ,
ओ सिक्खा .....

3. जो पीया नूं मिलणा चौहंदा ऐ, सच्चे दिल तों प्रेम, कमौंदा ऐ, (2)
सोहणा रब मिलने दा, मौका ऐ,
ओ सिक्खा .....

4. ज्यौंदे ही जग ते मरना पवे, सुख छड के सूली ते, चढ़ना पवे, (2)
बाहरों सेवक सदौंणा[2], सौखा ऐ,
ओ सिक्खा .....

5. जे विषयां तो सिक्ख आजाद होवे, अंदर गुरु कृपाल दा, राज[3]होवे, (2)
'अजायब' दरगाह च जांणा फेर, सौखा ऐ,
ओ सिक्खा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. हौंका – गम की सांस लेना 2. सदौंणा – कहलवाना 3. राज – राज्य

क्यों गफलत विच मन सोया हैं

क्यों गफलत विच, मन सोया हैं, ऐत्थों[1] कूच[2] नगारा वजणा है,
की माण[3] करें, इस भांडे[4] दा, जो घड़्या आखिर भजणा है, (2)
क्यों गफलत विच मन सोया हैं,

1. जो करदैं मेरी–मेरी ऐ, अंत वेले मिट्टी दी ढेरी ऐ, (2)
जद जावे ना लौंदा, देरी ऐ, कुछ नाल ना जावे सजणा ऐ,
क्यों गफलत विच .....

2. सुंदर तन जो हत्थ विच आया है, ना तेरा ऐह वी पराया है, (2)
बाणी ने ऐहे, फरमाया है, ऐहे तन वी ऐत्थे छडणा है,
क्यों गफलत विच .....

3. समां मिलया मन समझाईं तूं, नाम जप लाहा खट जाईं तूं, (2)
गुरु सच्चे दी याद, मनाईं तूं, नरकां चों जिसने कढणा है,
क्यों गफलत विच .....

4. कोई यज्ञ असमेध[5] करौंदा है, कोई अठसठ तीर्थ न्हौंदा ऐ, (2)
'अजायब', कृपाल नू, ध्यौंदा है, जिसने मेरा पड़दा कज्जणा है[6],
क्यों गफलत विच .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ऐत्थों – यहाँ से 2. कूच – चले जाना 3. माण – अभिमान 4. भांडे – बर्तन 5. असमेध – अश्वमेघ
5. कज्जणा है – ढकना है

करके वेला याद जिंदड़िऐ रोवेंगी

करके वेला याद जिंदड़िऐ रोवेंगी,
नाम बिना दुःखां वाले हार परोवेंगी, (2)

1. मात गर्भ दी जगह भयानक, रचना प्रभु रचाई,
कुम्भी नरक ते बंद कोठड़ी, आपे होऐ सहाई (2)
जे उसदी होवेंगी,
नाम बिना दुःखां .....

2. लिव[1] लग्गी जद नाल प्रभु दे, जठर अगन ना साड़े,
पुट्ठा[2] लटके औखा होवें, हरदम नाम पुकारे (2)
उज्जल होवेंगी,
नाम बिना दुःखां .....

3. मानस देही लाल अमुल्ला[3], भागां नाल थ्यावे[4],
जे गुरु ना मिलया, नाम ना जपया, कौडी बदले जावे (2)
बैठके रोवेंगी,
नाम बिना दुःखां .....

4. जल विच तूं हैं, थल विच तूं हैं, धन कृपाल प्यारे,
अंदर बाहर घट–घट तूं हैं, 'अजायब' दे काज[5] सवारे (2)
कृपाल दी होवेंगी,
नाम बिना दुःखां .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. लिव – ध्यान	2. पुट्ठा – उलटा	3. अमुल्ला – अमूल्य	4. थ्यावे – मिलना	5. काज – कार्य

करां सिफत की गुरु कृपाल दी मैं

करां सिफत की गुरु, कृपाल दी मैं, जिहनें कुल संसार, बणाया ऐ,
रंगां–रंगां दे साज के, भांडेयां[1] नूं, विच अपणा आप, लुकाया ऐ,

1. किते बण अरोगता[2], सुख देवे, किते रोग बण उधम[3], मचाया ऐ,
हाए–हाए कर तड़फदी, जान आपे, रब्बा रख लईं दुःख, सताया ऐ,

2. आपे बण ताबीब[4] ते, वैद्य आया, जाणे रोग आपे जेहड़ा, लाया ऐ,
आपे नब्ज[5] देखे, परखे दोष तिन्ने, वात–पित्त बलगम[6] जो, समाया ऐ,

3. आपे बण पहाड़ दी, जड़ी–बूटी, आपे धातां नूं फूंक, दिखाया ऐ,
आपे रस रसायण, तैयार करदा, वट्टे गोली[7] ते चूर्ण, छणाया[8] ऐ,

4. काड़ा करके रोगी दे, मुँह पावे, आपे संग थीं अंदर, लंघाया ऐ,
आपे उठ बैठावंदा, रोगियां नूं, आपे धरती ते निस्सल[9], सवाया[10] ऐ,

5. आपे चोज़[11] विनोद[12], प्या कर वेखे, ज़र्रे–ज़र्रे दे विच, समाया ऐ,
'अजायब' कृपाल दा, हुक्म लै के, फेर ध्यान सच्चखंड वल, लाया ऐ,

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. भांडेयां – बर्तन 2. अरोगता – आरोग्य 3. उधम – घमासान 4. ताबीब – तावीज देने वाला 5. नब्ज – नाड़ी 6. बलगम – कफ 7. वट्टे गोली – गोली बनाना 8. छणाया – छानना 9. निस्सल – बेहोश 10. सवाया – सुलाया 11. चोज़ – नखरे 12. विनोद – मजाक

करो मन गुरु चरनों से प्रीत

करो मन गुरु चरनों से प्रीत,
गुरु चरनों से प्रीत, करो मन गुरु चरनों से प्रीत, (2)

1. यह सपनों का जाल सुहाना, यह दुनियां है रैन बसेरा,
चला–चली के इस मेले में, सांझ ढली और उखड़ा डेरा, (2)
वर्तमान होता जाता है, पल–पल यहाँ अतीत,
करो मन गुरु .....

2. नौकर–चाकर ठाठ–बाट ये, भरी तिज़ोरी में यह माया,
प्राण पखेरू उड़ जाएं तो, साथ नहीं जाती यह काया, (2)
सभी चिता पर रखकर आते, सुत सम्बंधी मीत,
करो मन गुरु .....

3. रात अंधेरी राह अजानी, गहरी नदिया नाव पुरानी,
सोते–सोते बीत गए युग, अब तो जाग अरे अज्ञानी, (2)
विघ्न[1] विनाशक गुरु नाम है, जीवन का संगीत,
करो मन गुरु .....

4. लोहे को सोना कर देता, इतना पावन नाम तुम्हारा,
पल में सात धाम जा पहुँचा, जिसने मन से तुम्हें पुकारा, (2)
कृपाल 'अजायब' के सदा सहाई, जन्म–जन्म का मीत,
करो मन गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. विघ्न – बाधा

कैहंदे महिमा सतसंग दी

कैहंदे महिमा सतसंग दी, सच्ची ऐह जोत निराली,
जी कैहंदे महिमा ..... (2)

1. सतसंग सुणदी तारा रानी, राजे चुक्की ऐ खड़ाव निशानी, (2)
जोड़ी जुड़ी खड़ाव पुरानी, संगत श्रद्धा वाली
जी कैहंदे महिमा .....

2. सतसंग सुन नाई सैणा तरया, विच कचहरी जाऐ ना डरया, (2)
सैणे दा कम्म सन्तां करया, करी आप रखवाली
जी कैहंदे महिमा .....

3. सतसंगत दा राह चलाया, अमृत वाला मींह[1] वरसाया, (2)
रूहां दा व्यापार चलाया, करके आप दलाली
जी कैहंदे महिमा .....

4. सावन शाह दे खेल न्यारे, पापी ते अपराधी तारे, (2)
'अजायब' दे काज सवारे, बणके बाग दा माली
जी कैहंदे महिमा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. मींह – बरसात

कृपाल अनामी अंतरयामी

कृपाल अनामी, अंतरयामी, कट दे संकट मेरे, कट दे संकट मेरे (2)

1. भवसागर चों बेड़ा साडा, बणो मल्लाह ते तार देओ,
नाम सच्चे दियां झड़ियां ला के, तपदियां रूहां ठार देओ, (2)
बंधन तोड़ो, चरणी जोड़ो, आण डिग्गा दर तेरे, कट दे .....

2. हो जाए बीमा जिंदगी मेरी दा, तेरी झलक इक पल दाता,
नूरी दर्शन हो जाए तेरा, मुक्के[1] विछोड़े दा सल्ल[2] दाता, (2)
सतगुरु मेरा, पा जा फेरा, गुण गावां नित तेरे, कट दे .....

3. मन दा पर्दा चुक देओ दाता, तेरा खुल्ला दीदार होवे,
तेरे घर विच घाटा ना कोई, साडा बेड़ा पार होवे, (2)
दुःखिया हां डाडा, कोई ना साडा, वास्ते पौनी आं[3] तेरे, कट दे .....

4. तेरी दया तैं आपे वरताई[4], मेरे विच गुण कोई ना,
ढूंढ लिया जग सारा फिरके, दर तेरे बिना ढोई ना, (2)
तूं पाईं फेरी, मैं हो गई तेरी, छड के झगड़े झेड़े, कट दे .....

5. सेवक दा प्यार होवे तां, सतगुरु दयाल होवे,
शिष्य होवे 'अजायब' वरगा, गुरु औहदा कृपाल होवे, (2)
मान वडयाई, पल च मुकाई, जां बन गए तेरे चेरे[5], कट दे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. मुक्के – खत्म हो जाए 2. सल्ल – दर्द 3. वास्ते पौनी आं – अरदास करती हूँ 4. वरताई – बाँटना
5. चेरे – चेले

कृपाल गुरू आजा संगत पुकार दी

कृपाल गुरु आजा (2), संगत पुकार दी,
तेरे हत्थ विच चाबी ओ दाता, सारे संसार दी, (2)

1. संगत पुकार दी है, दोवें हत्थ जोड़ के,
कित्थे[1] चले गयों दाता, संगत नूं छोड़ के, (2)
देंदा रह दिखाली सदा, मेरी ऐह पुकार जी, तेरे हत्थ .....

2. संगत दे वालिया, देर ना लगावीं वे,
सुणके आवाज़ साडी, छेती–छेती[2] आवीं वे, (2)
दर्शनां नूं बैठी, संगत तैयार जी, तेरे हत्थ .....

3. संगत दा वैद्य, तेरे हत्थ च दवाई वे,
ताला किसे होर लाया, तैं चाबी लाई वे, (2)
जोगे नूं बचाया बण, आप पहरेदार जी, तेरे हत्थ .....

4. नानकी पुकारेया, तूं झट विच आया सी,
पुकार वाला फुल्का, प्यार नाल खाया सी, (2)
ओसे तरहां आजा तूं, मैनूं ना विसार जी, तेरे हत्थ .....

5. सुणदा पुकार दाता, मुढ[3] तों तूं आया वे,
मक्खण लुभाणे दा, जहाज बन्ने[4] लाया वे, (2)
संगत नूं बचा ले, ऐह पुकार 'अजायब' साध दी, तेरे हत्थ .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. कित्थे – कहाँ 2. छेती छेती – जल्दी जल्दी 3. मुढ – शुरू से 4. बन्ने – किनारे

कृपाल गुरु जी साथों

कृपाल गुरु जी साथों, दुःख ना सहारे जांदे,
दुनियां दे विच रहके, मन नहीं जे मारे जांदे, (2)

1. करी जाऐ नित पाप साडा, मन घबरावे ना,
सतसंग वल सीधा, चल कदी आवे ना, (2)
साडे, मनां दे जो फुरने[1], इक पल ना विसारे जांदे,
दुनियां दे विच .....

2. पँजां चोरां कोलों सानूं, आण बचा देयो,
तपदियां रूहां तांईं[2], ठंड वरता देयो, (2)
साडे, दिलां विच पाप जो, साथों ना उतारे जांदे,
दुनियां दे विच .....

3. धन कृपाल धन, शब्द अपार है,
लख–लख जीवां दा, करया उद्धार है, (2)
तेरे बिना डुब्बे बेड़े, पार ना उतारे जांदे,
दुनियां दे विच .....

4. दिन–रात सच्चे पिता, याद मनावां मैं,
तक–तक राह तेरा, औसियां[3] पावां मैं, (2)
'अजायब', कहे कृपाल जी दे, गुण ना विसारे जांदे,
दुनियां दे विच .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. फुरने – संकल्प 2. तांईं – तक 3. औसियां – इंतजार

कृपाल दा विछोड़ा

कृपाल दा विछोड़ा मेरी, हड्डियाँ नूं खा गया,
मंगया सी प्यार ते, विछोड़ा झोली तूं पा गया, (2)

1. दाता, भुल्लां तैनूं किवें कोई, माड़ी–मोटी[1] गल्ल नहीं ,
भुल्लां तैनूं किवें कोई, माड़ी–मोटी गल्ल नहीं, (2)
मुड़–मुड़ नाम तेरा, बुल्लियाँ[2] ते आ गया
मंगया सी प्यार .....

2. कीता तैनूं प्यार ओहदे, बदले च गम मिले, (3)
ज़िंदगी नूं गम, झोरा[3] हड्डियाँ नूं खा गया,
मंगया सी प्यार .....

3. सुणदा हाँ खड़ाक जदों, किसे दा मैं सच्ची–मुच्ची, (3)
लगदा है शायद मेरे, वेहड़े तुहिओं आ गया,
मंगया सी प्यार .....

4. खोल कुंडी, तक 'अजायब' , खड़ाक[4] जेहा होया कोई, (3)
करके तरस घर, कृपाल तां नहीं आ गया,
मंगया सी प्यार .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. माड़ी–मोटी : छोटी–मोटी 2. बुल्लियाँ – होठों पर 3. झोरा – चिंता 4. खड़ाक – आवाज़

कृपाल की महिमा

कृपाल की महिमा अपरम्पार, कोट वार जावां बलिहार, (2)

1. हरे अंधेरा ज्योति जगाऐ, हर भटके को राह दिखाऐ,
सदा सहारा दे पग–पग पर, कष्ट हरे सब सुख बरसाऐ, (2)
बिन मांगे ही सब कुछ पाऐ, जो भी आऐ गुरु के द्वार,
कृपाल की महिमा .....

2. सन्त जनों का है यह ज्ञान, हरि से पहले गुरु को जान,
यह तन विष की बेल बावरे, सतगुरु है अमृत की खान, (2)
शत्–शत् नमन वंदना शत्–शत्, गुरु हैं जीवन के आधार,
कृपाल की महिमा .....

3. अन्तर मन की आँखें खोल, झुककर चल और मीठा बोल,
गाँठ बाँध ले तर जाऐगा, गुरु का वचन बड़ा अनमोल, (2)
जिन पर दया करी गुरुवर ने, वही उतर गए भव से पार,
कृपाल की महिमा .....

4. गुरु का नाम है कलयुग में, भवसागर की नाव,
नाम बिना और तैरने का, और नहीं कोई उपाव, (2)
'अजायब' जप कृपाल को, उतर जाऐंगा पार,
कृपाल की महिमा .....

कृपाल यही संदेशा देता

कृपाल यही संदेशा देता, हवा यही सिखलाती है,
सिमरन करते चले चलो तो, मंजिल खुद मिल जाती है, (2)

1. छल–फरेब के किले एक दिन, दुनिया में ढह[1] जाते हैं, (2)
रेतों की दीवार देर तक, कभी नहीं टिक पाती है, (2)
सिमरन करते चले .....

2. इतने सारे पाप साथ में, इतने सारे पापी हैं, (2)
कृपाल ताकत तेरी जय हो, सबका भार उठाती है, (2)
सिमरन करते चले .....

3. ना कोई वैरी ना ही बेगाना[2], जो भी है सब अपना है, (2)
एक नूर से सब जग उपजयो, गुरबानी बतलाती है, (2)
सिमरन करते चले .....

4. गुरु कृपाल तुम्हारी उंगली, थाम[3] रखी है जिसने भी, (2)
उसके आगे काल काँपता, और मौत घबराती है, (1)
'अजायब' कृपाल तों मंग लै माफी, (2)
जे जिंदड़ी सुख चाहती है,
सिमरन करते चले .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ढह – गिरना 2. बेगाना – पराया 3. थाम – पकड़ना

कृपाल गुरु दा विछोड़ा

कृपाल गुरु दा विछोड़ा मैनूं पै गया, दस्सां किहनूं दुःख फोल के[1] (2)

1. पीया कृपाल तेरी जोत इलाही[2] वे,
तुर गयों छड के तूं मेरेया माहीं वे, (2)
अक्खियां नूं, बिरहो विछोड़ा लै गया, दस्सां किहनूं ....

2. होई ना पुराणी मेरी शगनां दी मेहंदी वे,
तेरेयां विछोड़ेयां च जिंद दुःख सैहंदी वे, (2)
मेरा, सगन मुनारा[3] ढह गया, दस्सां किहनूं ....

3. बणया यतीम अज ऐस मैं जहान दा,
रह गया सहारा इक्को तेरे सच्चे नाम दा, (2)
तेरे, प्यार दे फुल्लां च भौरा रह गया, दस्सां किहनूं ....

4. वासी सच्चखंड दा तूं आया विच जग दे,
पैंदी है झलक तेरी विच रग–रग दे, (2)
तन, करके विछोड़ा पै गया, दस्सां किहनूं ....

5. तेरे उत्ते जिंदड़ी मैं घोल घुमाई[4] वे,
तेरेयां विछोड़ेयां च हो गया सुदाई वे, (2)
तेरे, प्यार विच रोणां सदा पै गया, दस्सां किहनूं ....

6. पीर दा विछोड़ा तीर कालजे च वज्जया,
रखी कृपाल ने 'अजायब' दी आ लज्जया[5], (2)
दिल, लै गया ते पिंजरा रह गया, दस्सां किहनूं ....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. फोल के – खोल के 2. इलाही – परमात्मा जैसा 3. मुनारा – मिनार 4. घोल घुमाई – वारी जावां
5. लज्जया – लाज

कोई ना किसे दा बेली

कोई ना किसे दा बेली[1], दुनियां मतलब दी, (2)
कोई ना किसे दा बेली

1. जदों माँ–प्यो बेटा जणया[2], तदों घर दा मालिक बणया, (2)
होया जिवें होशियार, तेरा वधया[3] प्यार, चंग्गे, लगदे भाई बेली,
दुनियां मतलब दी .....

2. मुच्छाँ फुट्टियां दमक रंग मारी, मारे विच असमान उडारी, (2)
चित्त दुनियां च लाया, सच्चे रब नूं भुलाया, सदा, खिड़ी ना रहे चमेली,
दुनियां मतलब दी .....

3. जद घर विच माण वधाया, कुल मालिक दिलों भुलाया, (2)
करीं गुरां नाल प्यार, तेरा हो जाऐ उद्धार, किते, जिंदड़ी ना जाऐ अकेली,
दुनियां मतलब दी .....

4. कर ठग्गियां तूं घर नूं लै आवें, धीयाँ–पुत्राँ नूं आण खवावें, (2)
तैथों पुछणा हिसाब, किवें देवेंगा जवाब, तेरा, कदर ना पैंणा[4] धेली[5]
दुनियां मतलब दी .....

5. जवानी गई बुढ़ेपा आया, बुड्ढा बाबा नाम धराया, (2)
सुनो गुरु कृपाल, आ 'अजायब' नूं संभाल, चक्कलो–2, होली खेली,
दुनियां मतलब दी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बेली – दोस्त 2. जणयां – जन्म दिया 3. वधया – बढ़ाना 4. पैंणा– पड़ना 5. धेली – एक पैसा

केहड़ा चंगा केहड़ा मंदा

केहड़ा[1] चंगा केहड़ा मंदा किंझ[2] समझां,
अपणे दिल दा यार तकाज़ा किंझ समझां, (2)

1. जाम भरे हत्थ सबदे मेरा ऊंणा[3] जाम, (2)
साकी[4] तेरा गलत वतीरा[5] किंझ समझां,
किंझ समझां .....

2. अजब फ़िज़ा है जमाने दी बिगड़ गई, (2)
आपस विच ऐन्हां दा लड़ना किंझ समझां,
किंझ समझां .....

3. ऐह बंदे जो सारे इक्को रब दे ने, (2)
ऐन्हां दा हर रोज उलझणा किंझ समझां,
किंझ समझां .....

4. हर डिगदे[6] नूं सारे धक्का देंदे ने, (2)
हमदर्दी दा मारेया जज़्बा किंझ समझां,
किंझ समझां .....

5. पुचाया कित्थे चाहत कृपाल दी ने, (2)
'अजायब' इस बंदे दा गिरना किंझ समझां,
किंझ समझां .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. केहड़ा – कौन सा 2. किंझ – कैसे 3. ऊंणा – कम 4. साकी – शराब पिलाने वाली 5. वतीरा – बर्ताव
6. डिगदे – गिरते

कौन कहे मैं मर जाणा है

कौन कहे मैं मर जाणा है,
मैं तां कृपाल घर जाणा है, (2)

1. लम्मां चौड़ा सागर जेहड़ा,
होले–होले तर जाणा है,

2. जीवन दी राह विच आई,
मौत मोई ने मर जाणा है,

3. जीवन दे नक्शे अंदर,
रंग सावन दा भर जाणा है,

4. वड्डी सारी उमरां भोगी,
रहना नहीं ऐं घर जाणा है,

5. कृपाल दी चर्चा होंणी है,
जा जीन्नां नाम जप जाणा है,

6. कोई मेरा राह ना रोके,
जाणा है सचमुच जाणा है,

7. तोरो मैनूं हसके तोरो,
अपने ही मैं घर जाणा है,

8. जद वी चाहेगा 'अजायब',
खाली पिंजर कर जाणा है,

खेल न्यारे बक्शन हारे

खेल न्यारे, बक्शन हारे, कृपाल सतगुरु प्यारे, (2)

1. तेरे रंग, निराले दाता, जीवन बक्शन वाले,
दर्शन जिस नूं, होऐ तेरे, हो गए मतवाले, (2)
नाम जपा के, रस्ते पा के, तपदे हिरदे ठारे,
कृपाल सतगुरु प्यारे ....

2. तेरा बण के, सच्चे दाता, लख–लख शुकर[1] मनावां,
तेरे हत्थ है, डोर असाडी[2], जहं भेजें तहं जावां, (2)
चिर[3] दियां ख्वाहिशां[4], पूरियां आसां, लाज रखीं दातारे,
कृपाल सतगुरु प्यारे ....

3. तेरे दर, 'अजायब' आ के, हो गया खुशहाल,
नाम जपाया, चरणीं लाया, हो के सतगुरु दयाल, (2)
मेरियां यादां, सुण फरियादां, सतगुरु बक्शन हारे,
कृपाल सतगुरु प्यारे ....

4. मैं परदेसी, दास 'अजायब', तेरी याद मनावां,
बिसर ना जावां, सतगुरु मेरे, कृपाल–कृपाल गावां, (2)
कृपा करो, कृपाल प्यारे, आऐ हां तेरे दवारे,
कृपाल सतगुरु प्यारे ....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. शुकर – धन्यवाद 2. असाडी – हमारी 3. चिर – देर 4. ख्वाहिशां – इच्छाऐं

गम दुनियां दे हैंन बथेरे

गम दुनियां दे, हैंन[1] बथेरे[2], केहड़ा इश्के दा, रोग सहेड़े[3], (2)

1. हिज़र[4] हनेरा[5], आस डगोरी[6] (3) राह बसलां[7] दे, अत्त लम्मेरे, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
2. मंजिल चुम्मे, पैर ओन्हां दे (3) दरिया सिदकां[8] दा, तरदे जेहड़े, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
3. कायर समझण, दूर दुराडे (3) मंजिल वसदी, हिम्मत नेड़े, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
4. हर इक रोवे, गौं[9] अपणे नूं (3) कौण किसे लई, हंझू[10] केरे, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
5. आस वी फिरदी, बौरी[11] होई (3) सुन्ने[12] सखणें, दिल दे वेहड़े, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
6. सिदक जिन्हां दी, हड्डी रचया (3) कौण ओन्हां दा, साथ नखेड़े[13], (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
7. प्रीत मधानी, दिल दी चाटी[14] (3) इश्क ना जापे, मक्खण पेड़े, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
8. गल्ल सावन दी, आ कोई करिऐ (3) मुका दईऐ हुण, सारे झेड़े, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....
9. 'अजायब' नाम दा, बलदा दीवा (3) होर हनेरा, चार चुफेरे, (2)
   केहड़ा इश्के दा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. हैंन – हैं 2. बथेरे – बहुत 3. सहेड़े – लगाना 4. हिज़र – जुदाई 5. हनेरा – अंधेरा
6. डगोरी – लाठी 7. बसलां – मिलाप 8. सिदकां – भरोसा 9. गौं – मतलब 10. हंझू – आँसू
11. बौरी – पागल 12. सुन्ने – खाली 13. नखेड़े – छोड़े 14. चाटी – मिट्टी का बड़ा मटका

गुरु कृपाल जी तेरा सहारा

गुरु कृपाल जी, तेरा सहारा, (2)

1. तेरी जुदाई, नित सतावे, नाम बिना मैनूं, चैन ना आवे, (2)
तेरे ही नाम दा, चलया फुहारा,
गुरु कृपाल जी .....

2. हरदम तेरी मैं, याद मनावां, तेरे बिना मुल्ल, कौडी ना पावां, (2)
तेरी दया, मेरे दीन दयारा,
गुरु कृपाल जी .....

3. ताने–मेंहणे[1], झल्ले[2] सारे, तेरे बिना दुःख, कौन निवारे, (2)
मेहर करीं मेरे, सच्चया ओ यारा,
गुरु कृपाल जी .....

4. रल–मिल याद, मनोंदियां सईयां[3],नाम सच्चे दियां, धुम्मां[4] पईयां, (2)
तूं अपरम्पार, अगम अपारा,
गुरु कृपाल जी .....

5. दास 'अजायब', याद मनावे, हरदम नाम, गुरु दा गावे, (2)
तैं बक्शया[5] नाम, अटूट भंडारा,
गुरु कृपाल जी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ताने मेंहणे – जली कटी 2. झल्ले – झेलना 3. सईयां – सहेलिआं 4. धुम्मा – धूम 5. बक्शया – दिया

गुरु कृपाल दा मुखड़ा मनां

गुरु कृपाल दा, मुखड़ा[1] मनां, जा के तकणां[2] जरा,
दर्दी दिलां दा, दुःखड़ा मनां, जा के दस्सणां[3] जरा, (2)

1. नाम जप लै मनां, आलस छड दे,
हंगता होमैं[4] नूं, अंदरों कढ दे, (2)
किते जाऐ ना जीवन, सखणां[5] मनां, जा के.....

2. बिना बंदगी[6] जो वी, उम्र विहावे[7],
बीतेया समां फिर, हत्थ ना आवे, (2)
विच दरगाह दे जा के, दस्सणां मनां, जा के.....

3. बेगाने[8] घर विच, प्रीत लगाई,
अपणे घर दी तैं, खबर ना पाई, (2)
दिन थोड़े ही ऐत्थे, वसणां[9] मनां, जा के.....

4. तेरे राहां तों मैं, वारी जावां,
अक्खां दियां पलकां दी, सेज विछावां[10], (2)
सोहणा दर्श अक्खां विच, वसणा मनां, जा के.....

5. दुःख विछोड़े दा, आण हटावो,
दुःखिए 'अजायब' दा, दर्द मिटावो, (2)
रोणां पै गया भुल्ल गया, हसणां मनां, जा के.....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. मुखड़ा – चेहरा	2. तकणा – देखना	3. दस्सणा – बताना	4. हंगता होमैं – अहंकार	5. सखणा – खाली
6. बंदगी – भक्ति	7. विहावे – बीतना	8. बेगाने – पराया	9. वसणां – बसना	10. विछावां – बिछाना

गुरु कृपाल मेरे घर आना

गुरु कृपाल मेरे घर आना, (2)
जैसे तुम सावन दीवाने, मैं तेरा दीवाना, (2) (2)

1. एक बार भी सच्चे मन से, जिसने तुझे ध्याया,
भर–भर झोली दोनों हाथों, तुमने प्यार लुटाया, (2)
मेरी डोर तुम्हारे हाथों, तुम मेरे जीवन साथी, (2)
तुम भक्तों के भक्त तुम्हारे, ठीक नहीं मुझको ठुकराना, (2)
मैं तेरा दीवाना .....

2. शिबरी के जूठे बेरों से प्यारे, तुमने मजा उठाया,
दुर्योधन के मेवे तज[1] के, साग विदुर का खाया, (2)
केवल दास नहीं हूँ सतगुरु, मैं दासों का दास तुम्हारे, (2)
जैसे सबकी लाज रखी है, मेरी भी लाज रखाना, (2)
मैं तेरा दीवाना .....

3. कैसे तुम्हें बुलाऊं सतगुरु, पता नहीं है ज्ञान नहीं,
किसी तरह का कोई तुकब्बर[2], मेरे बस की बात नहीं, (2)
पल–पल के दर्शन को गुरु जी, प्यासी आंखें तरस रही हैं, (2)
यही बेनती है 'अजायब' की, मुझे नहीं तड़पाना, (2)
मैं तेरा दीवाना .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. तज – त्याग 2. तुकब्बर – जोर

गुरु बिना ज्ञान नहीं

गुरु बिना ज्ञान नहीं, ऐवें भुल्लया फिरें अनजाणा, (2)

1. लक्खां जप–तप कर लै, तेरे कम किसे नहीं औणें,
जल धारे कर–कर के, फेर लग पए धूणियां तपौणें, (2)
समा आया अंत जदों, तैनूं गुरु बिना किसे ना छडौणां[1],
गुरु बिना ज्ञान .....

2. समझया सच कर के, ऐहे जगत है कूड़[2] पसारा,
गाफला[3] तूं बुरा फसया, तैनूं गुरु बिना कोई ना सहारा, (2)
गुरु कोलों[4] की छुपया, अंतरयामी घट–घट जाणा,
गुरु बिना ज्ञान .....

3. मान वडयाई जग दी, जरादात[5] कुटुम्ब प्यारा,
बैठ नहीं रहना सदा, मेला है कोई दिन दा नजारा, (2)
पल्ला फड़[6] पूरे गुरु दा, तेरा मुक जाए औणा–जाणा,
गुरु बिना ज्ञान .....

4. गुरु बिना मुक्ति नहीं, सब कैहंदे सन्त स्याणे,
जूनां विच फिरना पवे, जे कर नाम दा भेद ना जाणे, (2)
लोक–लाज विच फस के, तूं भुल्लया असल टिकाणा,
गुरु बिना ज्ञान .....

5. मुक जाण सब झगड़े, जद शरण गुरु दी लब्भ जाऐ,
आण–जाण तां मुकदा, जदों तीर कलेजे विच वज जाऐ, (2)
कृपाल गुरु बक्श लवो, तेरा आ गया 'अजायब' निमाणा[7],
गुरु बिना ज्ञान .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. छड़ौणा – छुड़ाना 2. कूड़ – झूठ 3. गाफला – अनजान 4. गुरु कोलों – गुरु से 5. जरादात – जायदाद
6. पल्ला फड़ – कहना मानना 7. निमाणा – बेचारा

गुरु बिना गत्त नहीं

1. गुरु बिना गत्त[1] नहीं, गुरु बिना पत्त[2] नहीं,
गुरु बिना दरगाह तों, बाहर खड़ोवेंगा[3], (2)

2. गुरु बिना ज्ञान नहीं, गुरु बिना ध्यान नहीं,
गुरु बिना माण नहीं, बैठ के तूं रोवेंगा, (2)

3. गुरु बिना कोई नहीं, गुरु बिना ढोई[4] नहीं,
मुक्ति जे होई नहीं, दुःखी दिलों होवेंगा, (2)

4. गुरु बिना प्यार नहीं, गुरु बिना सार नहीं,
गुरु बिना पार नहीं, 'अजायब' फिर होवेंगा (2)

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. गत्त – गति 2. पत्त – इज्जत 3. खड़ोवेंगा – खड़ा रहेगा 4. ढोई – आसरा

गुरु बिन नहीं बंदे

गुरु बिन नहीं बन्दे कल्याण, (2)

1. मैं लिपटा रहा झूठ में, सुनी ना गुरु की बात,
रैन बसेरे को घर समझा, भटका दिन और रात, (2)
ओ मन मूर्ख अब तो टिक जा, (2) कर सतगुरु का ध्यान,
गुरु बिन नहीं .....

2. जिस पल पंछी कर जाता है, इस पिंजरे को खाली,
साथ छोड़ जाते हैं सारे, क्या माँ क्या घरवाली, (2)
पड़े वहीं पर रह जाते हैं, (2) धन दौलत और मान,
गुरु बिन नहीं .....

3. ओ मेरे मन मथुरा बन जा, बन जा गोकुल धाम,
रोम–रोम में सदा विराजे, कृपाल गुरु का नाम, (2)
गुरु चरन में रत जा बन्दे, (2) ले गुरु का वरदान,
गुरु बिन नहीं .....

4. कभी पूतना पार उतारी, कभी कंस सा पापी तारा,
जब–जब पाप बढ़ा धरती पर, तुमने आकर उसे उतारा, (2)
जन्म–जन्म का प्यासा 'अजायब', (2) बिन दर्श नहीं कल्याण,
गुरु बिन नहीं .....

गुरु चुप रैहंदे सेवक बोल पैंदे

गुरु चुप रैहंदे सेवक बोल पैंदे, गुरु घरां च जा वड़दे धक्को–धक्की[1]
ओऐ सिक्खा तेरे ते गुरु दयाल होया, दया नाल घर भर गया नक्को–नक्की,
गुरु चुप रैहंदे .....

सेवा देण नूं मूल ना ढिल करिऐ, वद्दी–फुलदी[2] जे देईऐ हत्थो–हत्थी,
लालच माया दा देख गुरु लड़ पैंदे, विच कचहरियां दे होण लत्तो–लत्ती
गुरु चुप रैहंदे .....

गल्लां कर–कर के पुल बन दिंदे, आशीर्वाद प्रशाद देण लप्पो–लप्पी[3],
चक्को[4] इट ते गुरुआं दा अंत कोई ना, सेवक किते–किते, लब्भ दा नस्सो–नस्सी[5],
गुरु चुप रैहंदे .....

झूठे गुरु ते झूठे ही शिष्य जित्थे, काल रूहां नूं सांभदा धक्को–धक्की,
करी ना कमाई गुरु बण बैठे, दावे झगड़े चलण होण जफ्फो–जफ्फी[6],
गुरु चुप रैहंदे .....

पूरा गुरु ओह जिहदी कमाई पूरी, रूहां सच्चखंड लै जाऐ हत्थो–हत्थी,
भाग होण उच्चे तां गुरु मिले पूरा, भागां बाज रह जाऐ बंदा तक्को–तक्की[7],
गुरु चुप रैहंदे .....

घट–घट विच मालिक आप बैठा, गल्लां नाल ना रीझदा कत्थो–कत्थी[8],
झगड़े तां मुक्कदे जे मिले गुरु पूरा, 'अजायब' कृपाल दा आखदा सच्चो–सच्ची,
गुरु चुप रैहंदे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. धक्को धक्की – जबरदस्ती 2. फुलदी – बढ़ना 3. लप्पो लप्पी – दोनों हाथ भरकर 4. चक्को – उठाओ
5. नस्सो नस्सी – भागम भाग 6. जफ्फो जफ्फी –हाथापाई 7. तक्को तक्की–देखते देखते 8. कत्थो कत्थी–कहने से

गुरु मेरा चन्न वरगा

गुरु मेरा चन्न वरगा, मेरी प्रीत ना चकोरां वाली, (2)

1. परउपकार जो करें, लिखे जाण ना दातेया तेरे,
औगुणां दा मैं भरया, कोई गुण ना गुरु जी विच मेरे, (2)
हो जाऐ तेरी मौज दातेया, भरे झोलियां तूं पल विच खाली,
गुरु मेरा चन्न .....

2. दुनियां दे तारन लई[1], कुल मालिक जग विच आया,
बंदे दा[2] तूं चोला[3] पहन के, विच अपना आप छुपाया, (2)
बाग ला के सावन ने, तैनूं सौंपेया बाग दा माली,
गुरु मेरा चन्न .....

3. मेर–तेर दुनियां दी, इक पल विच आण मुकाई[4],
होका[5] दे के सतनाम दा, रूहां तपदियां ठण्ड वरताई[6], (2)
दर तेरे जो आ गया, कीती मौज तैं जग तों निराली,
गुरु मेरा चन्न .....

4. सारा जग ढूंढ लया, ना मिलया सहारा कोई,
रख लवीं पैज[7] दातेया, 'अजायब' करे अरजोई[8], (2)
रख लै गरीब जाण के, तूं हैं संगत दा वाली,
गुरु मेरा चन्न .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. तारन लई – उद्धार करने के लिए 2. बंदे दा – इंसान का 3. चोला – शरीर 4. मुकाई – खत्म करना
5. होका – आवाज 6. ठण्ड वरताई – ठंडक पहुंचाना 7. पैज – लाज 8. अरजोई – प्रार्थना

गुरु गुरु गुरु गुरु गुर बोल प्रेम से गुरु गुरु

गुरु गुरु, गुरु गुरु गुर बोल, प्रेम से गुरु गुरु, (2)

1. बड़े भाग्य मानस तन पाया, इसका लाभ उठा ले,
जितना नाम ध्या सकता है, उतना नाम ध्या ले, (2)
जितना सोया वही बहुत है, अब तो आँखें खोल,
प्रेम से गुरु .....

2. जिसने फेरी सच्चे मन से, गुरु नाम की माला,
जितने भेद भ्रम थे मिट गए, ऐसा हुआ उजाला, (2)
गुरु नाम का अमृत पी ले, जीवन में रस घोल,
प्रेम से गुरु .....

3. ताप–शाप संताप मिटाता, गुरु का पावन नाम,
प्रेम भाव के भूखे सतगुरु, कृष्ण कहो या राम, (2)
जो पल सिमरन में बीते हैं, वे पल हैं अनमोल,
प्रेम से गुरु .....

4. याद किया जब भी भगतों ने, नंगे पैरों दौड़ा आया,
सदा दीन को गले लगाया, सदा दिया दुर्बल को सहारा, (2)
खैर[1] नाम की पाओ कृपाल जी, 'अजायब' रहा बोल,
प्रेम से गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. खैर – भीख

गुरु तों बगैर बंदे ज़िंदगी ना रोल ओऐ

गुरु तों बगैर बंदे, ज़िंदगी ना रोल[1] ओऐ, ज़िंदगी न रोल, (2)

1. जगलां पहाड़ां विच, ना मत्था मार ओऐ,
वसदा ऐ अंदर, बाहरों होणा ना दीदार ओऐ, (2)
मालिक बाहरों लब्भदा ऐं[2] बंदे, रैहंदा तेरे कोल ओऐ,
ज़िंदगी ना रोल .....

2. विषयां दी मस्ती विच, रब नूं भुला लया,
आया लाहा लैण हत्थों, मूल वी गवा लया, (2)
इक दिन वजणा[3] ऐ बंदे, मौत वाला ढोल ओऐ,
ज़िंदगी ना रोल .....

3. पानी देया बुलबुलया[4] ओऐ, तेरी मुनियाद[5] ना,
सच्चे रब ताईं बंदे, कीता कदे याद ना, (2)
नदी कंडे[6] रुखड़ा[7] ऐ बंदे, वजणां ऐ झोल[8] ओऐ,
ज़िंदगी ना रोल .....

4. नाम सच्चा गुरु सच्चा, सतसंग सार है,
'अजायब' कृपाल बिना, जिंदगी खवार[9] है, (2)
मुक्ति जे चौहनां ऐं बंदे, सच्चा गुरु टोल[10] ओऐ,
ज़िंदगी ना रोल .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. रोल – बर्बाद करना 2. लब्भदा ऐं – ढूंढता है 3. वजणा – बजना 4. बुलबुलया – बुलबुला
5. मुनियाद – निश्चित अवधि 6. कंडे – किनारे 7. रुखड़ा – पेड़ 8. झोल – हवा का झोंका लगना
9. खवार – परेशान 10. टोल – ढूंढ

चड़े चेत हर चेत प्राणी

1. चड़े चेत हर चेत प्राणी, बिन सिमरन पछतावेंगा, (2)

2. लक्ख करोड़ बरस जे जीवें, ओड़क[1] नूं मर जावेंगा, (2)

3. छुटेंगा जम जाली तों, जद भजन गुरां दे गावेंगा, (2)

4. नाम भुलावें बहौ दुःख पावें, पुट्ठी खल्ल लुहावेंगा[2], (2)

5. आजज होके[3] सतगुरु अग्गे, औगुण कद बक्शावेंगा, (2)

6. ऐह मन पापी औगुणहारे को, तूं मोड़[4] कदों घर ल्यांवेंगा, (2)

7. 'अजायब' कृपाल दा नाम ध्या लै, नहीं तां पछोतावेंगा, (2)

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. ओड़क – आखिर 2. लुहावेंगा – उतरवाएगा 3. आजज होके – दीन होकर 4. मोड़ – वापिस

चलो मन सतगुरु के दरबार

चलो मन, सतगुरु के दरबार,
सुरत शब्द का, मेल जोड़ के, कर दें बेड़ा पार, (2) (2)
चलो मन, सतगुरु के दरबार,

1. पाप शाप त्रय[1] ताप मिटाऐ, गुरु का पावन नाम,
गुरु जी की चरण धूड़ में सब ही, स्वर्ग और सुर धाम, (2)
गुरु की माया गुरु ही जाने, लीला अपरम्पार, (2)
चलो मन सतगुरु .....

2. तीन लोक में कहीं नहीं है, गुरु से बड़ा सहारा,
सचमुच बल देता है प्यारे, सतगुरु का जयकारा, (2)
बड़े भाग्य से मिल पाता है, गुरु का पावन प्यार, (2)
चलो मन सतगुरु .....

3. सन्त महात्मा सभी देवता, गुरु को शीश नवाते[2],
जय हो सतगुरु प्यारे तेरी, शेषनाग गुण गाते, (2)
जिसने नाम जपा गुरु तेरा, उसका बेड़ा पार, (2)
चलो मन सतगुरु .....

4. आ पहुँचा अब द्वारे तेरे, 'अजायब' गरीब बेचारा,
मैं अपराधी कोट[3] जन्म का, भूला जीव तुम्हारा, (2)
नाम जहाज चढ़ाओ कृपाल जी, मुझको करदो पार, (2)
चलो मन सतगुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. त्रय – तीन 2. निवाते – झुकाते 3. कोट – कई

चोरां तेरा घर लुटया

चोरां तेरा घर लुटया, तैनूं सुत्तयां जाग ना आई (2)

1. मालिक वंडदा[1] है, सारी रात कस्तूरी दे खज़ाने,
नाम दे खज़ाने लुटदे ओऐ, लाहा लैणगे[2] जो होऐ मस्ताने, (2)
मालिक मिलदा है, जिन्हां गुरु नाल प्रीत लगाई,
चोरां तेरा घर .....

2. पँजे डाकू पहलवान हैं, फड़ जीवां नूं ऐह मार मुकांदे,
गुरु पल्ले जिन्हां जीवां दे, गुरु वाले तो बड़ा डर खांदे, (2)
खाली जांदे दुनियां तों, जिन्हां खाद्दी वेच कमाई,
चोरां तेरा घर .....

3. सारा दिन धंधेयां[3] दी, तैनूं चढ़दी[4] रहे मगरूरी,
मौत दा नगाड़ा वजया ओऐ, रह गई त्रिशना[5] आस अधूरी, (2)
जागया ना तूं अड़्या[6] ओऐ, तैनूं सुत्तयां रैन विहाई[7],
चोरां तेरा घर .....

4. जाग–जाग सुत्तया ओऐ, चोरां घेर लिया चार चुफेरा[8],
लुटया ना जाऐ सजणा ओऐ, ऐहे नाम दा खज़ाना तेरा, (2)
सतगुरु सूरमे ने, रूह घेरी होई आण छुड़ाई,
चोरां तेरा घर .....

5. सुत्तया तूं जाग बंदया ओऐ, तैनूं कैहंदे सन्त प्यारे,
सुत्ता होया नहीं जागणा ओऐ, जदों लम्बे गोड[9] पसारे, (2)
सुत्ती रूह 'अजायब' चिर दी, आ के गुरु कृपाल जगाई,
चोरां तेरा घर .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वंडदा – बाँटता 2. लाहा लैणगे – लाभ लेंगे 3. धंधेयां – धंधा 4. चढ़दी – चढ़ी 5. त्रिशना – ख्वाहिशें
6. अड़्या – जिद्दी 7. विहाई –बिताई 8. चुफेरा – चारों तरफ 9. गोड – घुटने

छड झूठा जगत सरां दा प्यार

छड झूठा जगत सरां[1] दा प्यार, छड झूठा जगत सरां दा, (2)

1. तैनूं दुनियां दे प्यार ने मोह लया, (2)
सदा रहणा ना ऐत्थे भोलया प्यार, (1)
वे मैं गुरु दा सहारा टोलया, (2)
छड झूठा जगत .....

2. जो वी जगत सरां विच आया, (2)
दो दिन कटके चाले पाया प्यार, (1)
वे मैं गुरु दी शरण विच आ गया, (2)
छड झूठा जगत .....

3. बंदे मन अपना समझा लै, (2)
नेकी दुनियां दे विच तू कमा लै प्यार, (1)
दिल गुरु चरनां विच ला लै, (2)
छड झूठा जगत .....

4. धन गुरु कृपाल प्यारेया, (2)
दिलां तपदेयां नूं आ के ठारेया प्यार, (1)
'अजायब' सतगुरु तों बलहारेया, (2)
छड झूठा जगत .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. सरां – धर्मशाला

जप नाम गुरु दा ओऐ

जप नाम गुरु दा ओऐ, मिलया मानस जन्म अमोला,
जे मिलणा मालिक नूं, कोई लब्भ लै गुरु विचोला[1], (2)

1. ऐह मंदिर मालिक दा, अंदर बैठा आसन ला के,
नहीं बाहर लब्भणा ओऐ, मिलणा मालिक अंदर जा के, (2)
छड अड़ियां[2] मूर्खा ओऐ, ओणा इक दिन मौत वरोला[3],
जप नाम गुरु .....

2. जग छडना पैणा[4] ओऐ, जिहनु करदैं मेरा–मेरा,
रात उम्र गुजारी ओऐ, दिने आ गया मौत सवेरा, (2)
जेहड़ा उड़दा फिरदैं ओऐ, इक दिन खुसणा[5] उडन खटोला,
जप नाम गुरु .....

3. क्यों भुल्लया दाते नूं, जिसने बक्शया मानस जामा,
किते रोल ना देवीं ओऐ, अंश मालक दी तूं इंसाना, (2)
खट[6] लाहा[7] लै जावीं, तैनूं मिलया मानस चोला,
जप नाम गुरु .....

4. दुनियां दी दौलत जो, सारी ऐत्थे ही रह जावे,
विच दरगाह दे जा के, गुरु तों बाज[8] ना कोई छुड़ावे, (2)
कृपाल गुरु धन है 'अजायब' दा चुकया[9] भरम दा ओहला[10],
जप नाम गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. विचोला – मध्यस्थ 2. अड़ियां – जिद्द करना 3. वरोला – हवा का बवंडर 4. पैणा – पड़ना
5. खुसणा – छिनना 6. खट– कमाना 7. लाहा – लाभ 8. बाज – बगैर 9. चुकया – उठाया 10. ओहला – पर्दा

जप लै तूं नाम गुरु दा

जप लै तूं नाम गुरु दा, कर लै कुरबानी ओऐ,
नाम दे बाजों ज्यौंणा[1], झूठी जिंदगानी ओऐ, (2)

1. काया दा मंदिर सोहणा, बणया इंसान है,
मंदिर दा मालिक अंदर, बैठा भगवान है, (2)
मेला है कोई रोज दा, दुनियां ऐह फ़ानी ओऐ, जप लै.....

2. बचपन दा मौका ऐवें, खेल गवाया ओऐ,
मारे जवानी ठाठां[2], रब नूं भुलाया ओऐ, (2)
ना घटया हंकार तेरा, ढल गई जवानी ओऐ, जप लै.....

3. मिलया इंसान जामा, ऐवें गवांवीं ना,
आया हत्थ लाल अमुल्ला, मिट्टी च रुलावीं ना, (2)
मिलना ना वारो वारी, जामा इंसानी ओऐ, जप लै.....

4. सन्तां दी संगत कर लै, इज़्ज़त जे चौहनां ऐ,
सतगुरु दा नाम जप लै, देरी क्यों लौना[3] ऐ, (2)
कर लै सतसंगत सच्ची, छड के मनमानी ओऐ, जप लै.....

5. फिरदा तूं जंगल भौंदा[4], मालिक है कोल ओऐ,
दुनियां दा राजा बण के, होया क्यों रोल[5] ओऐ, (2)
मिलया कृपाल सोहणा, 'अजायब' दा जानी ओऐ, जप लै.....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ज्यौंणा – जीना 2. ठाठां – जोश 3. लौना – लगाना 4. भौंदा – घूमना 5. रोल – बिना मतलब भटकना

जपयो जिन गुरु कृपाल दयाल

जपयो जिन गुरु (2) कृपाल दयाल ओह,
मात गर्भ फिर, योनि ना आयो, जपयो जिन गुरु, (2)

1. जिस याद कियो, फरियाद कियो, (2)
तिस प्रेम जहाज से, पार लंघायो,
जपयो जिन गुरु .....

2. जिस प्रीत करी, विप्रीत[1] हरी, (2)
उस जन्म–मरण का, दू:ख मिटायो,
जपयो जिन गुरु .....

3. जिस नाम लियो, अमृत पान कियो, (2)
तिस काल के जाल को, तोड़ गिरायो,
जपयो जिन गुरु .....

4. मन में जाप कियो, आपा त्याग दियो, (2)
सच आत्म सो, परमात्म पायो,
जपयो जिन गुरु ....

5. जिस नाम जपयो, भगवान रटयो, (2)
सो सच्चखंड के, बीच सिधायो[2],
जपयो जिन गुरु .....

6. गुरु सुख नंदन, महके चंदन, (2)
'अजायब' की वंदन, शीश निवायो[3],
जपयो जिन गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. विप्रीत – उलटा होना 2. सिधायो – पहुंचना 3. निवायो – झुकाना

जामा इंसान ऐ अमुल्ला लाल ओऐ

जामा इंसान ऐ अमुल्ला लाल ओऐ,
मिट्टी च ना रोलीं[1], रख लईं संभाल ओऐ,
नाम जप गुरां दा ते सुख पावेंगा, गुरु तों बगैर नरकां नूं जावेंगा, (2)

1. वडे–वडे ऐत्थे, अवतार धार गए,
मिल गया गुरु, कारज[2] सवार गए, (2)
जे मिलया ना गुरु, फेर पछोतावेंगा, गुरु तों बगैर .....

2. सुपने दी न्याईं[3], सारे सुख माया है,
ढलदा परछावां[4], बद्दलां दी छाया है, (2)
इक दिन ऐत्थे सारे, छड जावेंगा, गुरु तों बगैर .....

3. नाम नूं भुलाके, बणी ना कंगाल ओऐ,
सच्चा नाम जप, हो जा मालोमाल ओऐ, (2)
सच्चखंड विच जा के, सुख पावेंगा, गुरु तों बगैर .....

4. बानी गुरु ग्रंथ, विच सच लिखया,
गुरु तों बगैर, औंदी ना कोई सिक्खया, (2)
सच्चा गुरु मिले, मुक्ति नूं पावेंगा, गुरु तों बगैर .....

5. काया मंदिर विच, हरि बैठा आप है,
गुरु विचोला[5] बण, करदा मिलाप है, (2)
मिल गया गुरु, मुक्त हो जावेंगा, गुरु तों बगैर .....

6. आद–अंत तों[6] ही, रीत चली शुरू दी,
गुरु ग्रंथ विच, महिमा भरी गुरु दी, (2)
'अजायब' कृपाल मिले, सुख पावेंगा, गुरु तों बगैर .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. रोलीं – मिट्टी में मिला देना 2. कारज – काम 3. न्याईं– तरह 4. ढलदा परछावां – परछाई ढलना
5. विचोला – मध्यस्थ 6. आद अंत तों – शुरू से अंत तक

जिन्हां जपया कृपाल प्यारा

जिन्हां जपया कृपाल प्यारा, नरकां नूं नहिओं जाणगे, (2)

1. जन्म–मरण दा, दुःख है भारी, मिल गए सतगुरु, कट गई बीमारी, (2)
मिल गया सच्चे गुरु दा सहारा,
नरकां नूं ....

2. दरगाह विच कोई, पेश ना जावे, जामन बण के, गुरु ही छुड़ावे, (2)
गेड़ा कटया चौरासी वाला,
नरकां नूं ....

3. चौरासी लख, जून उपाई[1], मानस को प्रभ, दी वडयाई[2], (2)
गुरु मिल गए तां भवजल तारा[3],
नरकां नूं ....

4. आशिक बण तेरे, दर जो आया, जमण–मरण, पल च मुकाया, (2)
जिन्हां गुरु उत्तों तन–मन वारा,
नरकां नूं ....

5. गरीब 'अजायब', तरले[4] पावे, शाह कृपाल दा, शुकर मनावे, (2)
सच्चा लभ्भ गया यार प्यारा,
नरकां नूं ....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. उपाई – पैदा की 2. वडयाई – बड़ाई 3. भवजल तारा – भवसागर से तारना 4. तरले – मिन्नतें

जिसने नाम जपा

जिसने नाम जपा, नाम जपा सुख पाया, जिसने नाम जपा, (2)

1. मात–पिता भाई सुत[1] दारा[2], साथ ना कोई जाएेगा,
अन्त समय में धन और दौलत, कुछ भी काम ना आऐगा, (2)
यह संसार मीत[3] मिथ्या है, मिथ्या[4] इसकी माया,
जिसने नाम जपा .....

2. उनकी गिनती कितनी होगी, परमेश्वर ही जाने,
मिट्टी में मिल मिट्टी हो गए, अनगिन राज घराने, (2)
राम भजन कर तरे पातकी, जग में नाम कमाया,
जिसने नाम जपा .....

3. जिस पल याद किया भक्तों ने, अपनी सुध बिसराऐ,
महा सिंहासन तज नंगे पैरों, राम प्रभु दौड़े आए, (2)
पलक झपकते पीड़ा हर ली, पल में कष्ट मिटाया,
जिसने नाम जपा .....

4. मारे असुर सन्त जन तारे, झंडा ऊँचा किया धर्म का,
जो प्रभु दे दे हँस कर ले ले, कर शुक्राना उसी का, (2)
कृपाल 'अजायब' निमाणे[5] का, नाम से मेल कराया,
जिसने नाम जपा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सुत – बेटा 2. दारा – पत्नी 3. मीत – दोस्त 4. मिथ्या – झूठ 5. निमाणे – बेचारे

जी अज दी सुलखणी घड़ी

जी अज दी, सुलखणी[1] घड़ी, मेरे सतगुरु आण मिलाई, (2)

1. मेरे विच गुण कोई ना, मैं तां, हां पापण हत्यारी,
जंगलां च रही ढूंढदी, अपने, पीया मिलन दी मारी, (2)
भुल्ली होई जन्मां दी, मैं तां दर तेरे ते आई,
जी अज दी ....

2. तैथों बिना साईं मेरेया, झल्ले[2], दुनियां ते दुःख मैं बथेरे,
जमदी–मरदी रही हर थां[3], आखिर, आण के डिगी[4] दर तेरे, (2)
हुण ना विछोड़ीं दातेया, तेरे दर ते निमाणी[5] जिंद आई,
जी अज दी ....

3. आसरा ना रेहा कोई वी, इक्को, तक्कया[6] सहारा तेरा,
थक गई मैं भाल–भाल के, किवें, लब्भ जाऐ प्यारा मेरा, (2)
मैं हत्थ बन्न करां बेनती, मैनूं हर थां होणा जी सहाई,
जी अज दी ....

4. मिलो कृपाल प्यारेया, लावो, लेखे विच जिंदगी मेरी,
माफ करीं भुल्लां मेरियां, मैं, आई हां शरण हुण तेरी, (2)
अर्ज 'अजायब' करे, दासी बण तेरी मैं आई,
जी अज दी ....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सुलखणी – शुभ घड़ी 2. झल्ले – सहना 3. थां – जगह 4. डिगी – गिरना 5. निमाणी – बेचारी
6. तक्कया – देखा

जीवन सफल बना ले बंदे

जीवन सफल, बना ले बंदे, जीवन सफल, बना ले, (2)

1. जिसको तूने, घर समझा है, यह है एक, सराय[1],
यह जग चला, चली का मेला, इक आऐ, इक जाऐ, (2)
साथ नहीं जाती, काया तक, माया के, मतवाले,
जीवन सफल, बना ले .....

2. दीन दु:खी और, दुर्बल जन की, कर ले सेवा, कर ले,
राम नाम के, हीरे मोती, इस झोली में, भर ले, (2)
कमा सके, जितना जीवन में, उतना नाम, कमा ले,
जीवन सफल, बना ले .....

3. सन्त जना की, बात छोड़ दे, महा अधम[2] तक, तर गए,
जो भी चरण, शरण में आऐ, पल में पार, उतर गए, (2)
करनी कर, निष्काम भाव से, प्रभु से प्रीत, लगा ले,
जीवन सफल, बना ले .....

4. भवसागर से, पार हो जाता, जिसने गुरु का, नाम पुकारा,
सिमरन गुरु का, रट ले बंदे, हो जाऐ तेरा, छुटकारा, (2)
गुरु कृपाल, तेरे संग 'अजायब', थोड़ा ध्यान, लगा ले,
जीवन सफल, बना ले .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. सराय – धर्मशाला 2. महा अधम – महा पापी

जे बंदया तैं रब नूं मिलना

जे बंदया तैं रब नूं मिलना, (2)
मन बदियां[1] तों मोड़ लवीं ओऐ चित्त, गुरु चरना वल, जोड़ लवीं(2)

1. बुरे कर्मां दी सजा सोहणया, धक्के खांदा ऐं फिरदा,
गुरु बिना कोई बात ना पुछदा, बिछुड़ गयों कई चिर दा[2], (2)
जे लब्भणा तूं मालिक अपना (2), कंध पड़दे दी तोड़ लवीं
ओऐ चित्त गुरु ....

2. माया नागणी बड़ी भयानक, जाये[3] अपणे खावे,
डाडा[4] जाल बिछाया इसने, कोई गुरमुख ही बच जावे, (2)
जे नरकां तों बचणा चौहनां (2), सिमरन वल मन मोड़ लवीं
ओऐ चित्त गुरु ....

3. पुन्न–दान ते जप–तप सारा, ऐत्थे ही रह जावे,
करी कमाई नाम शब्द दी, मालिक नाल मिलावे, (2)
लब्भया अमृत नाम प्याला (2), ऐवें ना तूं रोढ़[5] लवीं
ओऐ चित्त गुरु ....

4. अर्ज सुणों कृपाल प्यारे, रूहां सच्चखंड पुचावो,
मैं अनजाण 'अजायब' नकारा, अपणें चरणी लावो, (2)
कर बंदगी[6] सतसंगत सुण लै (2), जेल चौरासी दी तोड़ लवीं,
ओए चित्त गुरु ....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बदियां – बुराई 2. चिर दा – देर से 3. जाये– बच्चे 4. डाडा – बड़ा 5. रोढ़ – बहा देना
6. बंदगी – भक्ति

जे सजनां तैं मुर्शिद खुश करना

जे सजनां तैं मुर्शिद खुश करना, ते तड़फ बनौंणी पैंदी ऐ, (2)

1. घा खोतणा[1] पवे जिंद दुःखड़े सहे, कही वौहणी[2] पवे नाम गुरु दा लवे,(2)
सिर टोकरी उठौंणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं .....

2. मस्ताने वांगू[3] लिट अग्गे, तू प्यार च प्रीतम खिच अग्गे, (2)
मस्ताने वांगू सजनां ओऐ, जिंद घट्टे च रुलौणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं.....

3. दर प्रीतम दे तूं अलख जगा, इक दिन सजनां तैनूं पाऊ राह, (2)
कबीर दे वांगू सजनां ओऐ, जिंद ज़मीं च गड़ौणी[4] पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं.....

4. तूं अमर गुरु वांगू कर सेवा, इस रुख नूं लगदा वेख मेवा, (2)
जे सुंडी[5] सिर तों गिर जावे, सिर उत्ते टिकौणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं .....

5. तूं देख लै सजनां लैहणें वल, उस राह ते सजनां तूं वी चल, (2)
जे हुक्म वी मालिक कर देवे, देही चीकड़[6] नवौहणी[7] पैंदी ऐ,
जे सजनां तें .....

6. तू देख लै बीबी अमरो वल, जिस पैर दे विच पवाया सल्ल[8], (2)
वस प्यार दे आ के विच सजनां, धार खून दी चलौणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तें .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. घा खोतणा – घास काटना 2. वौहणी – चलानी 3. वांगू – तरह 4. गड़ौणी – गड़वानी 5. सुंडी – कीड़ा
6. चीकड़ – कीचड़ 7. नवौहणी – नहलानी 8. सल्ल – छेद

7. लोक लाज देवीं तूं छड सजनां, तैंनू तारु तेरा रब सजनां, (2)
ऐहनूं कर दे हवाले प्रीतम दे, फिर उसनूं बचौणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं.....

8. मंसूर वरगी तेरी अक्ख होसी, ताहीं सूली ऊपर चढ़ होसी, (2)
शमस तबरेज दे वांगू वीरा ओऐ, खलड़ी[1] लहौणी[2] पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं.....

9. ऐह मंजिल लगदी औखी ऐ, रब आशिकां नूं ऐह सौखी ऐ, (2)
इस मंजिल उत्ते हर वेले, तकलीफ उठौणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं .....

10. ऐत्थे विरला आशिक चढ़दा ऐ, जेहड़ा मौतों मूल ना डरदा ऐ, (2)
मेरे प्रीतम प्यारे नूं, सूली दी सूल बनौणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं .....

11. मालिक दा भाणां मन के चल, तेरा प्रीतम सजनां तेरे वल, (2)
गुरु अर्जुन वांगू सजनां ओऐ, सिर रेत पवौणीं पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं .....

12. 'अजायब' देख नजारे नूं, गुरु मिलिए प्रीतम प्यारे नूं, (2)
प्रीतम नूं अपने चेले दी, तकदीर बनौणी पैंदी ऐ,
जे सजनां तैं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. खलड़ी – चमड़ी 2. लहौणी – उतरवानी

जेहड़े गुरु भगती तों हीणें

जेहड़े[1] गुरु भगती तों हीणें[2], डरदे रहिऐ ओन्हां लोकां तों, (2)

1. ऐसे लोगन स्यों[3] क्या कहिऐ, जो प्रभ किऐ भगत ते बाहज़[4], (2)
तिन ते सदा डराने रहिऐ,
डरदे रहिऐ ओन्हां .....

2. बंदगी बाजों उम्र विहाई[5], सिर तक न्याईं कम ना आई, (2)
धृग[6] खाने ते धृग ही पीने,
डरदे रहिऐ ओन्हां.....

3. सन्तां दी जो निंदया करदे, विच चौरासी जमदे–मरदे, (2)
लक्खां फटकार ओन्हां दे जीने,
डरदे रहिऐ ओन्हां .....

4. सिमरन करके बंदा चंगा, नाम बिना गंदे तों गंदा, (2)
जो गुरुमत तों हींणे,
डरदे रहिऐ ओन्हां .....

5. सतसंग दे विच चल ना औंदे, बातन[7] स्यों असमान गिरौंदे, (2)
ओह तां जहर प्याले पीणें,
डरदे रहिऐ ओन्हां .....

6. जागण भाग कृपाल ध्याईऐ, 'अजायब' डर काल मुकाईऐ, (2)
बाज गुरु सब काल चबीणे[8],
डरदे रहिऐ ओन्हां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. जेहड़े – जो 2. हीणें – बिना 3. लोगन स्यों – लोगों से 4. बाहज़ – बिना 5. विहाई – बिताई
6. धृग – लानत 7. बातन स्यों – बातों से 8. चबीणे – खाज

जो बानी पूरे सतगुरु दी

जो बानी पूरे, सतगुरु दी, ओह जमण–मरण, मुकौंदी[1] ऐ,
जो नाम गुरां दा, जपदा है, दरगाह विच मुक्त, करौंदी ऐ, (2)

1. जित्थे बानी दा अंदर, जाप होवे, कुल मालिक प्रतख[2], आप होवे,
ओह धुर की बानी, आई ऐ, जिन सगली चिंत, मिटाई ऐ, (2)
सच्चे गुरुआं दी बानी, पूरी ऐ, पापां दा नाश, करौंदी ऐ,
जो बानी पूरे .....

2. बानी दी सिफत ना, होंदी ऐ, मैल जन्म–जन्म दी, धोंदी ऐ,
सच्चे गुरु दी जो बानी, रटदा ऐ, महाजाल काल दा, कटदा ऐ (2)
जो श्रद्धा करे, विश्वास धरे, ओहनूं मालिक नाल, मिलौंदी ऐ,
जो बानी पूरे .....

3. कीर्तन बानी दा हो रेहा, अंदर विच, चौहंदे सुनना मस्जिद, मंदिर विच,
ऐह काया ही, हरमंदिर है, बैठा ओह सोहणा, अंदर है, (2)
बानी सच्चे कुल, मालिक दी, दरगाह विच मुक्त, करौंदी ऐ,
जो बानी पूरे .....

4. ऐह महापुरुषां दी, बानी ऐ, ऐह तां है रतनां दी, खानी ऐ,
गुरुआं दे नाल, मिला देवे, सच्चखंड दा भेद, बता देवे, (2)
ऐह बानी सच्चे, सतगुरु दी, होमैं दा रोग, हटौंदी ऐ,
जो बानी पूरे .....

5. सावन ने झड़ियां, रच लईयां, रूहां मुरझाईयां, बच गईयां,
जीवां ते होया, दयाल प्रभु, अंतरयामी, कृपाल प्रभु, (2)
बानी दी सिफत, 'अजायब' करे, सोहणा विछड़या यार, मिलौंदी ऐ,
जो बानी पूरे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. मुकौंदी – खत्म करती है 2. प्रतख – प्रत्यक्ष

जोत रब दी है आई

जोत रब दी है आई, सारे देयो जी वधाई,
नी मैं खिड़–खिड़ (2) हसदी फिरां, ते घर–घर दस्सदी फिरां
आया, सोहणा, मैं घर–घर दस्सदी फिरां, मैं दस्सदी फिरां,

1. अज देवी–देवते मनौंण सारे खुशियां ते परियां शब्द अज गौंदियां, (2)
खुशी विच अज सारी दुनियां बधाई देवे घर–घर शगन मनौंदियां,
नी मैं दिल विच, दिल विच हसदी फिरां,
ते घर–घर .....

2. हसुँ–हसुँ करे मुख झलया[1] ना जाऐ तेज चेहरे उत्ते चमकां पैंदियां, (2)
आया ऐ इलाही नूर जग तो न्यारा बण मिल के सहेलियां कैहंदियां
नी मैं भज–भज[2], भज–भज ढकदी फिरां,
ते घर–घर .....

3. पिता ऐ हुक्म सिंह माता ऐ गुलाब देवी घर विच चानण आ गया, (2)
नाम कृपाल बण जग ते मिसाल आ 'अजायब' दा हनेरा[3] ठा गया,
16 पी. एस., 16 पी. एस. वसदी फिरां,
ते घर–घर .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. झलया – सहन करना 2. भज–भज – भाग भागकर 3. हनेरा – अंधेरा

झूठा संसार है ज़िंदगी लाचार है

झूठा संसार है, ज़िंदगी लाचार है,
आओ कृपाल जी, तेरी इंतज़ार है, तेरी इंतज़ार है, (2)

1. मेरे दाता जी, गुनाहगार असीं[1] साडे कागज ना फोल वे, (2) (2)
बेड़ी मझधार है, कर देयो पार है, आओ .....

2. आओ प्यारे, सुण लवो बेनती, (2) (2)
सच्चा तेरा प्यार है, तेरा ही आधार है, आओ .....

3. असीं हां मैले, सानूं ऊजल कर दे, (2) (2)
करना दीदार है, रुह शरमसार है, आओ .....

4. तुसीं बक्शो दाता जी, तुसीं बक्शिंद हो, (2) (2)
'अजायब' दी पुकार है, खड़क[2] रही तार है, आओ .....

झूठे छड के विहार

झूठे छड के विहार, करीं गुरां नाल प्यार,
सच्ची श्रद्धा नूं धार, प्यार गुरां नाल पा लवीं,

1. होमैं हंगता नूं मार, वैर ईरखा विसार,
मिल जाऐ निरंकार, चित्त चरणा च ला लवीं,

2. घड़ी नाम ना विसार, तेरा हो जाऐ उद्धार,
बेड़ा लग जाऐ पार, पहलां मन समझा लवीं,

3. 'अजायब' मिले कृपाल, हो जाऐ जे दयाल,
कर देवे मालोमाल, मन बदियां[3] तों ठा[4] लवीं,

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. असीं – हम 2. खड़क – बज 3. बदियां – बुराईयां 4. ठा – हटा

झूठी दुनियां च फसया दिल मेरा

झूठी दुनियां च फसया, दिल मेरा, कोई आ के बंधन तोड़ गया,
लख वारी ओह, जी सदके[1], जेहड़ा सुरत शब्द नूं जोड़ गया, (2)

1. भटके दुनियां विच रूह मेरी, (2) मिलया ना कोई दर्दी,
फसी फसाई दुनियां दे विच, दुनियां है बेदर्दी,
भुल्ल के रस्ता, औजड़[2] पै गई, (2) रस्ते वल मुँह मोड़ गया,
लख वारी ओह .....

2. मैं मूर्ख पापण हत्यारी, ऐबां दे विच अड़ गई,
याद प्रभु दी भुल्ल गई मैं, हेठ[3] पापां दे दड़ गई,
तरस मेरे ते, कीता आ के, (2) काल दे संगल[4] तोड़ गया,
लख वारी ओह.....

3. मैं अनजान ना कुछ वी जाणां, (2) मैं धक्के खांदी फिरदी,
मिल जाऐ कृपाल दयालु, तांघ[5] दिलां विच चिरदी,
रूह 'अजायब' दी, घर तों भुल्ल गई, (2) फड़के घर नूं मोड़ गया,
लख वारी ओह.....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सदके – कुर्बान 2. औजड़ – भटकना 3. हेठ – नीचे 4. संगल – जंजीर 5. तांघ – इंतजार

तक लै मना ओऐ कृपाल प्यारे ताईं

तक लै मना ओऐ, कृपाल प्यारे ताईं[1], (2)

1. दर्शन गुरु दा जिसने कीता,
अमृत नाम प्याला पीता, (2)
पक लै मना ओऐ, कृपाल सहारे ताईं, तक लै .....

2. जिसने वी दिल विच, गुरु नूं बिठा लया,
गेड़ा[2] चौरासी वाला मुका लया, (2)
रख लै मना ओऐ, गुरु प्यार नज़ारे ताईं, तक लै .....

3. गुरु दा प्यार, जिस हृदय च आऐगा,
सच्चखंड दा बूहा[3] खुल जाऐगा, (2)
रट लै मना ओऐ, सच्चे गुरु दे इशारे ताईं, तक लै .....

4. दुःखियां दे दुःख, इक पल च निवार दा,
ठलया[4] ना जाऐ ओह समुद्र प्यार दा, (2)
दया जद होवे, इक पल विच तारे साईं, तक लै .....

5. दस्सी ना कहानी जाऐ, गुरु दे प्यार दी,
करां की सिफ़त मैं सच्चे दिलदार दी, (2)
दस्स लै 'अजायब', कृपाल दे नजारे ताईं, तक लै .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ताईं – तरफ 2. गेड़ा – चक्कर 3. बूहा – दरवाजा 4. ठलया – रोका न जाए

तपदे हिरदे ठारे आ के

तपदे हिरदे ठारे आ के, नाम दा मींह[1] वरसा गया,
दर्द निवारण दु:खियां वाले, सच्चा सतगुरु आ गया, (2)

1. जिस थां ते कृपाल प्यारा, ओत्थे बाग बहारां,
समय–समय सिर लाऐ बूटे[2], अज खिड़ियां गुलजारां, (2)
नाम दे बूटे लाऐ उसने, सतसंग पानी पा गया,
दर्द निवारण दु:खियां .....

2. धन–धन कृपाल प्यारा, अपनी चरनी ला लया,
पंच शब्द दा रस्ता दस्सके, अपने विच मिला लया, (2)
दुई–दवैत[3] दा भेद मिटा के, इक्को शब्द सिखा गया,
दर्द निवारण दु:खियां .....

3. हर थां ते कृपाल प्यारा, अक्खियां विच समाया है,
घट–घट दे विच वसदा सोहणा, विरले ने ही पाया है, (2)
दुनियां दे सब इल्म छुड़ा के, इक्को शब्द सिखा गया,
दर्द निवारण दु:खियां .....

4. दास 'अजायब' अर्जां कर दा, सुण कृपाल प्यारेया,
दर तेरे ते ढठे[4] आ के, रखीं लाज दातारेया, (2)
नामदान दी झोली भर के, झोली भरन सिखा गया,
दर्द निवारण दु:खियां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मींह – बारिश 2. बूटे – पौधे 3. दुई दवैत – वैर विरोध 4. ढठे – गिरे

तुम बिन कौन सहाई दाता

तुम बिन कौन सहाई दाता, तुम बिन कौन सहाई जी,

जन्म–जन्म को दर–दर भटके, लख–लख ठोकर खाई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

भूले भटके राही दाता, आऐ तेरी शरणाई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

बड़े–बड़े ऋषि–मुनि हैं तारे, हम को लो तराई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

बड़े–बड़े पापी हैं तारे, तेरी बड़ी वडयाई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

तुम हो अगम अगोचर दाता, दे दो आन दिखाई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

भजन बिना है मुक्ति नाहीं, सीख तुम्हीं से पाई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

तेरा नाम जहाज़ है दाता, सफर बड़ा सुखदाई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

चरन–कमल पर बलि–बलि जावें, तेरा ध्यान लगाई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

तुम हो बड़े कृपाल ओ दाता, 'अजायब' मिले गुरु आई जी, (2)
तुम बिन कौन .....

तुमसे मेरा जन्म-जन्म का नाता

तुमसे, मेरा जन्म–जन्म का नाता हे कृपाल गुरु, (2) (2)
मेरा जन्म–जन्म का नाता हे कृपाल गुरु, (2) (1)

1. तुम हो पारब्रह्म परमेश्वर, मैं हूं अंश तुम्हारा,
तुमसे बड़ा नहीं है जग में, कोई और सहारा, (2)
मैं सेवक तुम स्वामी मेरे, तुम ही भाग्य विधाता,
हे कृपाल गुरु .....

2. सच्चे मन से एक बार भी, जिसने तुम्हें पुकारा,
जन्म–मरण के इस चक्कर से, मिला उसे छुटकारा, (2)
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, पार नहीं मिल पाता,
हे कृपाल गुरु .....

3. मेरे सतगुरु पतित पावन हैं, पावन नाम तुम्हारा,
मैं अपराधी महा पतित मैं, मैंने तुझे बिसारा, (2)
ना मुझ जैसा याचक सतगुरु, ना तुम जैसा दाता,
हे कृपाल गुरु .....

4. तिल–तिल का अपराधी सतगुरु, मैं भूला जीव बेचारा,
कोट पाप को मिटाने वाला, ऐसा नाम तुम्हारा, (2)
कृपाल गुरु ने कृपा करके, 'अजायब' को घर पहुँचाया,
हे कृपाल गुरु .....

तुसीं अर्ज सुनो कृपाल गुरु

तुसीं अर्ज सुनो कृपाल गुरु, साडा मन बदियां[1] तों मोड़ देयो, (2)

1. मन सतसंगत विच औंदा नहीं, बदियां करनो शरमौंदा नहीं, (2)
करो तरस जीवां ते दयाल प्रभु, चित्त गुरु चरना विच जोड़ देयो,
तुसीं अर्ज सुनो .....

2. असीं जन्म–जन्म दे रोगी हां, कामी क्रोधी कपटी भोगी हां, (2)
तेरी आत्मा तूं ही संभाल गुरु, साडे मन दा पड़दा तोड़ देयो,
तुसीं अर्ज सुनो .....

3. मन परमार्थ तो डरदा ऐ, छड भजन बहाने करदा ऐ, (2)
कई जन्मां तों है भटक रेहा, करो मेहर मालिक संग जोड़ देयो,
तुसीं अर्ज सुनो .....

4. तेरे फुल्लां दी[2] सुगंधी भौरा प्यार करे, दया मेहर दी सदा इंतजार करे, (2)
गुनाहगार 'अजायब' दी अर्ज सुनो, मन सिमरन दे विच जोड़ देयो,
तुसीं अर्ज सुनो .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. बदियां – बुराईयां 2. फुल्लां दी – फूलों की

तुमसे तुमसे मेरी प्रीत पुरानी

तुमसे, तुमसे मेरी प्रीत पुरानी, हे कृपाल गुरु प्यारे,
प्यारे, हे कृपाल गुरु तुमसे, (2)

1. दरवाजे पर पड़ा हुआ हूँ, हाथ पसारे खड़ा हुआ हूँ, (2)
अखियाँ प्यासी दर्श दिखाओ, दया करो प्रभु पार लगाओ, (2)
दीन बंधु करुणा के सागर, मेरी सुध[1] कैसे बिसरानी,
हे कृपाल गुरु .....

2. कृपा करी सन्त जन तारे, सतगुरु तुमने अधम[2] उभारे, (2)
शिबरी के जूठे फल खाऐ, सब शरणागत कंठ लगाऐ, (2)
तुमने सबके संकट काटे, सबकी पीड़ा जानी,
हे कृपाल गुरु .....

3. हे सतगुरु मैं शरण तुम्हारी, तुम सागर मैं बूंद तुम्हारी, (2)
तुम ही माता–पिता और भ्राता, मैं हूँ याचक तुम हो दाता, (2)
'अजायब' यही जन्मों की गाथा, यही जन्म–जन्म की कहानी,
हे कृपाल गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सुध – खबर 2. अधम – पापी

तूं डाडा बेपरवाह

तूं डाडा[1] बेपरवाह, कुदरतां तेरियां, (2)

1. कुदरत करके बंदा आया, पाँच तत्त[2] दा चोला पाया, (2)
विच चमड़ी दे भरया साह[3],
कुदरतां तेरियां .....

2. घट–घट दे विच वसदैं प्यारे, तेरे दाता चोज़[4] न्यारे, (2)
तूं हैं शाहां दा शाह,
कुदरतां तेरियां .....

3. इस काया विच मंदिर रचया, पड़दा पा के अंदर वसयां, (2)
आपे ही दसदां राह,
कुदरतां तेरियां .....

4. मोह माया तों आण छुड़ावें, नाम जपा के पार लगावें, (2)
पावें सच्चखंड दे राह,
कुदरतां तेरियां .....

5. कुदरत नूं कृपाल ही जाणें, अपनियां रूहां आप पछाणें, (2)
सुणी अर्ज 'अजायब' दी आ,
कुदरतां तेरियां .....

कठिन शब्दों के अर्थः-

1. डाडा – बड़ा 2. तत्त – तत्व 3. साह – साँस 4. चोज़ – तरीका

तेरा सब दुनियां तों सोहणा

तेरा सब दुनियां तों सोहणा है, दरबार गुरु जी, (2)

1. तेरा देख के नूरी मुखड़ा, होवे दूर दिलां दा दुःखड़ा, (2)
जे कोई आवे नाम दा भुखड़ा[1], कीता पार गुरु जी,
तेरा सब दुनियां .....

2. सतसंग लगदा है महावारी, जिसते ढुकदी[2] खलकत[3] भारी, (2)
बनके आए तुसीं उपकारी, विच संसार गुरु जी,
तेरा सब दुनियां .....

3. जेहड़े रमज[4] तेरी नूं जानण, सोई मौज प्रेम दी मानण, (2)
हो गया अंदर ओन्हां दे चानण, बे बहार गुरु जी,
तेरा सब दुनियां .....

4. पाँच शब्द दा सिमरन दस्स के[5], मारे तीर ज्ञान दे कस्स के[6], (2)
सिधा सच्चखंड दा राह दस्स के, हर प्रकार गुरु जी,
तेरा सब दुनियां .....

5. तारे कई जन्मां दे रोगी, कामी क्रोधी कपटी भोगी, (2)
आया दर तेरे ते 'अजायब', करन पुकार गुरु जी,
तेरा सब दुनियां .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. भुखड़ा – भूखा 2. ढुकदी – आती है 3. खलकत – दुनियां 4. रमज – मौज 5. दस्स के – बताकर
6. कस्स के – जोर से

तेरी हरदम याद मना रहे

तेरी हरदम याद, मना रहे, दर्श दिखा जा तूं, (2)
असीं भुज्ज रहे विच, वियोग दे, ठंड वरता जा तूं, (2)

1. दुनियां विच भाम्बड़[1] भख रहे, अग्नि विच जीव हैं मच रहे, (2)
दाता तरस करो जी, आण के, फेरा पा जा तूं,
तेरी हरदम याद .....

2. नाम जपणा कल विच ओखा ऐ, शरणी पै जाणा सोखा ऐ, (2)
बेड़ी[2] अड़ गई विच मझधार दे, बन्ने ला जा[3] तूं,
तेरी हरदम याद .....

3. तैथों विछड़ के औक्खे हो रहे, दिन रातीं दाता रो रहे, (2)
असीं रक्खियां आसां तेरियां, साडी आस पुजा जा[4] तूं,
तेरी हरदम याद .....

4. कृपाल गुरु जी प्यारा है, 'अजायब' नूं ऐहो सहारा है, (2)
दर्शन दी प्यासा लग रही, प्यास बुझा जा तूं,
तेरी हरदम याद .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. भाम्बड़ – आग की लपटें 2. बेड़ी – नाव 3. बन्ने ला जा – किनारे लगा जा 4. पुजा जा – पूरी करना

तेरी कुदरत तूं ही जाणे

तेरी कुदरत तूं ही जाणे, होर ना दूजा जाणेगा,
जिस ते मेहर हो जाए तेरी, तैनूं ओही पछाणेगा, (2)

1. युग–युग दे विच आऐ पहलां, नाम कबीर सदाया ऐ,
कर्मकांड तों ठा के दुनियां, परमार्थ विच लाया ऐ, (2)
दुःख तसीहे[1] झल्ले[2] सारे (2), दस्सया भेद ठिकाणे दा,
जिस ते मेहर .....

2. नानक बण के दुनियां तारी, अंगद नाम धराया है,
अमरदेव गुरु रामदास जी, अर्जुनदेव सदाया है, (2)
गुरु अर्जुन जी लोह ते बैठे (2), शुकर मनाया भांणे[3] दा,
जिस ते मेहर .....

3. हरगोविंद हरिराय साहेब जी, हरि कृष्ण जी प्यारे नें,
सतगुरु तेग बहादुर साहेब, शीश धर्म तों वारे नें, (2)
गुरु गोबिंद सिंह रत्नाकर राव ते (2), कीता मांण निमाणे दा,
जिस ते मेहर .....

4. तुलसी साहब नाम दे रसिऐ, स्वामी जी नूं तार दित्ता,
स्वामी जी ने जयमल सिंह नूं, नाम दे बेड़े चाड़ दित्ता, (2)
जयमल सिंह दा सावन प्यारा (2), दुध चों पानी छांणेगा,
जिस ते मेहर .....

5. सावन सोहणा बाग लगाया, विच बिठाया माली ऐ,
नाम ओहदा कृपाल प्यारा, संगत दा ओह वाली ऐ, (2)
सुणयो अरज गरीब 'अजायब' दी (2), रक्खियो माण निमाणे दा,
जिस ते मेहर .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. तसीहे – तरह तरह के शारीरिक कष्ट देना 2. झल्ले – झेलना 3. भांणे – मौज

तेरी सोच करे कृपाल सोचां क्यों करदैं

तेरी सोच करे कृपाल, सोचां क्यों करदैं, (2)

1. कुल मालिक ओह, सारे जग दा, (2)
ओह है दीन दयाल, सोचां क्यों करदैं .....

2. बिना बंदगी[1] कुछ, सोच ना चल दी, (2)
भावें सोच लईऐ लख वार, सोचां क्यों करदैं .....

3. नीचों ऊँच, करे मेरा गोबिंद, (2)
ओह सुणदा ऐ सबदी पुकार, सोचां क्यों करदैं .....

4. मैं–मैं छड के, तूं–तूं कर लै, (2)
तेरी रखया करे प्रतिपाल, सोचां क्यों करदैं .....

5. विच दरगाह दे, गुरु दा सहारा, (2)
पिच्छे हट जाऐ काल कराल, सोचां क्यों करदैं .....

6. अंदर साफ, जिन्हां दे सच्चे, (2)
ओह हरदम कर दा संभाल, सोचां क्यों करदैं .....

7. सूली दी फिर, सूल[2] बनावे, (2)
मोह माया दा कट दा जंजाल, सोचां क्यों करदैं .....

8. लख शुक्राना, गुरु मेहरबाना, (2)
लया आ के 'अजायब' संभाल, सोचां क्यों करदैं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बंदगी – साधना 2. सूल – कांटा

तेरा नाम ध्याईऐ जी

तेरा नाम ध्याईऐ जी, धन कृपाल गुरु, (2)

1. जमण–मरण दा, दु:खड़ा लगया, (2)
जप नाम हटाईऐ जी, धन कृपाल गुरु .....

2. दर्श बिना दिल, धड़के मेरा, (2)
अक्खां विच समाईऐ जी, धन कृपाल गुरु .....

3. विच दरगाह दे, कोई ना राखा, (2)
तेरा ध्यान बनाईऐ जी, धन कृपाल गुरु .....

4. अमृत सोमा, सतगुरु पूरा, (2)
सच्चा तीर्थ न्हाईऐ जी, धन कृपाल गुरु .....

5. बंद अक्खियां, सानू होया हनेरा[1], (2)
तैथों अक्ख बनाईऐ जी, धन कृपाल गुरु .....

6. तैथों बिना किसे, प्यार ना करया, (2)
यश तेरा ही गाईऐ जी, धन कृपाल गुरु .....

7. फड़या 'अजायब' ने, पल्ला गुरु दा, (2)
चरनी शीश नवाईऐ[2] जी, धन कृपाल गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. हनेरा – अंधेरा 2. नवाईऐ – झुकाईऐ

तेरे नाम दी वैरागण बन के

तेरे नाम दी वैरागण बन के, ढूंढां गली ओ गली, (2)

1. फिरदी दर–दर धक्के खावां, मिल जाए पीया तां गल लांवां (2)
बाज[1] पिया दे तरले पांवां,
ढूंढां गली ओ .....

2. दुःख बिरहों दा वड–वड[2] खावे, दस्स पीया दी कोई न पावे, (2)
तन–मन वारां जे मिल जावे,
ढूंढां गली ओ .....

3. अंदर बाहर दिल नूं टोवां[3], याद करां ते पल–पल रोवां, (2)
हंझुआं[4] वाले हार परोवां,
ढूंढां गली ओ .....

4. गुरु कृपाल मेरे गृह आऐ, सूते दीऐ भाग जगाऐ, (2)
तेरी महिमा कही ना जाऐ,
ढूंढां गली ओ .....

5. सतगुरु तेरियां धन कमाईयां, झड़ियां नाम दिया तैं लाईयां, (2)
रूहां सच्चखंड विच पुचाईयां,
ढूंढां गली ओ .....

6. खेल तेरी कृपाल न्यारी, आऐ हों बण के परउपकारी, (2)
रूह 'अजायब' दी आ ठारी[5],
ढूंढां गली ओ .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बाज – बिना 2. वड वड – काट काटकर 3. टोवां – टटोलना 4. हंझुआं – आँसू 5. ठारी – ठंडा करना

तेरे नाम ने बनाऐ राजे योगी

तेरे नाम ने बनाऐ राजे योगी, जँगलां च हाकां[1] मार दे, (2)

1. उच्चे भाग जिन्हां दे जागे, सच्चा नाम जपण नूं लागे, (2)
डिग्गे[2] दर तेरे ते कामी क्रोधी,
जँगलां च हाकां .....

2. जिसने नाम सच्चे नूं रटया, गेड़[3] चौरासी वाला कटया, (2)
बक्शो आऐ होमैं दे रोगी,
जँगलां च हाकां .....

3. असीं पापी हां औगुणहारे, चल के आऐ तेरे दवारे, (2)
वैद्य बण राजी कर रोगी,
जँगलां च हाकां .....

4. नाम जपण दी रीत चला के, घट–घट विच तूं वसदैं आ के, (2)
राजी करे कपटी ते भोगी,
जँगलां च हाकां .....

5. करो कृपाल जी पूरी इच्छया, 'अजायब' नूं पावो भिच्छिया[4], (2)
बण आया तेरे दर दा योगी,
जँगलां च हाकां .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. हाकां – आवाजें 2. डिग्गे – गिरना 3. गेड़ – चक्कर 4. भिच्छिया – भीख

तेरे प्रेम बावरी कीता

तेरे प्रेम बावरी[1] कीता, हुण कोई पेश[2] ना जांदी ऐ, (2)

1. लोकी कैहंदे प्रेम सुखाला[3], ऐहदा झपट है शेरां वाला, (2)
ऐह तां नाग जहरीला काला, थर–थर रूह घबरांदी ऐ,
तेरे प्रेम बावरी .....

2. तेरा प्रेम हड्डां विच रड़के[4], कदम उठावां तां दिल धड़के, (2)
अंदरों तार प्रेम दी खड़के[5], जिंद पई गोते खांदी ऐ,
तेरे प्रेम बावरी .....

3. तेरी सूरत चँद मिसाल, वाँग चकोरां[6] साडा हाल, (2)
डाडा[7] पाया प्रेम दा जाल, साडी रूह कुरलौंदी[8] ऐ,
तेरे प्रेम बावरी .....

4. सुणयो सतगुरु जी कृपाल, साडा दुःखियां दा की हाल, (2)
बक्शो सतगुरु दीन दयाल, रूह पई वास्ते पौंदी ऐ,
तेरे प्रेम बावरी .....

5. जेहड़ा प्रेम कमौंणा चाहवे, पहलां सिर नूं भेट चढ़ावे, (2)
'अजायब' दर्श पीया दा पावे, बाणी ऐह फरमांदी ऐ,
तेरे प्रेम बावरी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बावरी – पगली 2. पेश – चारा 3. सुखाला – आसान 4. रड़के – चुभना 5. खड़के – बजना
6. वांग चकोर – चकोर की तरह 7. डाडा – बड़ा 8. कुरलौंदी – चीख चीख के रोना

तैनूं वारो वारी आखे मना ओए

तैनूं, वारो वारी आखे, मना ओए वेला बंदगी[1] दा,
ओए वेला बंदगी दा, (2)

1. भुल्लीं ना टिकाणा[2], जित्थे पुट्ठा[3] लटकाया सी,
बंदगी सहारे ओत्थों, गुरु ने छुड़ाया सी, (2)
हुण, लग जा गुरु दे आखे,
मना ओए वेला .....

2. बीत गया वेला, फिर हत्थ नहीं औणा है,
नाम तो बगैर, फिर पए पछतौणा है, (2)
तेरी, ज़िंदगी है पानी च पतासे,
मना ओए वेला .....

3. आया सी परौणा, बह गया मल्ल के[4] टिकाणा ओए,
भुल्ल गया चेत्ता[5], आखिर जिस घर जाणां ओए, (2)
गल्ल, पैणी ना ऐह हासे,
मना ओए वेला .....

4. सच्चे दिल नाल, जो करदा कमाई है,
आखिर वेले गुरु, हुंदा सहाई है, (2)
'अजायब', हो जा कृपाल भरवासे[6],
मना ओए वेला .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बंदगी – भक्ति 2. टिकाणा – ठिकाना 3. पुट्ठा – उल्टा 4. मल्ल के – रोक कर 5. चेत्ता – याद
6. भरवासे – भरोसे

दर्श पिया दा पा लवां

दर्श पिया दा पा लवां, मैं तेरा विछोड़ा ठा लवां[1],
वे मैनूं रात दिने तड़फांदा,
तेरे दर्श बिना जिंद, थोथरी[2] वे मेरा लक्खां दा जीवन जांदा (2)
दर्श पिया दा पा लवां

1. वे विछड़ी ना, वे विछड़ी ना, गुरु सच्चा टोलया[3],
वे ज़िंदगी दा, वे ज़िदंगी दा, मौका जोड़या, (2)
हुण छड के झूठी रीति वे, आ कर लै सच्ची प्रीति वे,
मन अजे बाज नहीं आंदा, तेरे दर्श .....

2. वे मिलया है, वे मिलया है, जामा इंसान दा,
वे जावे ना, वे जावे ना, वेला नाम दा, (2)
ऐह जिंदगी रतन अमोल वे, भा कौडियां दे ना तोल वे,
खट लाहा[4] क्यों शरमांदा, तेरे दर्श .....

3. वे आवीं तूं, वे आवीं तूं, सतसंग कर लै,
वे मौका है, वे मौका है, सच्चा रंग चाढ़ लै, (2)
हुण रब सबब[5] बणाया वे, ऐह सोहणा समां थ्याया[6] वे,
फिर वेला बीत दा जांदा, तेरे दर्श .....

4. वे सन्तां दा, वे सन्तां दा, नाम उच्चा हो गया,
वे जपदा जो, वे जपदा जो, सुच्चा हो गया, (2)
'अजायब' दी देख प्रीति वे, कृपाल ने रक्खया[7] कीती वे,
आ ठंड कलेजे पांदा, तेरे दर्श .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ठा लवां – हटाना	2. थोथरी – खाली	3. टोलया – ढूंढा	4. खट लाहा – फायदा उठाना
5. सबब – मौका	6. थ्याया – मिला है	7. रक्खया – रक्षा	

दाता जी कित्थे गयों

दाता जी, कित्थे गयों, प्रीतमा वे, कित्थे गयों, (2)

1. हत्थीं अपणी बाग सजा के, आपे तूं ऐह बूटे[1] ला के, (2)
नहीं सी छड जांणा सानूं, मालिया वे,
कित्थे गयों .....

2. पता जे हुंदा नाल ही जांदे, काहनूं ऐडे दुःखड़े उठांदे, (2)
जे चिर[2] लौणां सी, रखवालिया वे,
कित्थे गयों .....

3. हुण तां डोले जग दा बेड़ा, बन्ने[3] लावे होर हुण केहड़ा, (2)
तेरे बाजों कौंण बचावे, खुशहालिया वे,
कित्थे गयों .....

4. सुण फरियाद 'अजायब' दी आंवीं, आ के दुःखियां दा दर्द मिटावीं,(2)
सोहणा आ के दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे,
कित्थे गयों .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. बूटे – पौधे 2. चिर – देर 3. बन्ने – किनारे

दिल टुटदे आबाद करे

1. दिल टुटदे आबाद[1] करे, (2)
गुरु कृपाल सोहणे नूं 'अजायब' याद करे, (2)

2. आसां भरे साँस मुक चल्ले, (2)
तेरियां जुदाईयां दे हंझू[2], अक्खियां चों मुक चल्ले, (2)

3. सिफतां[3] तेरियां मैं दस्स दी रवां, (2)
अक्खियां च वस सोहणया, तैनूं हरदम तकदी रवां, (2)

4. साडी जिंदगी संवार देवे, (2)
तेरे जेहा नहीं लब्भणा, पंजां डाकुआं नूं मार देवे, (2)

5. दुनियां खुशियाँ च हसदी ऐ, (2)
तैथों बिना जग सुन्ना, भावें दुनियां पई वसदी ऐ, (2)

6. दे दर्श मन भिन्ना[4] हो जाऐ, (2)
साडे वल तक सोहणया, साडी ज़िंदगी दा बीमा हो जाऐ, (2)

7. सानूं प्यार सिखा जांवीं, (2)
विछड़ियां रूहां नूं, सच्चखंड पुचा जांवीं, (2)

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. आबाद – बसाना 2. हंझू – आंसू 3. सिफतां – प्रशंसा 4. भिन्ना – खुश

8. बुरे दुःख ने जुदाईयां दे, (2)
दिन–रात रोंदी रवां, फिरां वांग सुदाईयां दे[1], (2)

9. दुःख दिल दे फरोलां मैं[2], (2)
तैथों बिना कौंण सुने, घुंडी[3] दिल दी खोलां मैं, (2)

10. असीं अवगुणहारे हां, (2)
दया कर बक्श लवीं, तेरे जीव विचारे हां, (2)

11. मौज अपनी च पा फेरा[4], (2)
होर सब ढाईयां[5] ढेरियां, इक रखया सहारा तेरा, (2)

12. महके फुल्लां दा बाग पया, (2)
खुशियाँ च रोणा पै गया, मेरा लुटया सुहाग गया, (2)

13. प्यार तकड़ी[6] च तुलदा[7] नहीं, (2)
गुरु कृपाल बिना 'अजायब', कौडी दे मुल्ल दा नहीं, (2)

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वांग सुदाईयां दे – पागलों की तरह 2. दुःख दिल दे फरोलां मैं – दिल के दुःख बताना 3. घुंडी – गांठ
4. पा फेरा – फिर से आना 5. ढाईयां – मिटा देना 6. तकड़ी – तराजू 7. तुलदा – तोलना

दिखादे दिखादे दिखादे दाता जी

दिखादे, दिखादे, दिखादे, दाता जी,
तू दर्श दी झलक, दिखा दे दाता जी, (2)

1. चिर[1] दियां दिल विच, लग्गियां तांघां[2],
सीने च वज दियां, बिरहों दियां सांगां[3], (2)
बुझादे, बुझादे, बुझादे, दाता जी
तूं जिंदड़ी दी तपश, बुझादे दाता जी, दिखादे, दिखादे .....

2. प्रेम तेरे विच, पगली होई,
याद तेरी विच, जिंदड़ी खोई, (2)
मिलादे, मिलादे, मिलादे, दाता जी,
सच्चा सतगुरु, आण मिलादे दाता जी, दिखादे, दिखादे .....

3. असीं विछड़े हां, भरमां च आ के,
आप तूं बैठा, सच्चखंड जा के, (2)
हटादे, हटादे, हटादे, दाता जी,
साडे मन उत्तों, पड़दा हटादे दाता जी, दिखादे, दिखादे .....

4. दर्श दिखाओ, कृपाल जी आ के,
'अजायब' नूं ठारो, अमृत प्या के, (2)
पिलादे, पिलादे, पिलादे, दाता जी,
सानूं अमृत नाम, पिलादे दाता जी, दिखादे, दिखादे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. चिर – देर 2. तांघां – चाह 3. सांगां – सुई जैसे तीखी

दुःखां वाली घड़ी बंदे

दुःखां वाली घड़ी बंदे, रखणी तैं याद है,
थोड़ी मुनियाद[1] है जी, थोड़ी मुनियाद है, (2)

1. दुनियां दे धंधेयां च, होया गलतांण[2] तूं,
रखणां सी याद, भुल्ल गया भगवान तूं, (2)
नाम तों बगैर, जिंद होंणी बरबाद है,
थोड़ी मुनियाद है .....

2. मात–पिता बहन–भाई, पास आवे कोई ना,
गुरु तों बगैर, विच दरगाह दे ढोई[3] ना, (2)
पल–पल, छिन–छिन[4], होणा ऐ हिसाब है,
थोड़ी मुनियाद है .....

3. माता दे गर्भ विच, पुट्ठा[5] हो के वसया,
चेत्ता[6] ना भुलावीं, तेरी कीती ओत्थे रखया, (2)
गुरु पैज[7] रखदा ऐ, आद तों जुगाद[8] है,
थोड़ी मुनियाद है .....

4. ऐब साडे माफ करीं, सतगुरु प्यारेया,
बक्शो गुनाह साडे, सावन दातारेया, (2)
सुणयो 'अजायब' दी, ऐह दिली फरियाद है,
थोड़ी मुनियाद है .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. मुनियाद – निश्चित अवधि 2. गलतांण – बुरी तरह फँसना 3. ढोई – सहारा 4. छिन – क्षण
5. पुट्ठा – उलटा 6. चेत्ता – याद 7. पैज – लाज 8. आद तों जुगाद – शुरू से अंत तक

दुनियां दे विच रूहां ते

दुनियां दे विच रूहां ते, सदा नहियों रैहंदियां,
लाहा खट के[1] जाण, भजन जो बैहंदियां, (2)
दुनियां दे विच .....

1. छड के जहान, सबने तुर[2] जाणा,
अपना ऐ घर, हुण होया बेगाना, (2)
अपणा वस जे हुंदा, जुदाईयां काहनूं पैंदियां,
दुनियां दे विच .....

2. हुस्न जवानियां नूं, हर कोई चाहवे,
मत्थे दियां लिखियां, नूं कौन मिटावे, (2)
कर्मां दे अनुसार, ते दुःख–सुख सैहंदियां,
दुनियां दे विच .....

3. जिन्हां ने गुरु उत्तों, तन–मन वारेया,
भाणा[3] मिट्ठा मन के, ते शुकर गुजारेया, (2)
चौरासी दे गेड[4], फेर ना पैंदियां,
दुनियां दे विच .....

4. धन कृपाल, रूहां आण के तैं तारियां,
गरीब 'अजायब' दियां, कटियां बीमारियां, (2)
मंजिल तय कर जाण, जो रस्ते पैंदियां,
दुनियां दे विच .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. लाहा खट के – लाभ उठाकर	2. तुर – चले	3. भाणा – गुरु की इच्छा	4. गेड़ – चक्कर

दुनियां विच प्रीत लगाई

दुनियां विच प्रीत लगाई, मालिक दी याद भुलाई,
तेरी मुनियाद[1] बुलबुला पानी, बई नाम जप बंदया ओऐ
तेरी दो दिन दी ज़िंदगानी, बई[2] जे ना नाम जप्पें गुरु दा,
तेरी होऊ दरगाह विच हानि, (2)

1. करदा ऐं मेरी–मेरी, जिंदगी है खाक ढेरी, (2)
ऐत्थे चलदी, नहीं मनमानी, बई जे ना नाम .....

2. मालिक दे कोलों[3] आया, ओस्से नूं दिलों भुलाया, (2)
भुल्ल गया, अपनी खानदानी, बई जे ना नाम .....

3. हीरे दा वणज[4] थ्याया, कौडी दे भा गंवाया, (2)
लाहा लैण नूं, तूं आया सी प्राणी, बई जे ना नाम .....

4. झूठे हैं भाईचारे, मतलब दे यार प्यारे, (2)
गल्ल कह गए, सन्त स्याणी, बई जे ना नाम .....

5. जाणी है जान अकेली, गुरु बिना कोई ना बेली, (2)
मालिक नूं भुल्ल के, बणे परेशानी, बई जे ना नाम .....

6. होया 'अजायब' नकारा[5] दित्ता कृपाल सहारा, (2)
तर गए, गल्ल गुरु दी जे मानी, बई जे ना नाम .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मुनियाद – निश्चित अवधि 2. बई – भाई 3. कोलों – पास 4. वणज – व्यापार 5. नकारा – बेकार

दीदार कृपाल प्यारे दा

दीदार, दीदार,
दीदार कृपाल प्यारे दा, जो–जो वी बंदा कर जांदा,
छुट्ट जांदा गेड़[1] चौरासी तों, भवसागर पार उतर जांदा, (2)
दीदार, दीदार......

1. जो भजन गुरां दा करदा ऐ, जो मरनो पहलां मरदा ऐ, (2)
ओह मरनो मूल ना डरदा ऐ, दरगाह चों पार उतर जांदा,
छुट्ट जांदा .....

2. मन जन्म–जन्म तों भटक रेहा, ना लग्या किनारे राह विच अटक रेहा, (2)
मिल जाऐ सतगुरु पूरा जे, लग शरण गुरां दी तर जांदा,
छुट्ट जांदा .....

3. आया सोहणा नूर इलाही ऐ, दिलां अंदर धाक[2] बिठाई ऐ, (2)
सोहणे मिठड़े बोल सुणांके ते, रूहां मैलियां नूं उज्जल कर जांदा,
छुट्ट जांदा .....

4. ना लोड़[3] है स्वर्ग नज़ारे दी, ना चाह है तख्त हजारे दी, (2)
'अजायब' लोड़ कृपाल प्यारे दी, दुःखी दिलां नूं राजी कर जांदा,
छुट्ट जांदा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. गेड़ – चक्कर 2. धाक – छाप छोड़ना 3. लोड़ – जरूरत

देख लया असीं देख लया

देख लया असीं देख लया, लाल सावन दा देख लया, (2)

1. राह विच आईयां, जिन्नियां ज्यादा दुशवारियां[1], (2)
ओन्नियां ही, पक गईयां गुरु नाल यारियां, (2)
नाम नाल वी, दिल ला के देख लया,
देख लया असीं .....

2. कई जन्मां विच, लक्खां गुनाह असीं कीते, (2)
भर–भर जहर, प्याले असीं पीते, (2)
तेरी खातिर, मर के जी के देख लया,
देख लया असीं .....

3. गल्लां दिल दियां, दिल विच ही रह गईयां, (2)
मजबूरियां दिल दियां, सब कुछ कह गईयां, (2)
असीं दुनियां तो, मन नूं मोड़ लया,
देख लया असीं .....

4. लक्खां जप–तप, असीं जीवन विच कीते, (2)
धूणियां तपाईयां, नाले जल धारे कीते, (2)
'अजायब' कृपाल सहारे हो के, जमण–मरण नबेड़ लया[2],
देख लया असीं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. दुशवारियां – मुश्किलें 2. नबेड़ लया – खत्म कर लिया

देखी बहुत निराली महिमा सतसंग की

देखी बहुत निराली, महिमा सतसंग की, (2)

1. सतसंग में हैं मोती हीरे, मिलते हैं पर धीरे–धीरे, (2)
जिसने खोज निकाली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

2. सतसंग ही सब संकट टारे, डुबते को सतसंग ही तारे, (2)
सदा रहे खुशहाली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

3. सतसंग उत्तम तीर्थ भाई, करते हैं जो नेक कमाई, (2)
कर्म हीन रहे खाली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

4. सतसंग में सब मिलकर आओ, जीवन अपना सफल बनाओ, (2)
अंत पिटे नहीं ताली, महिमा सतसंग की,
देखी बहुत निराली .....

देजा तू दर्श हुण लाईयां काहनूं देरियां

देजा तू दर्श हुण लाईयां काहनूं[1] देरियां, (2)
दर तेरे ते, आंवांगे जी नारा शाह कृपाल दा, लांवांगे, (2) (2)

1. देजा खां नजारा, आ के सावन दे प्यारेया, (2)
लब्भया ना[2] सानूं, असीं बहुत तैनूं भालया, (2)
पार तेरे ही सहारे, हो जांवांगे,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

2. तुर गयो[3] साईयां, साथों[4] हो के काहनूं दूर जी, (2)
केरां[5] तां दिखा जा, ऐहो सावां[6] जेहा नूर जी, (2)
तेरे बिना होर की, ईलाज बणावांगे,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

3. वांग[7] मंसूर असीं, पक्के हो के खड़ांगे, (2)
तेरे ही विछोड़े विच, सूली उत्ते चढ़ांगे, (2)
तेरे बिना ठोकरां, खांवांगे ,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

4. असीं गुनाहगार बाबा, तैनूं हां पुकार दे, (2)
सारी संगत खड़ी है, विच मझधार दे, (2)
'अजायब' कृपाल बिना, ठोकरां खांवांगे ,
जी नारा शाह कृपाल दा लांवांगे,
देजा तू दर्श .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. काहनूं – किस लिए 2. लब्भया ना – मिला नहीं 3. तुर गयो – चला गया 4. साथों – हमसे
5. केरां – एक बार 6. सांवा – सोहणा 7. वांग – तरह

देजा सहारा कृपाल प्यारे

देजा सहारा, कृपाल प्यारे, ऐस गमां दे सताऐ नूं,
मैनूं ना, ठुकराईं ओ बाबा, दुनियां दे ठुकराऐ नूं, (2), देजा सहारा

1. की दस्सां मेरे सतगुरु तैनूं, नाल जो मेरे होई,
मेरे हाल ते मेरी किस्मत, फुट–फुट के है रोई, (2)
तेरे सिवा इस, गुनाहगार दा, दिस्सदा जग विच होर ना कोई,
देजा सहारा कृपाल.....

2. पत्थर समझ के राह दा मैनूं, सबने ठोकर लाई,
मेरे हाल ते मेरी आत्मा ने, रज्ज के[1] लानत पाई, (2)
अल्लाह राम, रहीम ने सतगुरु, सुणी ना आण के मेरी दुहाई[2],
देजा सहारा कृपाल .....

3. तेरे सिवा किस नूं समझां सतगुरु, हर कोई दिस्से पराया,
तोड़ गया मेरे दिल दा शीशा, जिस नूं मैं अपणा बनाया, (2)
जिस उत्ते मैं, लहू डोलया[3], उसने भी मैनूं ठुकराया,
देजा सहारा कृपाल .....

4. अज जुल्म दी कैद विच बाबा, पलदियां ने तकदीरां,
बेदर्दी काल दे अग्गे, चलदियां ना तदबीरां[4], (2)
तेरे राहा विच, जान वार देयां, खुल दियां जाण ऐह तकदीरां,
देजा सहारा कृपाल .....

5. सार 'अजायब' दी लओ कृपाल जी, जिंद जान तैथों वारां,
मैं पगली नूं तेरा सहारा, इक्क पल कदी ना विसारां, (2)
तेरे बिना मेरा, होर ना कोई, लाज रखो गल लाऐ नूं,
देजा सहारा कृपाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. रज्ज के – बहुत 2. दुहाई – जोर जोर से चिल्लाना 3. लहू डोलया – खून बहाया 4. तदबीरां – दलील

धन कृपाल प्यारेया

धन कृपाल प्यारेया, बेड़े डुबदे पार लगावें, (2)

1. होमैं वाली अग्ग भड़की, सारा जग ही मचदा जावे,
तैथों बिना होर कोई ना, जेहड़ा सड़देयां[1] आण बचावे, (2)
हो के वस्स प्रेम प्यार दे, काल पिंजरे चों आण छुड़ावें,
धन कृपाल प्यारेया .....

2. सिफतां[2] ना होण तेरियां, जा के विच परदेसां दे छाया,
पहाड़ां दियां चोटियां ते, नाम सावन दा चमकाया, (2)
नूर तेरा दिस्से हर थां, सतनाम दा जाप करावें,
धन कृपाल प्यारेया .....

3. जात–पात छूत–छात दे, सब बंधन तोड़े आ के,
सच्चे कुल मालिक नूं, मिलना हैं अंदर जा के, (2)
रूहां विछड़ियां युगां–युगां तो, इक पल विच आण मिलावें,
धन कृपाल प्यारेया .....

4. तेरे हत्थ डोर सब दी, ऐवें साडे ते परदा पाया,
बंदे दा तूं चोला धार के, साथों अपना आप लुकाया[3], (2)
जे हो जाए तेरी मौज मालिका, तोपां चलदियां बंद करावें,
धन कृपाल प्यारेया .....

5. औजड़[4] जांदेयां नूं, दया करके ते रस्ते पावो,
मंगते हां तेरे दर दे, खैर[5] नाम सच्चे दी पावो, (2)
हो गया 'अजायब' आपदा, कृपाल गुरु जी चरनी लावें,
धन कृपाल प्यारेया .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सड़देयां – जलते हुए 2. सिफतां – तारीफ 3. लुकाया – छुपाना 4. औजड़ – भटके हुए
5. खैर – भीख

नहीं लब्भणा मानस जन्म बहार

नहीं लब्भणा, मानस जन्म बहार, मुड़के[1] नहीं लब्भणा, (2)

1. वैदा[2] करके भुल्ल गया चेत्ता[3], मुश्किल हो गया देणा लेखा, (2)
विसर गया करतार[4],
मुड़के नहीं लब्भणा .....

2. गुरु चरणां विच प्रीत लगा लै, जमण–मरणां रीत मुका लै[5], (2)
रैहंदा क्यों फरार,
मुड़के नहीं लब्भणा .....

3. अक्खियाँ खोल के देख नजारा, अंदर बैठा मालिक प्यारा, (2)
उठ के होश संभाल,
मुड़के नहीं लब्भणा .....

4. बीतेया वेला[6] हत्थ ना आवे, 'अजायब' नूं कृपाल सुणावे, (2)
चढ़ बेड़े हो जा पार,
मुड़के नहीं लब्भणा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मुड़के – दुबारा 2. वैदा – वायदा 3. चेत्ता – याद 4. करतार – परमात्मा
5. मुका लै – खत्म कर ले 6. वेला – समय

नाम की महिमा अपरम्पार

नाम की महिमा अपरम्पार, जावां सतगुरु के बलिहार, (2)

1. पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,
जिसके मन मंदिर में रहते, सतगुरु जी हमेश, (2)
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार,
नाम की महिमा .....

2. नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला,
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरा जहर प्याला, (2)
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार,
नाम की महिमा .....

3. प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया, (2)
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार,
नाम की महिमा .....

4. नाम की महिमा नाम ही जाने, यां जिस नाम ध्याया,
'अजायब' कृपाल के चरनी लग के, कोटि–कोटि यश गाया, (2)
जो भी द्वारे आया गुर के, उसका बेड़ा पार,
नाम की महिमा .....

नाम गुरु दा जप लै

नाम गुरु दा जप लै, कुछ खट्ट के[1] लै जा, (2)

1. आया हत्थ लाल कित्ते, मिट्टी च ना रुल[2] जाए,
जगत सरां विच, रस्ता ना भुल्ल जाए, (2)
लब्भ[3] गुरु नूं, चौरासी गेड़[4] कट्ट लै,
कुछ खट्ट के .....

2. ऐब सारे छड के ते, मन समझा लवीं,
प्रेम ते प्यार विच, श्रद्धा बणा लवीं, (2)
दिल सिमरन दे विच रट्ट लै,
कुछ खट्ट के .....

3. सच्चे रब ताईं, बंदे कर लै तूं याद वे,
मिट्टी देया भांडेया[5], की तेरी मुनियाद वे, (2)
पूंजी नाम सच्चे दी वट्ट लै[6],
कुछ खट्ट के .....

4. हो के दयाल कृपाल, फेरा पा जावे,
थुड़[7] ना कोई रहे, जित्थे गुरु सच्चा आ जावे, (2)
'अजायब' दिन नींवे[8] हो कट्ट लै,
कुछ खट्ट के .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. खट्ट के – कमा के 2. रुल – गुम हो जाना 3. लब्भ – ढूंढना 4. गेड़ – चक्कर 5. भांडेया – बर्तन
6. वट्ट लै – कमा ले 7. थुड़ – कमी 8. नींवे – नीचा

नाम जप क्यों लौना ऐ देरी

नाम जप क्यों लौना ऐ देरी, हत्थ आया समां ऐवें तूं गवावीं[1] ना, (2)

1. नाम तो बगैर दस्स, पार किवें होवेंगा,
बीत गया समां फेर, कर्मां नूं रोवेंगा, (2)
मानस जामा, मिली ज़िंदगी उच्चेरी[2],
हत्थ आया समां .....

2. तैनूं पुट्ठा[3] लटकाया, दुःख दर्द भुलावीं ना,
आया हत्थ लाल तेरे, मिट्टी च रुलावीं[4] ना, (2)
छड दे माण, ना कर मेरी–मेरी,
हत्थ आया समां .....

3. मान वडयाई सब, कूड़[5] पसारा है,
सुपने दी न्याईं[6] ऐहे, जगत नजारा है, (2)
नेड़े[7] आ गई, मौत हनेरी[8],
हत्थ आया समां .....

4. चंद रोज दी परौणी[9] ऐहे, जिंदड़ी निमाणी ऐ,
ऐहदी मुनियाद इक्क, बुलबुला पानी ऐ, (2)
'अजायब' होई कृपाल दी चेरी[10],
हत्थ आया समां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. गवावीं – गँवाना 2. उच्चेरी – ऊँची 3. पुट्ठा – उल्टा 4. रुलावीं – मिलाना 5. कूड़ – झूठ
6. न्याईं – तरह 7. नेड़े – पास 8. हनेरी – आंधी 9. परौणी – मेहमान 10. चेरी – शिष्या

नाम जप बंदेया

नाम जप बंदेया, लाहा खट[1] बंदेया,
बंदगी बिना होर सहारा ना, बिना बंदगी[2] कोई चारा ना, (2)

1. रंग ते तमाशे, कुछ दिना लई रैहणगे,
कीते होऐ कर्मां दे, दुःख सहणें पैणगे, (2)
अड़ी छड अड़या[3], रस्ते लग्ग अड़या, कित्ते मिल जाऐ दण्ड करारा[4] ना,
बिना बंदगी कोई .....

2. सच्चा गुरु लब्भ, जिंद यमां तो छडौणी जे,
सदा नाम जप, जिंद रब लेखे लौंणी जे, (2)
हुण मौका ऐ, कम सौक्खा ऐ, होर पाऐ जे काल पवाड़ा[5] ना,
बिना बंदगी कोई .....

3. घट–घट विच बैह के[6], कर दा संभाल ओह,
रीझदा[7] ना कदे गल्लां, बहुतियां नाल ओह, (2)
होमैं कढ़णी पवे, दुनियां छडणी पवे, झूठ लालच रहे विचारा ना,
बिना बंदगी कोई .....

4. सच्ची जे तड़फ, सच्चा मुर्शिद आवे,
काल पावर दी, कोई पेश ना जावे, (2)
'अजायब' दुःख सैहंदा,किवें सुख लैंदा, जे कर मिलदा कृपाल प्यारा ना,
बिना बंदगी कोई .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. लाहा खट – लाभ उठाना 2. बंदगी – भक्ति 3. अड़या – जिद्दी यार 4. दण्ड करारा – भारी सजा
5. पवाड़ा – बिना मतलब की अड़चन 6. बैह के – बैठ के 7. रीझदा – खुश होना

नाम तों बगैर बंदा नहीं किसे कम्म दा

नाम तों बगैर बंदा, नहीं किसे कम्म दा,
ज़िंदगी है तेरी ना, भरोसा इक दम दा, (2) नाम तों बगैर बंदा

1. नाम तों बगैर, बेकार जिंदगानी ओऐ,
धारया नां गुरु की, कम इंसानी ओऐ, (2)
मिट्टी देया भांडेया[1] ओऐ, माण[2] विच आवीं ना,
गिनती दे साह लब्भे, ऐवें ही गवांवीं[3] ना, (2)
नाम बिना सक्खणां[4] ऐ, थैला इक्क चम्म दा[5], ज़िंदगी है तेरी .....

2. कई वार पुट्ठा[6] तैनूं, गर्भां च टंगेया,
नाम नूं भुलाके ओऐ तूं, अजे वी ना संगेया[7], (2)
बेगुरेयां दी खल्ल[8] पुट्ठी काल लौहंदा ऐ,
भोग लै चौरासी, विच नरकां दे पौंदा ऐ, (2)
नाम जपने नूं दिल, अजे वी ना मनदा, ज़िंदगी है तेरी .....

3. बुलबुला पानी दा, नहीं दम दा वसा ओऐ,
हीरा हत्थ आया जावे, कौडियां दे भा ओऐ, (2)
गुरु तो बगैर, बेगुरां दुःख पावेंगा,
नाम सच्चे बिना, धक्के दरगाह च खावेंगा, (2)
अजे वी है वेला बंदे, क्यों नहीं मनदा, ज़िंदगी है तेरी .....

4. सतसंग गुरु सच्चा, नाम प्यारा है,
दरगाह दे विच अंत, ऐसे दा सहारा है, (2)
गुरु दे बचन उत्ते, जो सिक्ख चलदा,
सच्चखंड वाला दरवाजा, ओह मल्ल दा[9], (2)
बिना कृपाल ना, 'अजायब' किसे कम्म दा, ज़िंदगी है तेरी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. भांडेया – बरतन 2. माण – अहंकार 3. गवावीं – गंवाना 4. सक्खणा – खाली 5. चम्म दा – चमड़े का
6. पुट्ठा– उलटा 7. संगया – शर्माना 8. खल्ल – चमड़ी 9. मल्ल दा – कब्जा करना

नाम साहेब दा चंबे दी बूटी

नाम साहेब दा चंबे दी बूटी (2)
सतगुरु मन मेरे विच लाई प्यारेयो (2)
सतसंग दा नित पानी दे के (2)
कर लई दूण[1] सवाई[2] प्यारेयो (2)
अंदर बूटी महक मचाया (2)
जां फुल्लण ते आई प्यारेयो (2)
जीवे कृपाल सोहणा सतगुरु (2)
जिन ऐह बूटी लाई प्यारेयो (2)
कृपाल सिंह नूं सिमर के पापी तरे अनेक (2)
कहे 'अजायब' ना छोड़िए, कृपाल सिंह दी टेक (2)

सुण फरियाद पीरां देया पीरा (2)
इक आख[3] सुणावां तैनूं प्यारेया (2)
तेरे जेहा मैनूं इक्क वी नीं मिलणा (2)
मेरे जेहियां तैनूं लक्खीं प्यारेया (2)
फोल ना कागज बदियां वाले (2)
दर तो धक्कीं ना मैनूं प्यारेया (2)
जे मेरे विच ऐब गुनाह ना हुंदे (2)
तूं बक्शींदा कीहनूं प्यारेया (2)
तिल–तिल दा अपराधी तेरा (2)
रत्ती–रत्ती दा मैं चोर प्यारेया (2)

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. दूण – दुगनी 2. सवाई – सवा 3. आख – बोलकर

पल–पल दा मैं गुन्हीं भरया (2)
बक्शीं अवगुण मेरे प्यारेया (2)

किसे काम का थे नहीं कोई ना कौडी दे (2)
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह (2)
दूसर का बालक होता भक्ति बिना कंगाल (2)
कृपाल गुरु कृपा करी हर धन दे कियो निहाल (2)
गद–गद् बानी कंठ में आंसू टपके नैन (2)
वो तो बिरहन कृपाल की तड़पत है दिन–रैन (2)
हाय–हाय कृपाल कद मिले छाती फाटी जाऐ (2)
ऐसा दिन कद होवेगा दर्शन करुं अघाये[1] (2)
बिन दर्शन कल ना पड़े मनुआ धरत ना धीर (2)
'अजायब' गुरु कृपाल बिना कौन भ्नावे धीर (2)

तुध अग्गे अरदास हमारी (2)
जियों पिंड सब तेरा प्यारेया (2)
कहे नानक सब तेरी वडयाई (2)
कोई नाम न जाणे मेरा प्यारेया (2)
तेरा कीता मैं जातो नाहीं (2)
मैनूं जोग कीतोई[2] प्यारेया (2)
मैं निर्गुणहारे कोई गुण नाहीं (2)
आपे तरस पेयोई[3] प्यारेया (2)
तरस पया मैं रहमत होई (2)
सतगुरु साजन मिलया प्यारेया (2)
नानक नाम मिले तां जीवां (2)
तन मन थीवै हरेया प्यारेया (2)

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. अघाये – दिल भरकर 2. कीतोई – करना 3. तरस पेयोई – तरस आना

पक्क जा ओ सिक्खा

पक्क जा ओ सिक्खा, सच्चे गुरु दे प्यार विच, (2)

1. दिल च सफाई रखीं, श्रद्धा बनाई रखीं, (2)
मुक जे चौरासी, सच्चे गुरु दे दीदार विच,
पक्क जा ओ .....

2. आया लाहा लैण[1], लाहा खट्ट लै तू बंदेया ओऐ, (2)
मुक्ति है सिक्खा, सच्चे नाम दे व्यापार विच,
पक्क जा ओ .....

3. दुनियां दे झगड़े तूं, दिल च वसाईं ना, (2)
सच्चा सुच्चा हो के, मिल जावीं सच्चे यार विच,
पक्क जा ओ .....

4. अट्ठों पहर सिमरन, करी जावीं दिल विच, (2)
जोड़ लवीं सुरती नूं, अमृत धार विच,
पक्क जा ओ .....

5. दे दवो दर्श कृपाल जी, 'अजायब' ताईं, (2)
जोड़ देयो मन साडा, अंदर ली तार विच,
पक्क जा ओ .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. लाहा लैण – फायदा उठाना

पानी देया बुलबलया दस्स की मुनियाद है तेरी

पानी देया बुलबुलया, दस्स की मुनियाद है तेरी, (2)

1. बैठ नहीं रहना सदा, ऐत्थे कोई रोज दा है मेला,
उम्र विहाई[1] जांवदी ओऐ, तेरा नाम जपने दा वेला, (2)
ऐवें मनां फुल्लया फिरे, कच्ची कंध[2] तूं रेत दी ढेरी,
पानी देया बुलबुलया .....

2. वड्डे–वड्डे हो गुजरे, इस जगत सरां विच रह के,
ऐवें ना गवा लंई ज़िंदगी ओऐ, लाहा खट्ट गुरु शरणी पै के, (2)
मुर्शिद बाज बंदेया ओऐ, बादशाहियां मिट्टी दी ढेरी,
पानी देया बुलबुलया .....

3. नदी कंडे[3] रुखड़ा ओऐ, ढाह[4] इक्क दिन है लग जाणी,
सिर उत्ते काल कूकदा, समां आऐ तो आवाज वज जाणी, (2)
भागां नाल मिली मानस देही ओऐ, नाम जप क्यों लौनां ऐं देरी,
पानी देया बुलबुलया .....

4. इक्क दिन छडणा ओऐ, ऐहे सोहणा देश रंगीला,
लेखा होणा सजणा ओऐ, बाज गुरु दे ना कोई वसीला, (2)
कूच दा नगारा वजया ओऐ, नेड़े आ गई मौत हनेरी,
पानी देया बुलबुलया .....

5. सारा संसार दुःखिया ओऐ, कोई सुखिया नज़र ना आया,
नाम दारु रोगां दा, गुरु नानक जी फरमाया, (2)
कृपाल कंत[5] सोहणया वे, हुण बण गई 'अजायबो' तेरी,
पानी देया बुलबुलया .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. विहाई – बिताई 2. कंध – दीवार 3. कंडे – किनारे 4. ढाह – गिरना 5. कंत – पति

पीर दा विछोड़ा दुःख जिंद मेरी सैहंदी ना

पीर दा विछोड़ा दुःख, जिंद मेरी सैहंदी ना,
सतगुरु नूं देख–देख, भुख मेरी लैहंदी[1] ना, (2)
पीर दा विछोड़ा

1. जिस तन लागे, सोई तन पाई,
होर कौन जाने, पीर पराई, (2)
बण गईयां जिंद मेरी ते, जिंदड़ी हुण रैहंदी ना, सतगुरु नूं .....

2. खुशियां दी खेती उजड़ी, गमियां सिर पै गईयां,
दिल दियां मेरियां सद्धरां[2], दिल विच ही रह गईयां, (2)
खुशियां दे ढहे मुनारे, सुख दा साह लैंदी ना, सतगुरु नूं .....

3. वड–वड[3] के खांदा अंदरों, दुःखड़ा प्रीत दा,
घड़ी दा विछोड़ा, चार युगां जेहा बीत दा, (2)
साईं है सिर ते जिहदा, मुश्किल ओहनूं पैंदी ना, सतगुरु नूं .....

4. सुक्खां विच सारी दुनियां, नेड़े हो बैहंदी ऐ,
भीड़[4] पई तों कोई, सार ना लैंदी ऐ, (2)
सतगुरु दे बाजों सजणा, पूरी कदे पैंदी ना, सतगुरु नूं .....

5. धन कृपाल धन, तेरी कमाई ऐ,
दुःखिए 'अजायब' दी तैं, दर्द मिटाई ऐ, (2)
धक्के मैं दर–दर खांदी, जे शरण तेरी पैंदी ना, सतगुरु नूं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. लैहंदी – उतरती 2. सद्धरां – दिल के चाव 3. वड वड के – काट काटकर 4. भीड़ – मुश्किल

फिर याद सावन दी आई नीं

फिर याद सावन दी, आई नीं, (2)

1. इस प्यार दी कल्लर, धरती[1] उत्ते, हंझुआं झड़ियां[2], लाईयां नीं, (2)
सावन भादों घिर–घिर आए, ऐ पर धरत, तिहाई[3] नीं,
फिर याद सावन .....

2. घुट्टां–वट्टी[4], मैं पी जावां, चुप दे ज़हर, प्याले नूं, (2)
पर ऐहे व्योह[5] वी, जीवन दानण, सुलगण नूं अग्ग, लाई नीं,
फिर याद सावन .....

3. दिल दी हनेर[6], कोठड़ी अंदर, इक्क दीवा पया, भरया नीं, (2)
उस हत्थ दी, पछाण ना आई, जिसने तीली, लाई नीं,
फिर याद सावन .....

4. जिस राह उत्तों, सोहणा लंघया, मैं खड़ी उडीकां[7], ओत्थे नीं, (2)
जेठ–हाड़, सिर उत्तों लंघे[8], फेरी ना उस, पाई नीं,
फिर याद सावन .....

5. 'अजायब' ते अन्ना[9], बुत्तघाड़ा[10] है, जिस रचना अपनी, वेखी नी, (2)
तक–तक जिस दे, रोम–रोम नूं, रो पई कुल, लुकाई[11] नीं,
फिर याद सावन .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. कल्लर धरती – बंजर भूमि 2. हंझुआं झड़ियां – बारिश की तरह आंसू गिरना 3. तिहाई–प्यासी
4. घुट्टा वट्टी – घूंट घूंट करके 5. व्योह – जहर 6. हनेर – अंधेर 7. उडीकां – इंतजार 8. लंघे – बीतना
9. अन्ना – अंधा 10. बुत्तघाड़ा – मूर्तिकार 11. कुल लुकाई – सारी दुनियां

बक्शो बक्शन हार पीया जी

बक्शो[1] बक्शन हार पीया जी, बक्शो दीन दयाल पीया, (2)

1. असीं पापी हां जीव नकारे, तुसीं बक्शिंद हों दीनदयारे, (2)
फिरदे हां असीं दर–दर मारे, तरस करो कृपाल पीया जी,
बक्शो बक्शन हार .....

2. हंगतां होमैं दा रोग मिटावो, काल दे जाल चों आन छुड़ावो, (2)
मूर्ख नूं दे मत समझाओ, रूहां नूं संभाल पीया जी,
बक्शो बक्शन हार .....

3. तेरा–तेरा मैं सदा ही पुकारां, बेनती करां ते अर्ज गुजारां, (2)
दिल तों पीया जी कदी ना विसारां, समरथ प्रभु प्रतिपाल पीया जी,
बक्शो बक्शन हार .....

4. दुनियां दे सब छड के सहारे, आ के 'अजायब' तेरे डिग्गया दवारे, (2)
माफ करो जी अवगुण सारे, अर्ज सुनो कृपाल पीया जी,
बक्शो बक्शन हार .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बक्शो – माफ करो

बदियां तों बच सजणा

बदियां तों बच सजणा, बदियां[1] तों बच सजणा, (2)
जे तूं लब्भणा ऐं प्रीतम प्यारा, बदियां तों बच सजणा,
बदियां तों बच सजणा,

1. नाम तों बगैर सजणा, तेरे नाल कोई ना जावे,
पूरे सतगुरु तों बिना, विच दरगाह दे कौन छुड़ावे, (2)
बण के वकील झगड़े, ओ हो, बण के वकील झगड़े,
रूहां अपणियां, आप छुड़ावे, बदियां तो बच सजणा,
नरकां तों बचणा जे, सतगुरु दा नाम जप लै,
तेरा हो जाऐ बेड़ा पार, नाम जप लै,
तैनूं हो जाऐ सतगुरु दा दीदार, नाम जप लै, बदियां तों .....

2. पिछलेयां कर्मां दे, भैणां–भाई ते माँ–प्यो सारे,
कट्ठे हो गए[2] रल मिल के, रिश्तेदार ते भाईचारे, (2)
सन्तां दे दर डिग्ग[3] पै, तूं, सन्तां दे दर डिग्ग पै,
नहीं तां माया ने जाल विछाया, बदियां तों बच सजणा,
मिलणा जे मालिक नूं, मिलणा जे मालिक नूं,
काम क्रोध लोभ मोह छुड़ा के, काम क्रोध लोभ मोह छुड़ा के,
होमैं हंगता मारी वे मिलणा जे, मिलणा जे मालिक नूं, बदियां तों .....

3. रचना रचाई दातेया, तेरा अंत किसे ना पाया, (2)
गौंण तैनूं देवी–देवते, तेरा यश वेदां ने गाया,
आया कृपाल चल के, जी, आया कृपाल चल के,
नाम दे के 'अजायब' समझाया, बदियां तों .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बदियां – बुराईयां 2. कट्ठे हो गए – साथ हो गए 3. डिग्ग – गिरना

बण के रूहां दा व्यापारी आया

बण के, रूहां दा व्यापारी आया, सावन सच्चखंड दा, (2)

1. गुरु नानक दी सिक्खया[1] भुल्ल गए, (2)
साडा गुरु नाल मेल कराया, सावन सच्चखंड दा, बण के .....

2. गुरु पीर छडे मड़ियां[2] पूजन लग पए, (2)
आ के सावन ने समझाया, सावन सच्चखंड दा, बण के .....

3. गुरु बिना बंदा जमदा–मरदा, (2)
बाणी विच गुरु जी ने फरमाया, सावन सच्चखंड दा, बण के .....

4. रूह साडी मैली पापां करके, (2)
सच्चे नाम दा साबुन लाया, सावन सच्चखंड दा, बण के .....

5. बंदगी[3] करदेयां पिंजरा सुक जाए, (2)
सुत्ते होयां रब किसे वी ना पाया, सावन सच्चखंड दा, बण के .....

6. घट–घट विच बैह के[4], सबनूं देखे, (2)
ओह भुल्लदा ना किसे दा भुलाया, सावन सच्चखंड दा, बण के .....

7. लगया सी रोग, 'अजायब' नूं चिर दा[5], (2)
दारु नाम दा दे के ठाया[6], सावन सच्चखंड दा, बण के .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सिक्खया – शिक्षा 2. मड़ियां – कब्र 3. बंदगी – भक्ति 4. बैह के – बैठकर 5. चिर दा – देर से
6. ठाया – हटाया

बंदा नाम जपणे नूं आया

बंदा नाम जपणें नूं आया, माया ने जंजाल पा लया, (2)

1. धीयां–पुत्र कुटुम्ब प्यारा,
नाम बिना कोई देवे ना सहारा, (2)
विच विषयां दे काल ने पसाया,
माया ने जंजाल .....

2. सन्तां दी सतसंगत कर लै,
पल्ला पूरे गुरु दा फड़ लै, (2)
भाग उच्चे जामा मानस थ्याया[1],
माया ने जंजाल .....

3. मात गर्भ विच पुट्ठा[2] हो के लटके,
गुरु तो बगैर बंदा दर–दर भटके, (2)
वेला बीतया कदी ना हत्थ आया,
माया ने जंजाल .....

4. आखिर सतगुरु ने कम औंणा,
बाज गुरु दे है पछतौंणा, (2)
छड बंदगी तैं रब नूं भुलाया,
माया ने जंजाल .....

5. कूड़[3] पसारा बंदे सच लया जाण ओऐ,
चंद रोज मेला आखिर छडणा जहान ओऐ, (2)
'अजायब' डुबदा कृपाल ने बचाया,
माया ने जंजाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. थ्याया – मिलना 2. पुट्ठा – उलटा 3. कूड़ – झूठ

बंदे दियां आसां सदा हुंदियां नां पूरियां

बंदे दियां आसां सदा, हुंदियां नां पूरियां,
नाम तों बगैर सभ्भे, रहंदियां अधूरियां, (2)
बंदे दियां आसां सदा

1. कदे दुःख कदे सुख, जीव उत्ते औंदा ऐ,
आप कीते कर्मां नूं, आपे भुगतौंदा ऐ, (2)
लोक–लाज विच फस, होईयां मजबूरियां, नाम तों बगैर .....

2. आया नाम जपणें नूं, माया जाल पा लया,
दाते नूं विसार, दात्तां विच चित्त ला लया, (2)
गुरु तों बगैर कदे, पैंदियां नां पूरियां, नाम तों बगैर .....

3. बण के परौणां, थोड़े दिनां लई आया सैं,
भुल्ल गया घर, चित्त ऐत्थे ही लगाया तैं, (2)
धीयां[1]–पुत्रां विच अड़या[2], पौंदा ऐ भसूड़ियां[3], नाम तों बगैर .....

4. मान वडयाई जग, विच छड जाणी है,
खाली हत्थ झाड़, तुर चलया प्राणी है, (2)
सच्चे नाम बिना, चढ़ गईयां मगरूरियां, नाम तों बगैर .....

5. लख पातशाहियां, लक्खां लश्कर कूड़े ने,
गुरु तों बगैर, सब काज अधूरे ने, (2)
'अजायब' कृपाल बिना, पैंदियां ना पूरियां, नाम तों बगैर .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. धीयां – बेटियाँ 2. अड़या – जिद्दी यार 3. भसूड़ियां – मुश्किलें

बंदे नाम गुरु दा जप लै

बंदे नाम गुरु दा जप लै, इक दिन सोवन आऐगो, (2)

1. कबीर सुत्ता क्या करे, उठके ना जपे मुरार[1], (2)
इक दिन सोवन आऐगो, लंबे गोड[2] पसार,
इक दिन सोवन .....

2. उमर बीत गई सुत्तेयां सारी, अजे जाग ना आई, (2)
आखिर नूं पछतावेंगा, यम चोट नगारे लाई,
इक दिन सोवन .....

3. नाम जपण दा भुल्ल गया चेत्ता[3], जाल काल ने पाया, (2)
विषयां दे विच मस्त हो गया, माया ने भरमाया,
इक दिन सोवन .....

4. वेला हत्थ ना औंणा मुड़ के, सतगुरु ने समझाया,
उच्चे भाग जाग पऐ तेरे, मानस जन्म थ्याया[4], (2)
इक दिन सोवन .....

5. विच दरगाह दे सतगुरु बाजों, बात ना पुछदा कोई, (2)
'अजायब' कृपाल बिना जी, मिली किते ना ढोई[5],
इक दिन सोवन .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मुरार – ईश्वर	2. गोड – टांगें	3. चेत्ता – याद	4. थ्याया – मिला	5. ढोई – सहारा

बंदा बण के आया रब बंदा बण के आया

बंदा बण के आया, रब बंदा बण के आया, (2)
आ के जग जगाया, रब बंदा बण के आया, (1)

1. जन्म–जन्म दी रूहां सी अटकी,
लख–लख कोहां[1] रही सी भटकी, (2)
आपे मेल कराया, रब बंदा बण के .....

2. लख–लख पापी आए दवारे,
एक नज़र से ओहने तारे, (2)
बेड़ा पार लगाया, रब बंदा बण के .....

3. दया मेहर जिन्हां ने पाई,
आण मिले ना देर लगाई, (2)
भेद ओन्हां ने पाया, रब बंदा बण के .....

4. सतसंग में ऐह होका[2] लाया,
बंदे तूं क्यों जग में आया, (2)
प्रेम दा राह बताया, रब बंदा बण के .....

5. सिमरन भजन दी राह बताई,
कर्म दिए सारे छुड़वाई, (2)
नाम दा जाप कराया, रब बंदा बण के .....

6. 'अजायब' कहे करो नाम कमाई,
कृपाल होए आपे प्रभु आई, (2)
सच्चा सुख वरताया, रब बंदा बण के ....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. कोहां – कोस 2. होका – आवाज

बैठा घट-घट विच दातार वे

बैठा घट–घट विच दातार वे, कर मालिक नाल प्यार वे, (2)

1. सारी खलकत[1] विच ओहदा नूर है, रैहंदा नेड़े ना ओह दूर है, (2)
कर श्रद्धा हो जा पार वे,
कर मालिक नाल .....

2. ना विच मसीतां[2] दे लब्भदा, करी जाईऐ नित भावें सजदा, (2)
अंदर वड़ के झाती[3] मार वे,
कर मालिक नाल .....

3. ना जंगलां विच जा टोल[4] वे, दाता वसदा तेरे कोल वे, (2)
रूह दी जोड़ लै शब्द नाल तार वे,
कर मालिक नाल .....

4. 'अजायब' लब्भ जाऐ कृपाल जे, दया कर देवे मालोमाल जे, (2)
गुरु सच्चे नूं पल ना विसार वे,
कर मालिक नाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. खलकत – दुनियां 2. मसीतां – मस्जिदें 3. झाती – अंदर देखना 4. टोल – ढूंढना

बिना नाम दे जपे ना शांति आवे

1. बिना नाम दे जपे ना शांति आवे,
कृपाल गुरु दा सच्चा फरमान होया,

2. शरण आऐ बिना सच्चे वैद्य संगी,
रोग किसे दा दूर ना जान होया,

3. नरक अग्ग चों बचे ना ओह पापी,
गुरु वल ना जिस दा ध्यान होया,

4. एक प्रभु प्रीत नूं पालना न्यौं[1] चलना,
वंड छकणा[2] गुरु फरमान होया,

5. काम क्रोध ते लोभ नूं पिठ दे के,
दया सत संतोख जे रख सैं तूं,

6. 'अजायब' रोग मिटसन जन्मां सारेयां दे,
कृपाल गुरु सच्चा वैद्य जप सैं तूं,

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. न्यौं – नीचे 2. वंड छकणा – बांटकर खाना

भावें जाण ना जाण

भावें जाण ना जाण वे, वेहड़े[1] आ वड़[2] मेरे,
मैं तेरे कुर्बान वे, वेहड़े आ वड़ मेरे, (2)

1. तेरे जेहा मैंनू होर ना कोई, ढूंढा जंगल बेला रोही[3], (2)
ढूंढा तां सारा जहान वे, वेहड़े आ वड़ .....

2. मापे–ओहनूं कैहंदे पाल, लोकी कैहंदे सन्त कृपाल, (2)
साडा तां दीन–ईमान वे, वेहड़े आ वड़ .....

3. मापे[4] छोड़ लग्गी लड़ तेरे, शाह कृपाल साईं मेरे, (2)
लाईयां दी लज्ज पाल वे, वेहड़े आ वड़ .....

4. ढूंड शहर सब भालया, कामद घल्लां[5] केहड़ा,
चढ़ी तां डोली प्रेम दी, दिल धड़के मेरा, (2)
ओ कृपाल साईयां हत्थ पकड़ी मेरा,
भावें जाण.....

5. दर्शन तेरा दरकार[6] असां नूं हर वेले हर हीले,
सच्चा शाह कृपाल साहिब मेरे खास वसीले, (2)
गरीब 'अजायब' नूं मिले कृपाल प्यारा,
भावें जाण.....

6. कृपाल सिंह नूं सिमर के पापी तरे अनेक,
कहे 'अजायब' ना छोड़िऐ कृपाल सिंह दी टेक,
भावें जाण.....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वेहड़े – आँगन 2. वड़ – आना 3. रोही – उजाड़ 4. मापे – माता–पिता 5. कामद घल्लां–शंदेशची भेजना
6. दरकार – जरूरत

भुल्लीं नां गुरां दे उपकार सजणा

भुल्लीं नां गुरां दे उपकार सजणा, ओ तेरी रक्खया करे,
आखदे[1] मनां ओए तेरे दिल नूं, कदी तां नाम जपया करे, (2) (2)

1. झूठयां विकारां विच, दिल नूं फसाईं नां,
याद सच्चे रब दी तूं, दिल तों भुलाईं नां, (2)
कर लै मनां ओए साफ दिल नूं, प्रभु जी आ के वसया करें,
आखदे मनां ओए....

2. नाम दे सहारे, विच पेट दे सी पलया,
लिव[2] लग्गी नाम दी, ज़रा वी नां तूं गलया, (2)
दरगाह दे विच सच्चा नाम, सजणा ओए तेरी रक्खया करे,
आखदे मनां ओए .....

3. जगत समुंद्र है, दिसदा अथाह ओए,
गुरु बेड़ी बिना, कोई लब्भणा नां राह ओए, (2)
कर सत संगत सच्चाई, दिन–रात तैनूं दस्सया करे,
आखदे मनां ओए .....

4. गुरु कृपाल जी, 'अजायब' नूं बचा लवो,
सेवक नूं मत[3] दे के, चरनां च ला लवो, (2)
गुरु दा बचन कट फासियां, दिलां दे विच वसया करे,
आखदे मनां ओए .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. आखदे – बता दे 2. लिव – लगन 3. मत – समझ

मन जदों हठीला होवे

मन जदों हठीला[1] होवे, तां बदियां वल्लों[2] मोड़ लयो,
जे अजे बाज नां आवे, तां गुरु चरणां विच जोड़ दयो, (2)

1. आया बंदे तरन दा वेला, लगयां ऐं तूं करन कवेला[3], (2)
दिन–राती करके बंदगी नूं, दुनियां दे बंधन तोड़ लयो,
जे अजे बाज .....

2. नाम गुरु दा हरदम रट लै, जूनां विचों हुण तूं बच लै, (2)
जे लेखे विच लौणी ज़िंदगी, नाम दी पूंजी जोड़ लयो,
जे अजे बाज .....

3. लगया अंदर तेरे ताला, खोल के हो जा मालोमाला, (2)
सतगुरु कोलों लै के कुंजी, बज्जर[4] दा ताला खोल लयो,
जे अजे बाज .....

4. दर्श पिया कृपाल दा पा लै, 'अजायब' जिंद लेखे ला लै, (2)
जे मालिक नूं मिलना हैं तां, सुरत शब्द नाल जोड़ लयो,
जे अजे बाज .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. हठीला – जिद्दी   2. बदियां वल्लों – बुराइयों से   3. कवेला – देर होना   4. बज्जर – बहुत मजबूत

मन मंदिर में आओ कृपाल जी

मन मंदिर में आओ कृपाल जी, मन मंदिर में आओ,
मुझको गले लगाओ कृपाल जी, मन मंदिर में आओ, (2)

1. सब पर दया करी प्रभु तुमने, समदर्शी है नाम तुम्हारा, (2)
गणका गीध अजामिल जो भी, चरन शरण में आया तारा, (2)
तुम पारस मैं लोहा सतगुरु, (2) सोना मुझे बनाओ,
मुझको गले लगाओ .....

2. तुमको कुछ भी कठिन नहीं है, तुम त्रिलोकी के स्वामी, (2)
रख दो सिर पर हाथ दया का, घट–घट वासी अंतरयामी, (2)
जन्म–मरण के इस चक्कर से, (2) अब तो मुक्त कराओ,
मुझको गले लगाओ .....

3. भक्ति भाव के भूखे सतगुरु, सबको गले लगाया तुमने, (2)
जिसने तुझे पुकारा सतगुरु, संकट मुक्त कराया तुमने, (2)
युगों–युगों से भटक रहा हूँ, (2) अब तो राह दिखाओ,
मुझको गले लगाओ .....

4. मैं हूं पापी कोट जन्म का, भूला जीव तुम्हारा, (2)
अब ना भेजो और दवारे, मैं दुःखियां हां भारा, (2)
भूली आत्मा भटक रही है, (2) 'अजायब' को घर पहुंचाओ,
मुझको गले लगाओ .....

मनां परदेसिया सुण लै

मनां परदेसिया सुण लै, करीं ना माण वतनां दा, (2)

1. तूं भुल्ल गया देश है अपना, बेगाने देश विच रह के,
झूठा ऐह है जगत सुपना, सोचया कदी वी ना बह के, (2)
सच्चा इक्को, गुरु है अपना, जिसने ध्यान रखणा आ,
मनां परदेसिया सुण .....

2. ऐहे कुटुम्ब–कबीला जो, आखिर कोई नहीं तेरा,
सुंदर तन रंगीला जो, कैहंदा ऐं मेरा है मेरा, (2)
बण जाऐ, खाक दी ढेरी, रहे ना माण यतनां दा,
मनां परदेसिया सुण .....

3. काल दा जाल डाडा है, भुन्न–भुन्न जीवां नूं खा रेहा,
भुलाके नाम सच्चे नूं, कर्मकांड विच पा रेहा, (2)
बचे तां, नरक दी अग्ग चों, गुरु वल ध्यान रखना ला,
मनां परदेसिया सुण .....

4. अजे वी समां है तेरा, गुरु दी शरणी पैजा तूं,
मनां कित्ते भुल्ल ना जावीं, नाम जप लाहा लै जा तूं, (2)
'अजायब' जे, सुख लैणे सारे, पालन कर कृपाल दे वचनां दा,
मनां परदेसिया सुण .....

मार चौकड़ी कदी ना बैठा

मार चौकड़ी कदी ना बैठा, जग विच सन्त कहौंदा ऐ,
सिमरन भजन कदी ना कीता, रब नूं मिलना चौहंदा ऐ, (2)

1. होमैं हंगता कढे[1] ना अंदरों, गुण धारे नरमाई[2] दे,
जाहर रब दुनियां ते है, पर मिलदा नाल कमाई दे, (2)
बिना कमाई आप की तरना, दुनियां होर डुबौंदा ऐ, सिमरन .....

2. घट–घट दे विच वसदा होया, है अलेप[3] कुछ लेप नहीं,
हेर–फेर दे करने वाले, पांवे उसदा भेद नहीं, (2)
बिना कमाई पल्ले कुछ ना, अमृत जाम पिलौंदा ऐ, सिमरन .....

3. अंतरयामी पुरख अनामी, सच्चा ओह इंसाफ करे,
संगत नूं जो धोखा देंदा, रब ओहनूं क्यों माफ करे, (2)
जो नरकां विच आप ही डुबदा, संगत किवें बचौंदा ऐ, सिमरन .....

4. शब्द ना सुणया लाईट ना देखी, अंदर झाती पाई ना,
मालिक जिस थां प्रकट होवे, अंदर करी सफाई ना, (2)
आप हनेरे[4] अंदर फिरदा, दुनियां नूं रब दिखौंदा ऐ, सिमरन .....

5. हो गई बुद्धि भ्रष्ट जिन्हां दी, रब नूं धोखा करदे ने,
ऐसे जीव ना बक्शे जांदे, नित ही जमदे–मरदे ने, (2)
'अजायब' नूं कृपाल प्यारा, सिमरन भजन सिखौंदा ऐ, सिमरन .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. कढे – निकालना 2. नरमाई – नम्रता 3. अलेप – अलिप्त 4. हनेरे – अंधेरे

मानस जन्म लाल रतन अमुल्ड़ा ऐ

मानस जन्म लाल रतन अमुल्ड़ा ऐ,
गुरु तो बगैर भा कौडियां दे जावे नां,
गुरु बिना ज्ञान नहीं, गुरु बिना ध्यान नहीं,
गुरु तो बगैर बंदा कम्म किसे आवे नां,

1. पुन्न–दान होम–यज्ञ, करी जावे नित भावें,
तीर्थां ते न्हाई जावे, अन्न–पानी खावे नां, (2)
गुरु बिना जुगती नां, गुरु बिना मुक्ति नां, गुरु तो बगैर .....

2. झूठा संसार ऐत्थे, इक्क दिन छड जाणा,
सतगुरु बिना तेरे, साथ कोई जावे नां, (2)
गुरु बिना खाना ते हंडाना[1], सब निष्फल, गुरु तो बगैर .....

3. चढ़ी असमान गुड्डी[2], माण–ताण होवे चंगा,
करे जो हुक्म कोई, अग्गों पछतावे नां, (2)
सच्ची ऐह कचहरी, धर्मराज इंसाफ करे, गुरु तो बगैर .....

4. लग्गी हथकड़ी चोर डाकू जिवें बझदा[3] ऐ,
मिल गई सजा कोई आण के बुलावे नां, (2)
आखदा[4] 'अजायब' कृपाल सतगुरु बिना,
सच्चे गुरु बिना कोई आण के छुड़ावे नां, गुरु तो बगैर .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. हंडाना – पहनना 2. गुड्डी – पतंग 3. बझदा – बंधना 4. आखदा – कहता

मिल जाऐ मन मोहणा

मिल जाऐ मन मोहणा, मेरा सतगुरु सोहणा,
सईयो कैहणा ओसनूं, कैहणा ओस नूं, (2)
हुण दे दवे दर्श, कर लवे जे तरस,
सईयो कैहणा ओस नूं .....

1. ओहदे विछोड़े ने पाया, साडे सीने विच सल्ल,
मुड़ घर आ जावे सोहणा, आ के ला लवे गल, (2)
असीं जीव हां विचारे, पऐ कर्मां दे मारे, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं .....

2. असीं मन दे हां दाता, साथों भुल्लां लख होईयां,
जे ओह बक्श लवे सोहणा, असीं परदेसणां नी होईयां, (2)
हुण देर होई काफी, सानूं दे देवे माफी, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं .....

3. हुण दे दवे दर्श, कर लवे जे तरस,
इक पल वी ऐ औक्खा, हुण बीत गए बरस, (2)
जे ओ मार लवे गेड़ा, मुक जाऐ ऐह झेड़ा, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं .....

4. सुणे गुरु कृपाल, आ के कर दे निहाल,
छेती आ जावे प्यारा, लवे जीवां नूं संभाल, (2)
'अजायब' करे अरजोई, तेरे बिना दाता मोई, (2)
सईयो कैहणा ओस नूं .....

मिलया सावन दा बेटा कृपाल जी

मिलया सावन दा बेटा कृपाल जी, भाग जागे साडे वीरनों[1] (2)

1. मानस जन्म दुर्लभ थ्याया[2], वडभागी गुरु दर्शन पाया, (2)
आया बण के सोहणा मिसाल जी,
भाग जागे साडे .....

2. सतसंग करके भरम हटाऐ, औजड़[3] जांदे मार्ग पाऐ, (2)
सोहणा जीवां ते होया दयाल जी,
भाग जागे साडे .....

3. विच परदेसां दे नाम जपाया, सावन शाह दा नारा लाया, (2)
हिरदे मोम कीते पत्थर ढाल[4] जी,
भाग जागे साडे .....

4. महिमा तेरी अजब न्यारी, आया बण के परउपकारी, (2)
सोहणा सावन दा चन्न[5] लाल जी,
भाग जागे साडे .....

5. दर तेरे जो चल के आवे, मुँहों मंगियां मुरादां पावे, (2)
'अजायब' ते खुश होया कृपाल जी,
भाग जागे साडे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. वीरनों – भाइयो	2. थ्याया – मिलया	3. औजड़ – मुश्किल	4. ढाल – पिघलाना	5. चन्न – बेटा

मिलो कृपाल प्यारेया

मिलो कृपाल प्यारेया, तैनूं दिल दा हाल सुणावां, (2)

1. दुःखां विच पै गई जिंदड़ी, तैथों बिना शांत ना होवे,
बिरहों दे तीर वजदे[1], तेरी याद आई तां दिल रोवे, (2)
तैथों बिना मेरा कोई ना, जीहनूं दिल दा भेद बतावां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

2. याद तेरी आवे सोहणया, जदों शरण तेरी विच बैहंदे,
तन–मन होवे उजला, जदों बोल मिठड़े सुण लैंदे, (2)
दस्सां कीहनूं दिल फोल के, तेरे अग्गे वास्ते पांवां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

3. दया कुल मालिक दी, बण रूहां दा व्यापारी आया,
मौज होई सावन दी, सच्चे नाम दा भंडारी लाया, (2)
हरदम चाह दिल नूं, तेरे चरणां दी धूड़ी[2] विच न्हावां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

4. बेड़ा भवसागर चों, सतगुरु जी बन्ने[3] लावो,
अर्जां 'अजायब' करदा, जीवां नूं पार लंघावो, (2)
होर कुछ मंगदा नहीं, नूरी दर्शन तेरा चाहवां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वजदे – लगते 2. धूड़ी – धूल 3. बन्ने – किनारे

मुड़ घर आजा

मुड़[1] घर आजा सोहणे कृपाल वे,
आ के देख लै संगत दा हाल वे, (2)
होऐ फिरदे सुदाई[2], कोई होवे ना सहाई,
यादां, तेरियां च जिंदड़ी रुलाई वे, मुड़ घर आजा .....

1. घर अपणे तूं सजणा आजा,
सानू रोंदयां नूं फेर हसा जा, (2) (2)
तैनूं तक के कृपाल, हो जाईऐ वे निहाल,
साडी, जान विच जान लयाईं वे, मुड़ घर आजा .....

2. आजा दस्स मैनूं किंझ[3] मैं पुकारा,
कर गल्लां आप देजा तूं हुंगारा, (2) (2)
घुंडी[4] दिल वाली खोल, आ जा हस के तू बोल,
आ के, हो जा हुण आप सहाई वे, मुड़ घर आजा .....

3. जिन्ना अज तक दाता असीं रोए आं,
ऐन्हां अक्खरां[5] च अथरू[6] परोए आ[7], (2) (2)
आ जा होर ना रुला, ऐवें जिंद ना सता,
सुण, संगत दी आ अरजोई वे, मुड़ घर आजा .....

4. किवें मन लां मैं भाणा[8] करतार दा,
जेहड़ा इक्क पल वी नहीं सी विसार दा, (2) (2)
'अजायब' होया मजबूर, दस्स मेरा की कसूर,
आजा, अक्खियां तों पासे ना खलोईं[9] वे, मुड़ घर आजा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मुड़ – वापिस	2. सुदाई – पागल	3. किंझ – कैसे	4. घुंडी – गाँठ	5. अक्खरां – अक्षर
6. अथरू – आंसू	7. परोए आ – पिरोए हैं	8. भाणा – हुक्म	9. खलोईं – खड़े होना	

मुझे अपना बना लो कृपाल

मुझे अपना बना लो कृपाल, दयाल तुझे सब कहते,
सब कहते, सब कहते कृपाल, दयाल तुझे सब कहते, (2)

1. ना देखो मेरे अवगुण सतगुरु, अवगुण मुझमें बहुत भरे,
काटो मेरे संकट सतगुरु, संकट मैंने बहुत सहे, (2)
सतगुरु करो ख्याल,
दयाल तुझे सब .....

2. मन पापी का जोर बड़ा है, पाप कराऐ सद्गुण हरे,
काम क्रोध मद लोभ मोह में, लिपटा दिन और रात रहे, (2)
दया करो रखवाल,
दयाल तुझे सब .....

3. बड़े–बड़े ऋषि–मुनि हुऐ जो, वे भी मन की धार बहे,
मुझ इक छोटे जीव की सतगुरु, तुम बिन बहिआं[1] कौन गहे[2], (2)
मेरे सतगुरु दीन दयाल,
दयाल तुझे सब .....

4. अपने सेवक की आपे राखै, नीचों ही फिर ऊँच करे,
'अजायब' तेरी शरण में सतगुरु, शरणागत की पैज[3] रहे, (2)
सावन के कृपाल,
दयाल तुझे सब .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बहिआं – बाँह 2. गहे – पकड़े 3. पैज – लाज

मेरा सतगुरु सोहणा आ गया

मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु सोहणा, आ गया,
मैनूं सिध्धे रस्ते, पा गया, (2)
मेरा सतगुरु,

1. अज भागां भरया[1], दिन आया, असीं याद गुरु दी, गा रहे,
उस कुल मालिक, निरंकार दा, अज जन्म दिहाड़ा[2], मना रहे, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

2. ओह दुनियां दे कोने,–कोने ते, सच्चे नाम दा होका[3], ला गया,
ओह बेटा बण के, सावन दा, मींह[4] अमृत दा, बरसा गया, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

3. पिता हुक्म सिंह दा, लाडला, ओहदा नाम सन्त, कृपाल है,
माता गुलाब देवी दा, जाया[5] ऐ, पर दुनियां ते इक, मिसाल है, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

4. लक्खां होण वधाईयां, संगत जी, मेरे गुरु दा भंडारा, आ गया,
मैं 'अजायब' सी, भुल्ल गया, फड़ सीधे रस्ते, पा गया, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. भागां भरया – भाग्यशाली 2. दिहाड़ा – दिन 3. होका – आवाज 4. मींह – बरसात 5. जाया – जन्मां हुआ

मेरा कागज गुनाहां वाला पाड़ दे

मेरा, कागज गुनाहां वाला पाड़ दे[1], होर कुछ मंगदा नहीं, (2)

1. तूं समरथ तूं, अंतरयामी, मैं गुनाहगार हां, नमक हरामी, (2)
बण के, पारस लोहे नूं तार दे,
होर कुछ मंगदा .....

2. तेरी महिमा, जाण ना सकिऐ, नूर इलाही, पछाण[2] ना सकिऐ, (2)
तीर, दया दा कलेजे विच मार दे,
होर कुछ मंगदा .....

3. छडणा इक्क दिन, देश पराया, झूठी काया, झूठी माया, (2)
बाहों, फड़ पीया कर पार दे,
होर कुछ मंगदा .....

4. असीं पापी हां, औगुणहारे, बक्शो दाता, जीव विचारे, (2)
होमैं, हंगता दे दुःखड़े निवार दे,
होर कुछ मंगदा .....

5. दया करो साथों, पाप छुड़ाओ, सिमरन भजन दा, जाप कराओ, (2)
कृपाल जी, दुःखिए 'अजायब' नूं तार दे,
होर कुछ मंगदा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. पाड़ दे – फाड़ दे 2. पछाण – पहचान

मेरे दाता जी सुनो बेनती

मेरे दाता जी सुनो बेनती, मेरे दाता जी सुनो बेनती,
करो मन्जूर सुन के बेनती, करो मन्जूर सुन के बेनती, (2)

1. अर्ज गुजारां, सुन लो पुकारां,
सुन लो पुकारां, कदी नां विसारां, (2)
लावो पार किनारे, दाता लावो पार किनारे,
मेरे दाता जी .....

2. आत्मा निमाणी[1], सुणदी ना बाणी,
सुणदी ना बाणी, होई ऐ नताणी[2], (2)
हो गई ऐ तेरे सहारे, दाता हो गई ऐ तेरे सहारे,
मेरे दाता जी .....

3. काल पावर ने, जाल बिछाऐ,
जाल बिछाऐ, दिल घबराऐ, (2)
तेरे बिना दुःख कौन टारे[3], दाता तेरे बिना दुःख कौन टारे,
मेरे दाता जी .....

4. होऐ के दयाल, हाल सुनो कृपाल जी,
नाम दे खजाने देवो, करो मालोमाल जी, (2)
दास 'अजायब' पुकारे, दाता दास 'अजायब' पुकारे,
मेरे दाता जी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. निमाणी – बेचारी 2. नताणी – नास्तिक 3. टारे – टालना

मेरे मनमोहन कृपाल तुझे याद करूं

मेरे मनमोहन, कृपाल तुझे याद करूं,
तेरी यादों में, रो–रो कर, इक फरियाद करूं, (2)
मैं इक फरियाद करूं,

1. क्यों दिया तूने, मुझे तन करके विछोड़ा, (2)
क्यों मुझे तूने, बीच दुनिया में छोड़ा, (2)
तेरे बिन मेरा, यहाँ कौन किसे बखान करूं,
तेरी यादों में .....

2. मैं तो नालायक, बेखबर दुनिया दीवानी से, (2)
मैं ना समझा, किसी और के समझाने से, (2)
समझूं भी कैसे, आ समझा यही पुकार करूं,
तेरी यादों में .....

3. मैं ना जानां, जानां ना इस दीवाने को, (2)
दुनियां तो दौड़ी, सिर्फ दुनियां के खजाने को, (2)
मैं तो बस रोया, कृपाल–कृपाल करूं,
तेरी यादों में .....

4. नासमझ था, कई दिनों बाद ही समझा, (2)
नहीं देगा, दर्श तन करके नाम में रमजा, (2)
याद करके तेरी यादें, रोज रोया करूं,
तेरी यादों में .....

5. बहुत मैं रोया, रोया तुझे याद करके, (2)
पर ना आया तूं, मेरे पास कभी तन करके, (2)
'अजायब' है तेरा, रहे तेरा यही अरदास करूं,
तेरी यादों में .....

मेरे विच ना गुरु जी गुण कोई

मेरे विच ना गुरु जी गुण कोई, औगुणां दा मैं भरया, (2)

1. सब अवगुण मैं, गुण नहीं कोई, क्यों कर कंत[1], मिलावा होई, (2)
ना मैं रूप ना, बांके नैणा, ना कुल ढंग ना, मीठे वैणा[2],
औगुणां दा मैं .....

2. असीं पापी हां, औगुणहारे, आ के डिग्ग पए, तेरे दवारे, (2)
तेरे बिना किते, मिलदी ना ढोई[3],
औगुणां दा मैं .....

3. यतीम समझ के, चरनी लायो, गेड़[4] चौरासी दा, फेर ना पायो, (2)
पिच्छे साडे नाल होई जो होई,
औगुणां दा मैं .....

4. तेरे बिना सब, छड ते सहारे, दिल साडे विच, वस जा प्यारे, (2)
हत्थ बन करदा अरजोई,
औगुणां दा मैं .....

5. मैं पापी मैं, अवगुणहारा, गरीब 'अजायब', दास तुम्हारा, (2)
कृपाल गुरु बिना आसरा ना कोई,
औगुणां दा मैं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. कंत – पति 2. वैणा – वचन 3. ढोई – आसरा 4. गेड़ – चक्कर

मेरे सतगुरु दीन दयाल

मेरे सतगुरु दीन दयाल दया कर, मुझको आन संभालो जी, (2)

1. मैं पापी घोर दुराचारी, कदमों में मुझे बैठा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

2. दुनियां के पाप सदा घेरें, सतगुरु जी मुझे बचा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

3. पाँचों दुश्मन सदा हैं पीछे, सतगुरु जी मुझे छुड़ा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

4. मन का वेग चले रथ सा, सतगुरु जी आन रुका लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

5. भवसागर में फँसा हुआ हूँ, सतगुरु जी पार लगा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

6. चरनों में तुम्हारे नेह[1] रहे, दुनियां से मुझे निकालो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

7. मैं भूला भटका राही हूँ , मुझे करके दया बुला लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

8. कहे 'अजायब' भजन कर बंदे, अपने पर दया करा लो जी, (2)
मेरे सतगुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. नेह – प्यार

मेरे सतगुरु प्यारे जी

मेरे सतगुरु प्यारे जी, वे जग से न्यारे जी, (2)

1. ना वे चंदा ना वे सूरज, (2) ना सागर ना तारे जी,
वे जग .....

2. चंदा एक कलंकी पापी, (2) सतगुरु पापी तारें जी,
वे जग .....

3. सूरज एक आग का गोला, (2) सतगुरु शीतल प्यारे जी,
वे जग .....

4. सागर रहता एक ठौर[1] पर, (2) सतगुरु सदा हैं सारे जी,
वे जग .....

5. तारे दूर गगन में चमकें, (2) सतगुरु बीच हमारे जी,
वे जग .....

6. उनके समान नहीं कोई जग में, (2) सतगुरु एक हमारे जी,
वे जग .....

7. उनकी शोभा ना वरनी[2] जावे, (2) सतगुरु पर हम वारे जी,
वे जग .....

8. रहने की है इच्छा मेरी, (2) सतगुरु चरन तुम्हारे जी,
वे जग .....

9. कहे 'अजायब' भजन तुम कर लो, (2) सतगुरु संग तुम्हारे जी,
वे जग .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ठौर – जगह 2. वरनी – वर्णन

मैं तो कृपाल से विछुड़ के रोई रे

मैं तो, कृपाल से विछुड़ के, रोई रे, (2)

1. पीया से विछुड़ के, इस जग आई, दर–दर भटकी, ठोकर खाई, (2)
बात ना पूछे कोई रे, मैं तो कृपाल .....

2. बिन पीया के मैं, तड़प रही हूँ, दर्शन को मैं, तरस रही हूँ, (2)
बैरन दुनियां होई रे, मैं तो कृपाल .....

3. आऊं–जाऊं, मैं दुःख पाऊं, विछुड़ पीया से, मैं पछताऊं, (2)
काल देश में खोई रे, मैं तो कृपाल .....

4. संग बसे मेरे, मैं क्या जानूं, मैं पगली, पिर[1] ना पहचानूं, (2)
कृपाल से बात ना होई रे, मैं तो कृपाल .....

5. कोई ना जाने, देश पराया, तोर दित्ता[2] मुड़[3], लैण ना आया, (2)
ना जीवां ना मोई रे, मैं तो कृपाल .....

6. भुल्ल गयों वे, तूं बेदर्दा, विछड़ां तैथों, दिल नहीं करदा, (2)
कृपाल बगैर कित्थे ढोई[4] रे, मैं तो कृपाल .....

7. राह भुल्ल गई मैं, किस राह आंवां, आ के लै चल, तरले पांवां, (2)
मुश्किल डाडी[5] होई रे, मैं तो कृपाल .....

8. कृपा करो, कृपाल सुनो रे, दाते दीन, दयाल सुनो रे, (2)
मैं दुःखयारी रोई रे, मैं तो कृपाल .....

9. मैं पापण नूं, गल नाल ला लै, अपने बेड़े, विच बिठा लै, (2)
'अजायब' कृपाल दी होई रे, मैं तो कृपाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. पिर – परमात्मा	2. तोर दित्ता – भेज दिया	3. मुड़ – दोबारा	4. ढोई – सहारा	5. डाडी – बहुत

मैं बलिहारे जावां कृपाल जिन्हां दिया मन्ने

मैं बलिहारे जावां, कृपाल जिन्हां[1] दिया मन्ने[2], (2)

1. दिल दे शीशे, साफ जिन्हां दे, (2)
सतगुरु लावे बन्ने,
मैं बलिहारे जावां .....

2. जिन्हां ने गुरु उत्तों, तन–मन वारया, (2)
गुरु कटदा चौरासी गेड़[3] लम्मे[4],
मैं बलिहारे जावां .....

3. तूं बक्शिंद असीं, जाण ना सकिऐ, (2)
बक्शो अक्खियां जीव हां अन्ने[5],
मैं बलिहारे जावां .....

4. तेरा ही नाम, तूं शब्द भंडारी, (2)
खड़े धरती असमान बन्नें,
मैं बलिहारे जावां .....

5. 'अजायब' दी, अर्ज हमेशा, (2)
कृपाल गुरु जी लायो बन्ने[6],
मैं बलिहारे जावां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. जिन्हां– जिनकी 2. मन्ने – माने 3. गेड़ – चक्कर 4. लम्मे – लम्बे 5. अन्ने – अंधे 6. बन्ने – किनारे

मैनूं कृपाल मिलण दा चा वे

मैनूं, कृपाल मिलण दा चा वे, कर देयो पूरियां आस्सां, (2)

1. तेरियां उडीकां[1] विच, रोवां कुरलावां[2] मैं,
मिल मेरे पीया, दिल दी तपत बुझावां मैं, (2)
मेरा, दुःख विछोड़े दा, ठा[3] वे,
कर देयो .....

2. याद तेरी आवे जदों, दिल नूं सतावंदी,
सोहणया दर्श बिना, चैन नहीं आंवदी, (2)
तूं, हैं शाहां दा, शाह वे,
कर देयो .....

3. वासी सच्चखंड दा तूं, आया विच जग दे,
करदा संभाल बैठ, विच रग–रग[4] दे, (2)
बेटा, सावन देआ दर्श, दिखा वे,
कर देयो .....

4. तेरे जेहा जग उत्ते, दिस्से ना कोई होर वे,
पांवां तेरे तरले[5] नां, मेरा कोई जोर वे, (2)
मैनूं, नूरी दर्श, दिखा वे,
कर देयो .....

5. शाह कृपाल तेरा, यश जग गौंदा ऐ,
दास 'अजायब' तेरा, नाम ध्यौंदा ऐ, (2)
कृपाल पीया, ठंड कलेजे, पा वे,
कर देयो .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. उडीकां – इंतजार 2. कुरलावां – चीखकर रोना 3. ठा – हटाना 4. रग–रग = नस–नस
5. तरले – मिन्नत

मैनूं पुच्छण आण सहेलियां

1. मैनूं पुच्छण आण सहेलियां, नीं तूं कीवें होई बीमार,
तूं रोवे धाहां[1] मार के, तैनूं चढ़या रहे बुखार,

2. तूं अकदी[2]–थकदी नां कदी, ते करदी नहीं आराम,
तैनूं सुत्तयां कदी नां वेखया, तेरी होई नींद हराम,

3. तेरे मुख ते खुशी नां दिस्स दी, तूं ते रहंदी सदा लाचार,
तैनूं हसदेयां कदी नां वेखया, तेरा कीदे नाल प्यार,

4. असीं हत्थ बन करिऐ बेनती, साथों[3] रखीं ना भेद छुपा,
जरा दुःखड़े दस्सीं खोल के, सारा देवीं हाल सुना,

5. मेरे जागे भाग सुलखणें[4], मैनूं मिलया पति जमाल,
मैनूं रूलदी–फिरदी[5] वेख के, दित्ता उच्चा तख्त संभाल,

6. मैं ओहदी होई सहेलियो, मेरा हरदम रखे ख्याल,
ओह मेरे घर विच आ गया, ओहदा नाम सन्त कृपाल,

7. अजे सद्धरा ना मेरियां लत्थियां[6], मेरा लुटया गया सुहाग,
ओह मैनूं चिट्टी चादर दे गया, किते लग्ग ना जाऐ दाग,

8. हुक्म उसदा मनण वास्ते, मैं अंदर वड़ गई आप,
ओहदी दस्सी जुगत ना भुल्ल दी, मैं हरदम कर दी जाप,

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. धांहा – छाती पीटकर रोना 2. अकदी – ऊबना 3. साथों – हमसे 4. सुलखणे – बहुत अच्छे
5. रूलदी फिरदी – धक्के खाती 6. सद्धरां ना मेरियां लत्थियां – मेरे दिल के चाव पूरे नहीं हुए

9. मैनूं वचन ओहदे पऐ मनणे, मेरे उत्ते जो लाया ला[1],
मैं सत्–सत्[2] करके मन्न लऐ, दित्ता चरणी शीश झुका,

10. मैनूं चरनां विच बिठा के, कीते सतपुरुष ने वाक[3],
तूं जग दिया आस्सां छड के, रखीं इक सतगुरु दी आस,

11. तेरे विचों ओण सुगधियां, टप्प[4] जाण समुन्द्रां तों पार,
तैं विच असमानां दे उडणां, तैनूं करन परियां नमस्कार,

12. दिन आजज[5] हो के कटणें, नीवें हो रहणा संसार,
तेरी सतगुरु रक्खया[6] करेगा, जीवां दा करीं उद्धार,

13. करे अर्ज 'अजायब' हत्थ जोड़ के, जागे भाग होऐ सतगुरु दयाल,
करां लख शुक्राने ओस दे, मैनूं मिल गए गुरु कृपाल,

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ला – कानून 2. सत् – सत् = सिर झुकाकर 3. वाक – वचन 4. टप्प – दूसरे पार जाना
5. आजज – आज्ञाकारी 6. रक्खया – रक्षा

मैनूं तेरे बिना किसे दी नां लोड़ दातेया

मैनूं तेरे बिना किसे दी नां लोड़[1] दातेया, (2)

1. दुनियां झेड़े[2] झगड़े मुल्ल लैंदी, पूरी फेर वी नां पैंदी, (2)
भावें मिल जाऐ, लख ते करोड़ दातेया,
मैनूं तेरे बिना .....

2. जित्थे भेजे दाता जांवां, तेरा दित्ता सदा ही खांवां, (2)
मैं हां पुतली, तेरे हत्थ डोर दातेया,
मैनूं तेरे बिना .....

3. कोने–कोने ते मैं फिरया, नूर तेरा हर थां मिलया, (2)
मैनूं तेरे बिना, दिस्सदा नां होर दातेया,
मैनूं तेरे बिना .....

4. जित्थे जांवां तैनूं गांवां, तेरा संदेश पुचावां, (2)
तेरा लाया ताला, चाबी तूं मरोड़ दातेया,
मैनूं तेरे बिना .....

5. सोहणा शाह कृपाल, होया 'अजायब' ते दयाल, (2)
प्यार मेरा हो जाऐ, चन्न ते चकोर दातेया,
मैनूं तेरे बिना .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. लोड़ – जरूरत 2. झेड़े – लड़ाई

याद गुरु कृपाल दी

याद गुरु कृपाल दी, दिन रातीं आवे,
सुण लवे फरियाद जी, आ दर्श दिखावे, (2)

1. तेरे दर्श दियां, तांघां[1] लग्गियां,
सीने च बिरहों दियां, सांगां[2] वजियां, (2)
दुःखियां दी सुण के, आ दर्श .....

2. राह तेरा तकदी, मैं पागल होई,
तेरे बिना किते, मिलदी नां ढोई[3], (2)
जिंदगी दी नां, मुनियाद[4] जी आ दर्श .....

3. जन्म–मरण दा, दुःखड़ा ठावो,
मैं पगली नूं, चरनी लावो, (2)
सेवक दी रखो, लाज जी आ दर्श .....

4. मेरे साईयां, लावीं नां देरी,
मैं परदेसण, हो गई हां तेरी, (2)
औगुणहारी नूं रखयो याद जी आ दर्श .....

5. दुःख विछोड़े दा, पल च हटा जा,
वेहड़े[5] मेरे विच, फेरा पा जा, (2)
'अजायब' दी ऐहो, आवाज़ जी आ दर्श .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ताघां – तलब 2. सांगां – सुई जैसे तीखे 3. ढोई – आसरा 4. मुनियाद – निश्चित अवधि
5. वेहड़े – आँगन

रब लभ्भदां ऐं बाहर भज्जदां ऐं

रब लभ्भदां ऐं, बाहर भज्जदां[1] ऐं,
है मालिक तेरे कोल[2] वे, बाहर ना भुल्ल के टोल[3] वे, (2)

1. हरदम नाम जपांगा तेरा, वैदा तूं करके आया,
सुत्ता नींद तूं गफलत वाली, मालिक दिलों भुलाया, (2)
नाम जप अड़्या[4], वे लाहा खट्ट अड़्या, कुछ पूंजी बन लै कोल वे,
बाहर ना भुल्ल के .....

2. मैहंदी विच जिवें रंग समाया, तेरे विच प्रभु तेरा,
जिवें फुल्लां विच वाशना रैहंदी, अंदर प्रीतम तेरा, (2)
बाहर जावीं ना, पछतावीं ना, गुरु लभ्भ लै अंदर फोल वे,
बाहर ना भुल्ल के .....

3. काया विच बैठा ला के ताला, सन्तां नूं कुंजी[5] है फड़ाई,
रंगरलियां माणदेयां पड़दे नां खुलदे, करनी पवे कमाई, (2)
मन मारना पवे, सिर वारना पवे, तां पहुंचे सतगुरु कोल वे,
बाहर ना भुल्ल के .....

4. प्यार प्रभु दा अंदरों मिलदा, बाहर झूठी मिथ्या,
जिस नूं मिलया अंदरों मिलया, सब सन्तां ने लिखया, (2)
हे दयाल प्रभु, कृपाल प्रभु, 'अजायब' आखे[6] बोल वे,
मैनूं रख लै अपने कोल वे,
रब लभ्भदां ऐं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. भज्जदां – भागना 2. कोल – नज़दीक 3. टोल – ढूंढना 4. अड़्या – जिद्दी यार 5. कुंजी – चाबी
6. आखे – कहता है

रंग रूप दा माण नां करिऐ

रंग रूप दा माण नां करिऐ, रंग रूप दा (2) माण नां करिऐ
वे सिर उत्ते मौत खड़ी सजना, सजना वे सिर उत्ते मौत खड़ी, (2)
रंग रूप दा

1. मान वडयाई, थोड़े दिनां लई रैहणगे,
बुर्ज[1] जवानी वाले, पलां विच ढैहणगे[2], (2)
ओहदी कुदरत कोलों[3] डरिऐ, ओहदी कुदरत (2) कोलों डरिऐ
वे सिर उत्ते .....

2. आया नाम जपने नूं, माया जाल पा लया,
सच्चे कुल मालिक नूं, दिल तों भुला लया, (2)
नाम जप के जहानों तरिऐ, नाम जप के (2) जहानों तरिऐ
वे सिर उत्ते .....

3. खलड़ी[4] च साह, दस्सो केड़ी मुनियाद वे,
दिलों नां भुलावीं, रखीं मालिक नूं याद वे, (2)
हत्थ बन्न के बेनती करिऐ, हत्थ बन्न के (2) बेनती करिऐ
वे सिर उत्ते .....

4. मिलो कृपाल सोहणा, दर्श दिखा दयो,
मिल के 'अजायब' दी, प्यास नूं बुझा दयो, (2)
सतगुरु दा सिमरन करिऐ, सतगुरु दा (2) सिमरन करिऐ
वे सिर उत्ते .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बुर्ज – घुमट 2. ढहणगे – गिर जाएंगे 3. कोलों – से 4. खलड़ी – चमड़ी

रूह मालिक तों होई दूर

रूह मालिक तों होई दूर, ऐहनूं, समझौणा नीं,
हुण मिलया मानस जामा, कंत[1] नूं पौणा नीं[2], (2)

1. मैनूं मुड़–मुड़ यादां, पीया मिलण दियां, आईयां नीं,
मेरे दिल नूं दुःखड़ा होऐ, जे पैण जुदाईयां नीं, (2)
मेरी रूह दा चोला, नाम दे विच रंगोणा नीं,
हुण मिलया मानस .....

2. तूं करके वैदा, नाम जपण दा, आई नीं,
तूं विच दुनियां दे आ के, याद भुलाई नीं, (2)
किते भुल्ल ना जावीं रूहे, कंत मनौणा नीं,
हुण मिलया मानस .....

3. तूं कुल मालिक तों दूर, विछुड़ी चिर दी ऐं,
तूं सच्चे सतगुरु बाजों, दर–दर फिर दी ऐं, (2)
तूं भुल्लां लै बक्शा, जे कंत रिझौणा[3] नीं,
हुण मिलया मानस .....

4. जे मिल जाऐ कृपाल, दयाल प्यारा नीं,
मैनूं डुबदी नूं आ देवे, आण सहारा नीं, (2)
'अजायब' दी रूह दा सच्चा विछुड़या, कंत मिलौणा नीं,
हुण मिलया मानस .....

कठिन शब्दों के अर्थः-

1. कंत – पति 2. पौणा नीं – प्राप्त करना 3. रिझौणा – खुश करना

रूहां साडियां नूं पार लंघा

रूहां साडियां नूं पार लंघा, गुरु कृपाल धन वे,
रोवां तेरे अग्गे तरले[1] मैं पा, मेरियां दयाल मन वे, (2)

1. तेरियां ऐ आत्मां, तूं सुण अरजोई[2] वे, सुण अरजोई वे, (2)
देवीं काल दे जाल तों छुड़ा,
गुरु कृपाल धन .....

2. तेरे उत्ते सोहणया वे, मेरा कोई जोर ना, मेरा कोई जोर ना, (2)
भुल्ली आत्मा नूं आ समझा,
गुरु कृपाल धन .....

3. अक्ख साडी बंद, सानूं हो गया अंधेर है, हो गया अंधेर है, (2)
दया कर देवो पड़दा हटा,
गुरु कृपाल धन .....

4. मैं तां तेरे बिना होर किसे नूं नीं जाण दी, किसे नूं नीं जाण दी, (2)
जग तेरे बिना सुन्ना हो गया,
गुरु कृपाल धन .....

5. भुल्ल जाण दुःख सारे, वेहड़े मेरे आ जावीं, आ के फेरा पा जावीं, (2)
रूह 'अजायब' दी नूं ना तड़फा,
गुरु कृपाल धन .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. तरले – मिन्नतें 2. अरजोई – प्रार्थना

रोंदी मैं दर-दर फिरदी

रोंदी मैं दर–दर फिरदी, कोई नां दर्दी वे,
धक्के मैं खाद्दे बहुते, मिली नां हमदर्दी वे, आ हुण आ के बचा,
वे मेरे साईयां वे, आ हुण गल नाल ला,(2) (2)

1. दुनियां है ताने देंदी, कर दी मखौल[1] वे,
दब–दब के रगां[2] मेरियां, लब्भ दी है पोल[3] वे, (2)
आ मेरी लाज रखा, वे मेरे साईयां वे, आ हुण गल नाल ला, (2)
रोंदी मैं .....

2. जद दा तूं नजरां सामों, होया हैं पासे वे,
जान मेरी तड़फे हरदम, लोकां भाणे हासे वे, (2)
आ हुण नजरां मिला, वे मेरे साईयां वे, आ हुण गल नाल ला, (2)
रोंदी मैं .....

3. रूह मेरी रोवे हरदम, तड़फे मेरी जान वे,
दुनियां पई वसदी सारी, कोई नां पहचान वे, (2)
आ हुण ठण्ड वरता, वे मेरे साईयां वे, आ हुण गल नाल ला, (2)
रोंदी मैं .....

4. दिल दा मैं हाल सोहणया, किस नूं सुणावां वे,
रोंदा दिल मेरा हर पल, हस–हस दिखावां वें, (2)
आ हुण दिल परचा[4], वे मेरे साईयां वे, आ हुण गल नाल ला, (2)
रोंदी मैं .....

5. मेरा कृपाल सोहणा, कंत रंगीला वे,
रोंदा 'अजायब' बैठा, कर कोई वसीला[5] वे, (2)
आ हुण रौंणकां[6] लया, वे मेरे साईयां वे, आ हुण गल नाल ला, (2)
रोंदी मैं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मखौल – मजाक 2. रगां – नसें 3. पोल – कमी 4. दिल परचा – दिल बहलाना 5. वसीला – उपाय
6. रौंणकां – चहल पहल

लक्खां शक्लां तक्कियां अक्खियां ने

लक्खां शक्लां तक्कियां[1] अक्खियां ने,
कोई नजर मेरी विच खुबदी[2] ना, (2)

1. जो करदा ऐ, झोली भरदा ऐ, जो शरमांदा है, खाली जांदा है, (2)
लक्खां शक्लां तक्कियां .....

2. तेरी झात[3] बड़ी मतवाली ऐ, ओह जीवन बक्शन वाली ऐ, (2)
हे सावन दीन दयाल मेरे, तेरा नाम लयां बेड़ी डुबदी नहीं,
लक्खां शक्लां तक्कियां .....

3. तेरा दर्श जिन्हां ने करया ऐ, ओह दोहां जहानां तो तरया ऐ, (2)
सानूं बक्शो बक्शनहार प्रभु, साडी गल्ल ऐत्थे कोई मुकदी नहीं[4],
लक्खां शक्लां तक्कियां .....

4. असीं अवगुणहारे हां बक्श लवो, आऐ दर तेरे ते दर्श देवो, (2)
सानूं नूरी झलक दिखा दाता, सुत्ती रूह जागी कई युग दी नहीं,
लक्खां शक्लां तक्कियां .....

5. रूह दर–दर फिरके थक गई ऐ, जमण–मरण दे गेड़ विच अक्क गई ऐ[5], (2)
सच्चा सावन दर्श दिखा देवे,
रूह 'अजायब' दी जिल्लण[6] विच खुबदी नहीं,
लक्खां शक्लां तक्कियां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. तक्कियां – देखना 2. खुबदी – जचती 3. झात – देखना 4. मुकदी नहीं – खत्म नहीं होती
5. अक्क गई ऐ – तंग आ गई है 6. जिल्लण – दलदल

लग जाऐ ध्यान कृपाल दा

लग जाऐ ध्यान, कृपाल दा, जी जीवन तेरा सुधर जाऐ, (2)

1. फिरदा भौंदा[1] मथुरा, काशी, अंदर तेरे हैं अविनाशी, (2)
ध्यान कट गया मोह जाल दा,
जी जीवन तेरा .....

2. विषयां तो मन दूर हटा लै, गुरु स्वरूप दा ध्यान लगा लै, (2)
दर्शन हो जाऐ कृपाल दा,
जी जीवन तेरा .....

3. पाँच शब्द दा सिमरन रट लै, पाँच ठगों की मार से बच लै, (2)
गुरु अमृत प्याल दा[2],
जी जीवन तेरा .....

4. झूठे हैं दुनियां के धंधे, नाम है सच्चा जप लै बंदे, (2)
'अजायब' हो गया कृपाल दा,
जी जीवन तेरा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. भौंदा – भटकना 2. प्याल दा – पिलाना

लिख चिट्ठियां

लिख चिट्ठियां, लिख चिट्ठियां,
लिख चिट्ठियां सावन नूं पावां, देर ना ला अड़्या,
अनामी देश वसेंदेया[1], वतनीं आ अड़्या[2], (2)

1. अज सावण महीने आए वे, सखियां ने पींगे पाए वे, (2)
मैनूं तेरी याद सताए, तूं घर आ अड़्या,
वे देर ना ला अड़्या, लिख चिट्ठियां .....

2. मैं रोज उडीकां[3] रखियां वे, बागां विच अम्बियां पक्कियां वे, (2)
अज मौसम रंग रंगीले, खुशी लया अड़्या,
वे देर ना ला अड़्या, लिख चिट्ठियां .....

3. जदों बद्दल रिमझिम लाए वे, ओदों गीत कोयल ने गाए वे, (2)
पिपली[4] पींगां[5] पाईयां, आण झुटा[6] अड़्या,
वे देर ना ला अड़्या, लिख चिट्ठियां .....

4. अज अम्बर बरसे पाणी वे, मेरा दूर वसेंदा हाणी[7] वे, (2)
अज फेर बहारां आईयां, तूं वी आ अड़्या,
वे देर ना ला अड़्या, लिख चिट्ठियां .....

5. मेरी झांजर[8] छण–छण बोले वे, कोई भेद दिलां दे खोले वे, (2)
'अजायब' दी झांजर दा, छणकाटा[9] सुणदा जा अड़्या,
वे देर ना ला अड़्या, लिख चिट्ठियां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वसेंदया – रहने वाला 2. अड़्या – जिद्दी यार 3. उडीकां – इंतजार 4. पिपली – पीपल का पेड़
5. पींगा – झूला 6. आण झुटा – झूला देना 7. हाणी – साथी 8. झांजर – पायल 9. छणकाटा – झनकार

लिख सतगुरु वल पाईयां

लिख सतगुरु वल पाईयां, चिट्ठियां दर्दां दियां, (2)
लिख सतगुरु वल पाईयां

1. लै के चिट्ठिए सुनेहड़ा[1] जावीं, साडा दुःखियां दा हाल सुनावीं, (2)
दस्सीं दुःखियां दा हाल, आ के रूहां नूं संभाल,
तेरे बिना रूहां मुरझाईयां, चिट्ठियां दर्दां .....

2. अग्ग भड़की जगत विच सारे, तेरे बिना कोई ना ठारे[2], (2)
डुब्बी जाए जग सारा, देवे कोई ना सहारा,
घटां पाप दियां आ छाईयां, चिट्ठियां दर्दां .....

3. सतसंग तों जीव हटावे, काल विषयां विच भरमावे, (2)
साडा सुण लै संदेश, सुन्ना तेरे बिना देश,
छेती आ संगत देया साईयां, चिट्ठियां दर्दां .....

4. सच छुपया कूड़[3] पसारा, तेरे बाज ना कोई सहारा, (2)
तूं है चोला बदलाया, भेद अपणा छुपाया,
रूहां कढ लै जो काल फसाईयां, चिट्ठियां दर्दां .....

5. बण सावन दा चन्न आया, आ के दुःखियां दा दर्द मिटाया, (2)
तेरा नाम कृपाल, तूं 'अजायब' ते दयाल,
तेरे नाल प्रीतां लाईयां, चिट्ठियां दर्दां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सुनेहड़ा – संदेश 2. ठारे – ठंडा करना 3. कूड़ – झूठ

लिखन वालेया तूं हो के

लिखन वालेया तूं हो के, दयाल लिख दे,
मेरे हिरदे विच गुरां दा, प्यार लिख दे, (2)

1. हत्थ विच लिख दे, सेवा गुरु जी दी, (2)
मेरा तन–मन गुरां उत्ते, वार लिख दे,
मेरे हिरदे विच .....

2. जीभा ते लिख दे, नाम गुरु जी दा, (2)
मेरे कन्नां विच धुन दी, आवाज़ लिख दे,
मेरे हिरदे विच .....

3. मत्थे ते लिख दे, जोत गुरु जी दी, (2)
मेरी अक्खां विच गुरु दा, दीदार लिख दे,
मेरे हिरदे विच .....

4. इक ना लिखीं मेरे, सतगुरु दा विछोड़ा, (2)
भावें छुट जाऐ सारा, संसार लिख दे,
मेरे हिरदे विच .....

वड्डे-वड्डे दुनियां दे राजे रोंदे जांदे नाम तों बिना

वड्डे–वड्डे दुनियां दे राजे, रोंदे जांदे नाम तों बिना, (2)

1. राम रोऐ होई, सीता पराई, रावण रोया, लंक गवाई, (2)
बिना नाम तों काल दे खाजे[1],
रोंदे जांदे नाम .....

2. सन्ता नूं हासी[2] करी, दान लिद होया, भिखिया खा के, अजासुर रोया, (2)
नाम बिना चाहे, तख्त विराजे,
रोंदे जांदे नाम .....

3. मश्करी यादव, दुर्वासा नूं कर गए, रोंदे अन्याई, मौते मर गए, (2)
बाज गुरु, मर गए बेइलाजे[3],
रोंदे जांदे नाम .....

4. रेहंदा अंग–संग, कृष्ण मुरारी, पांडव रोऐ जां, बाजी हारी, (2)
चीर द्रोपतां, दे लत्थे बे हिसाबे,
रोंदे जांदे नाम .....

5. नाम दा होका[4], सावन ने लाया, काल दा जाल, कृपाल मुकाया, (2)
'अजायब' गुरु बिना, काल ना भाजे[5],
रोंदे जांदे नाम .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. खाजे – खाना 2. हासी – मजाक करना 3. बेइलाजे – बिना इलाज के 4. होका – आवाज देना
5. भाजे – भागना

वाह मेरे सावन वाह मेरे दाता

वाह मेरे सावन, वाह मेरे दाता, दु:खियां दा सहारा तूं,
घट–घट दे विच वसदा होया, फिर हैं सब तों न्यारा तूं, (2)

1. भिखारी ते राज करावै, राजा ते भिखारी हो,
खल मूर्ख[1] ते पंडित कर बो[2], पंडित ते मुकधारी[3] हो, (2)
करके झोली भिच्छिया[4] लैंदा, (2) बणदा किते दातारा तूं,
घट–घट दे .....

2. जल ते थल कर थल ते कुआँ, कूप[5] ते मेर करावै हो,
धरती ते आकाश चढ़ावै, चढ़े आकाश गिरावै हो, (2)
जिसदा जग ते कोई ना राखा, (2) आपे बणे सहारा तूं,
घट–घट दे .....

3. तेरे बाजो कोई ना खाली, हर इक विच समाणा हो,
घट–घट दे विच जोत है तेरी, क्या राजा क्या राणा हो, (2)
लीला तेरी अजब न्यारी, (2) हर थां करें इशारा तूं,
घट–घट दे .....

4. कौडे राक्षस वरगे तारे, तारया वलि कंधारी हो,
पापण गणकां तारी दाता, तेरी लीला न्यारी हो, (2)
कदे बैठदा हट्ट[6] खोलके, (2) करें कदे जमींदारा तूं,
घट–घट दे .....

5. मांवां नूं हैं पुत्र प्यारे, तैनूं भगत प्यारे हो,
भगतां दे वस हो के दाता, सारे काज सवारे हो, (2)
'अजायब' दी किस्मत जागी, (2) मिलया सावन प्यारा तूं,
घट–घट दे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. खल मूर्ख – अनपढ़ 2. कर बो – कर देता है 3. मुकधारी – गूंगा 4. भिच्छिया – भीख
5. कूप – कुआँ 6. हट्ट – दुकान

शब्द नाल जोड़ दातेया

शब्द नाल जोड़ दातेया, साडे अंदर जो शब्द प्यारा, (2)

1. विषयां दी मस्ती ने, नाम जपणे तों आण हटाया,
हो गईयां बंद अक्खियां, तेरा दर्श कदी ना पाया, (2)
सानूं ओस्से नाल जोड़ दातेया, साडे अंदर जो हो रेहा नज़ारा,
शब्द नाल जोड़ .....

2. आपे तूं शब्द बनया, आपे घट–घट दे विच बोलें,
आपे अंदर बैठ सबदे, फड़ सच दा तराजू तोलें, (2)
मन साडा मोड़ दातेया, सानूं मिल जाए शब्द सहारा,
शब्द नाल जोड़ .....

3. कदे महाराजा बणया, कदे वेस फकीरी धारे,
कदे बैठा चुप धार के, कदे फड़ दैंतां[1] नूं मारे, (2)
साडी आत्मा नूं जोड़ दातेया, साडे अंदर जो शब्द भंडारा,
शब्द नाल जोड़ .....

4. आपे चोला पा के बंदे दा, आपे दुनियां तो रखदा ऐं ओहला[2],
बिछुड़ियां आत्मा नूं, आपे मेलदा ऐं बण के विचोला, (2)
आपे भेद खोल दातेया, साडे अंदर जो शब्द प्यारा,
शब्द नाल जोड़ .....

5. आपे ताला लाया आप नूं, आपे कुंजियां[3] दा भेद बतावें,
बणया सावन कदे, कदी आ कृपाल सदावें[4], (2)
'अजायब' कोल[5] आवीं दातेया, देवीं आ के आप सहारा,
शब्द नाल जोड़ .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. दैंतां – दानव	2. ओहला – पर्दा	3. कुंजिया – चाबियां	4. सदावें – कहलवावे	5. कोल – नज़दीक

शाह कृपाल प्यारेया

शाह कृपाल प्यारेया, अटक जरा इक पल जावीं,
असीं रोदें खड़े नसीबां नूं, साडी सुण दर्दां दी गल्ल जावीं,
ओ साईं सुण दर्दां दी गल्ल जावीं, (2)

1. सोहणा घट–घट विच समाया है, ना भेद किसे ने पाया है, (2)
तैनूं दिल अपणे विच पा लया, सानूं देंदा अपणा बल जावीं,
ओ साईं सुण .....

2. तैनूं देवी–देवते चौहंदे ने, चन्न–सूरज भी शरमोंदे ने, (2)
शाह सावन देया प्यारेया, सानूं विसर जरा ना पल जावीं,
ओ साईं सुण .....

3. सच्चे नाम दा शाह भंडारी हैं, तूं दाता असीं भिखारी हैं, (2)
दिल अर्जां कर–कर हारेया, विछोड़े वाला सल्ल[1] ठावीं,
ओ साईं सुण .....

4. करे अर्ज ऐह जीव निमाणा ऐ, तेरा सच्चखंड टिकाणा ऐ, (2)
नूरी दर्शन देजा प्यारेया, हुण देर जरा ना पल लावीं,
ओ साईं सुण .....

5. ऐह दुनियां घुम्मण घेरी[2] ऐ, असीं आस रखी इक तेरी ऐ, (2)
'अजायब' देआ सहारेया, अक्खियां तो पल ना टल जावीं[3],
ओ साईं सुण .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सल्ल – दु:ख 2. घुम्मण घेरी – भूल भुलैय्या 3. टल जावीं – ओझल होना

शुभ दिहाड़ा भागां भरया

शुभ दिहाड़ा, भागां भरया, दर्शन होऐ कृपाल दे,
सतगुरु सन्त दयाल दे, (2)

1. सावन शाह दी मौज होई तां, दुनियां ते कृपाल आऐ,
मन्न के हुक्म गुरु दा सोहणा, बण के इक्क मिसाल आऐ, (2)
जग विच आ के, नाम जपा के, कट दित्ते फंद काल दे,
दर्शन होऐ कृपाल .....

2. कीते पार समुन्द्र सारे, सच्चा नाम जपाया ऐ,
सड़दी–बलदी दुनियां उत्ते, नाम दा मींह[1] बरसाया ऐ, (2)
धन–धन सतगुरु तेरा सहारा, नाम दा अमृत प्याल दे,
दर्शन होऐ कृपाल .....

3. सतसंग ला के नाम जपा के, काल दे बंधन तोड़ दित्ते,
जन्म–जन्म दे विछड़े आ के, नाल प्रभु दे जोड़ दित्ते, (2)
सिफतां[2] कर–कर, दिल नहीं रजदा[3], गुण गांवां सन्त दयाल दे,
दर्शन होऐ कृपाल .....

4. हुक्म सिंह दे घर विच सोहणा, नूर इलाही आया ऐ,
गुलाब देवी नूं देओ वधाईयां, जिसदी कुख दा जाया ऐ, (2)
गरीब 'अजायब' खुशी मनावे, दित्ता सहारा मेरे हाल ते,
दर्शन होऐ कृपाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. मींह – बरसात 2. सिफतां – तारीफ 3. रजदा – पेट नहीं भरता

सईयो नीं मैं कमली होई

सईयो नीं मैं कमली[1] होई, लोक कहन सौदाई[2],
दिल दा महरम किते नहीं दिस्सदा, फिरदी हां बौराई[3],
सइयो नीं मैं कमली होई, (2)

1. लोकी ताने–मेहणे कसदे, गल्लां दूण सवाईयां[4],
दिल मेरा रोवे कुरलावे[5], देंदा है दुहाईयां, (2)
सइयो नीं मैं .....

2. दिल दी रमज दुखां दे चरचे, किसनूं आख[6] सुणावां,
मैं तत्तड़ी[7] तेरा राह पई तकदी, आ सुण दिल कुरलाया, (2)
सइयो नीं मैं .....

3. नां मैनूं समझ ना समझे ऐह मन, मन फिरदा है बौराया,
अंदर–बाहर आंवां–जांवां, रूह वास्ता पाया, (2)
सइयो नीं मैं .....

4. तेरा सोहणा रूप देखण नूं, दिल देंदा है दुहाईयां,
लोकां भाणें ऐशां माणा, मैं बदकिस्मत किंझ[8] समझावां, (2)
सइयो नीं मैं .....

5. आ कृपाल मिल साईयां मेरे, 'अजायब' आख सुणावे,
जिस तन लागे सोई तन जाणे, होर कौन आख सुणावे, (2)
सइयो नीं मैं .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. कमली – पागल 2. सौदाई – सुध बुध खोई हुई 3. फिरदी हां बौराई – पागलों की तरह घूमना
4. दूण सवाईयां – दुगनी तिगनी 5. कुरवाले/कुरलाया – चीख चीखकर रोना 6. आख – कहना,
7. तत्तड़ी – बेचारी 8 किंझ – कैसे

सईयो नीं कृपाल गुरु जी आया ऐ

सईयो नीं कृपाल गुरु जी आया ऐ,
भाग जिन्हां दे चंगे नाम जपाया ऐ, (2)

1. अंदर प्रेम जिन्हां दे सच्चा, सतसंग नूं चल औंदे, (2)
परमार्थ दे रस्ते चलके, जमण–मरण मुकौंदे[1] नाम कमाया ऐ,
भाग जिन्हां दे .....

2. सिमरन दे विच जुड़ गए जेहड़े, लोक–लाज सब त्यागी, (2)
मालिक दे घर जाना चौहंदे, ओह रूहां वडभागी दर्शन पाया ऐ,
भाग जिन्हां दे .....

3. सतगुरु बाजों कोई ना साथी, धर्मराज दे अग्गे, (2)
लेखा ना कोई पुच्छदा आ के, सन्त शरण जो लग्गे मुक्त कराया ऐ,
भाग जिन्हां दे .....

4. कई जन्मां तो विछुड़े दाता, औक्खे हो गए डाडे[2], (2)
जद मिलया कृपाल गुरु जी, भाग जाग पऐ साडे मेल कराया ऐ,
भाग जिन्हां दे .....

5. दर–दर धक्के खाद्दे[3] दाता, किसे ना दुःख वंडाया, (2)
शाह कृपाल नूं तरस आया, 'अजायब' नूं रस्ते पाया नाम जपाया ऐ,
भाग जिन्हां दे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. मुकौंदे – खत्म करना 2. डाडे – बहुत 3. खाद्दे – खाए

साईयां तूं पार लंघावीं

साईयां तूं पार लंघावीं, छडके ना जावीं,
छडके ना जाईं वे दाता, छडके ना जावीं, (2)

1. तूं बक्शींद दाता, मैं गुनाहगार हैं, (2)
नाम दा सहारा दे के, करना तैं पार है, करना तैं पार है,
साईयां तूं पार .....

2. देखया जहान सारा, नहीं कोई अपणा, (2)
भवसागर चों दाता, तूं ही पार करना, तूं ही पार करना,
साईयां तूं पार .....

3. दया करो दाता जी, पड़दा[1] हटा दयो, (2)
दर आऐ मंगते दी, झोली खैर[2] पा दयो, झोली खैर पा दयो,
साईयां तूं पार .....

4. शाह कृपाल दाता, मंगता 'अजायब' जी, (2)
माफ करो भुल्लां सब, बक्श दयो ऐब जी, बक्श दयो ऐब जी,
साईयां तूं पार .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. पड़दा – पर्दा   2. खैर – भीख

सइयो नीं इक नूर इलाही आया ऐ

सइयो नीं इक नूर इलाही आया ऐ
नाम ओहदा कृपाल सन्त कहाया ऐ, (2)

1. जन्म–मरण दोहूं में नाहीं, जन परउपकारी आऐ, (2)
जिया दान दे भगती लायन, हर स्यों लैण मिलाऐ बाणी फरमाया ऐ,
नाम ओहदा कृपाल .....

2. करी कमाई सन्त मत दी, छडे औहदे सारे, (2)
विच परदेसां जा के उसने, तपदे हिरदे ठारे नाम जपाया ऐ,
नाम ओहदा कृपाल .....

3. जिस धरती ते जा के बैठे, ओत्थे नाम जपाया, (2)
देश देशान्तर फिर के ते, सतनाम दा चक्कर लाया अमृत प्याया ऐ,
नाम ओहदा कृपाल .....

4. सब दा प्रेमी, सब दा प्रीतम, सब दा रखणहार होया, (2)
सब मुल्कां सभ कौमां मजहबां दा, दर्दी ते दातार होया,
नाम जपा के रस्ते पाया ऐ,
नाम ओहदा कृपाल .....

5. भागां भरया पिता हुक्म सिंह, जिसदे घर विच आऐ, (2)
गुलाब देवी दे भाग जाग पऐ, जिसदी कुख तों जाऐ यश वरताया ऐ,
नाम ओहदा कृपाल .....

6. सावन शाह तों नाम खजाने, लै के खूब लुटाऐ, (2)
खुश होया 'अजायब' गरीब ते, नाम दे बूटे लाऐ सतसंग चलाया ऐ,
नाम ओहदा कृपाल .....

सईयो नीं सावन आया

सईयो नीं सावन आया, अमृत बरसाई जावे, (2)

1. नाम दा भंडारी सच्चा, रूहां दा व्यापारी सच्चा, (2)
नाम दा खजाना सच्चा, आ के वरताई[1] जावे,
सईयो नीं सावन .....

2. सावण दियां रुत्तां आईयां, नाम दियां झड़ियां लाईयां, (2)
रूहां सच्चखंड पुचाईयां, ठण्ड वरताई जावे,
सईयो नीं सावन .....

3. जिस थां[2] ते पैर टिकाया, धरती नूं भाग लाया, (2)
सतसंग करके सच्चा, नाम जपाई जावे,
सईयो नीं सावन .....

4. सच्चा भगवान आया, बंदे दा चोला पाया, (2)
नाम दी दात सच्ची, मुफ्त लुटाई जावे,
सईयो नीं सावन .....

5. सावन शाह नाम रखा के, भंडारी कृपाल बणा के, (2)
'अजायब' नूं गरीब समझ के, खजाना वरताई जावे,
सईयो नीं सावन .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वरताई – बाँटना 2. थां – जगह

सच्चा नाम जप सोहणी ज़िंदगी बणाईं

सच्चा नाम जप सोहणी ज़िंदगी बणाईं,
ऐहनूं कौडियां दे भा ना गवाईं वे, ऐह जन्म अमोला,
कई देर हुण, कई देर तों मिलया, ऐह जन्म अमोला, (2)

1. वड्डे भागां नाल तैनूं जन्म थ्याया[1] वे,
घर ना ऐ तेरा जित्थे दिल तूं लगाया वे, (2) (2)
रख लै संभाल ऐहे, लब्भणा ना सदा लई,
हत्थ आया समा, ना गवाईं वे, ऐह जन्म .....

2. नाम दा श्रृंगार, तेरी आत्मा दा गहणा ओऐ,
दुनियां रंगीली उत्ते बैठ नहीं रहणा ओऐ, (2) (2)
दरगाह दे विच, सच्चे गुरु दा सहारा,
जप नाम हुण, जिदंगी बणाईं वे, ऐह जन्म .....

3. नाम दे रंगण विच, मन तू रंगाईं ओऐ,
गुरु दे प्यार विच, दिल नूं टिकाईं ओऐ, (2) (2)
सिमरन भजन प्यार, सच्चा दिल कर,
सुरत शब्द, विच लाईं वे, ऐह जन्म .....

4. गुरु कृपाल सच्चा, परउपकारी ऐ,
दया कर जिंदगी, 'अजायब' दी संवारी ऐ, (2) (2)
रख लै तूं रक्ख[2] हुण, आ गया शरण चल,
जिंद लेखे विच, लाईं वे, ऐह जन्म .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. थ्याया – मिलया 2. रक्ख – लाज रखना

सच्ची बाणी अंदर हो रही इंसान दे

सच्ची बाणी, सच्ची बाणी, अंदर हो रही इंसान दे,
बिना गुरु तों ना औंदी पछाण वे,
सुणी वे सजणा, घड़या[1] जो भांडा है आखिर भजणां[2] (2)
सच्ची बाणी

1. बाणी धुर सच्चखंड चों आवे,
रूहां सुत्तियां नूं आण जगावे, (2)
सुणी प्यारेया, जिन–जिन जपी,
ओसे ताईं तारेया, सच्ची बाणी .....

2. ऐहे सच्चे गुरुआं दी है बाणी,
ऐह तां है रतना दी खाणी, (2)
सुण दिल लाई के, मुक्त करौंदी,
दरगाह च जाई के, सच्ची बाणी .....

3. सच्ची बाणी विच्चों अमृत झरदा,
मुर्दा रूहां नूं जिंदा करदा, (2)
अमृत जिहनुं पच जावे,
काल दे शिकंजे विच्चों बच जावे, सच्ची बाणी .....

4. कीर्तन बाणी दा अठ्ठों पहर हो रेहा,
सुणदा नहीं मन जन्मां तों सो रेहा, (2)
आया कृपाल जानी,
'अजायब' नूं जगाया ओहदी मेहरबानी, सच्ची बाणी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. घड़या – बनाया 2. भजणां – टूटना

सतगुरु कृपाल जी दर्शन दिखांदा जा जरा

सतगुरु कृपाल जी, दर्शन दिखांदा जा जरा, (2)

1. होमैं हंगतां अग्ग दे विच, जीव असीं सड़ रहे,
काल दा ऐहे देश है, डरदे असीं हां दड़ रहे[1], (2)
करके दया दातेया, मरदे बचांदा जा जरा,
सतगुरु कृपाल जी .....

2. थक्के फिर–फिर जग ते, कोई वी थां ना छडया,
तेरे दर तों बाज दाता, कोई ना दर लब्भया, (2)
मंगते दर ते खड़े तूं, खैर पांदा जा जरा,
सतगुरु कृपाल जी .....

3. जमण ते मरण दा, ऐह दुःखड़ा निवार दे,
महा बिखड़ा[2] भवसागर, बाँहों फड़ के तार दे, (2)
जाल माया मोह दा, ऐत्थों बचांदा जा जरा,
सतगुरु कृपाल जी.....

4. घट–घट दे विच वस रेहा, पर देखणा मुहाल[3] है,
तूं रब हैं रहीम हैं, पर नाम तो कृपाल हैं, (2)
रहम करके दातेया, विछड़े मिलांदा जा जरा,
सतगुरु कृपाल जी .....

5. कीते कर्मकांड सारे, धूणे वी तपा लऐ,
लब्भया ना दिल दा जानी, तीर्थां ते न्हा लऐ, (2)
कृपाल जी 'अजायब' दे, दुःखड़े मिटांदा जा जरा,
सतगुरु कृपाल जी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. दड़ रहे – कांप रहे 2. महा बिखड़ा – बहुत भयानक 3. मुहाल – मुश्किल

सतगुरु कृपाल प्यारा दुनियां नूं तारन

सतगुरु कृपाल प्यारा, दुनियां नूं तारन आ गया,(2)

1. हुक्म सिंह दे घर विच सोहणा, बण के बालक आया,
गुलाब देवी नूं दयो वधाईयां, जिसदी कुख दा जाया, (2)
बण आया जगत सहारा, दुनियां नूं .....

2. घर–घर दे विच होका देंदा, शाह कृपाल प्यारा,
सावन शाह दे खेल न्यारे, मैं हां कौण विचारा, (2)
सच लै के नाम सहारा, दुनियां नूं .....

3. चौहं कुंटा[1] विच फिर के, सच्चे नाम दा होका[2] लाया,
नूर इलाही कुल मालिक ओह, सावन बण के आया, (2)
सावन दी अक्ख दा तारा, दुनियां नूं .....

4. परविश[3] सब दुनियां दी करदा, पड़दे अंदर रह के,
लग्गा इश्क जिन्हां नूं सच्चा, प्रगट होया बह के, (2)
घट–घट दियां जानण हारा, दुनियां नूं .....

5. रब बंदे दा धार के चोला, दुनियां दे विच आया,
अंतरयामी पुरख अनामी, है कृपाल सदाया, (2)
आया कृपाल भंडारा, 'अजायब' नूं रस्ते पा गया,
सतगुरु कृपाल प्यारा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. चौहं कुंटा – चारों कोने 2. होका – आवाज 3. परविश – पालन पोषण

सतगुरु जी बक्श लयो

सतगुरु जी बक्श लयो, दर तेरे ते जिंद आई निमाणी[1], (2)

1. तेरा नाम भुलाया, दुःख उठाया, (2)
बिन नामैं भरम भुलाणी,
सतगुरु जी बक्श .....

2. आवीं मेरया साईयां, मैं आसां लाईयां, (2)
सुणी आ के दर्द कहानी,
सतगुरु जी बक्श .....

3. मैं आत्मा तेरी, जावे पेश ना मेरी, (2)
मन करदा ऐ मनमानी,
सतगुरु जी बक्श .....

4. लग्गी प्रीत ना तोड़यो, चरनी अपनी जोड़यो, (2)
सानूं बक्श दयो सच्ची बाणी,
सतगुरु जी बक्श .....

5. धन–धन कृपाल जी, दाते दीन दयाल जी, (2)
टूटी गंढी[2] 'अजायब' दी ताणी[3],
सतगुरु जी बक्श .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. निमाणी – बेचारी 2. गंढी – गांठना 3. ताणी – धागा

सतगुरु जी दर्श दिखाओ सुन के फरियाद साडी

सतगुरु जी दर्श दिखाओ, सुन के फरियाद साडी,
आए हां तेरे दर ते, सुनयो आवाज साडी, (2)

1. ऐहे जो देश पराया, काल ने फंदा पाया, (2)
ऐसे विच चित्त लगाया, थोड़ी मुनियाद साडी,
सतगुरु जी दर्श .....

2. झूठा संसार सारा, झूठा व्यवहार सारा, (2)
सच्चा जो नाम तुम्हारा, भुल्ली है याद साडी,
सतगुरु जी दर्श .....

3. होया अंधेरा सारे, पा जा तूं फेरा प्यारे, (2)
फिर दे हां मारे–मारे, सुनयो आवाज़ साडी,
सतगुरु जी दर्श .....

4. सच्चे कृपाल प्यारे, तैथों मैं जावां वारे, (2)
काल दे पिंजरे चों कर दे, आत्मा आज़ाद साडी,
सतगुरु जी दर्श .....

5. 'अजायब' जी अरज सुनावें, कृपाल दा नाम ध्यावे, (2)
तेरे ही चरना विच, लग्गी रहे याद साडी,
सतगुरु जी दर्श .....

सतगुरु माफ करीं

सतगुरु माफ करीं, मैं हां भुल्लया जीव निमाणां,
पाल[1] तेरे दर तों बिना, (2)
कोई दिस्स दा ना होर ठिकाणां,
सतगुरु माफ करीं, (2)

1. मेरियां भुल्लां नूं दाता, तूं ही माफ करना,
तेरी दया बिना, मेरा नंहिओं सरना[2], (2)
मैनूं तूं विसार ना देवीं, (2)
कोई दिस्स दा ना .....

2. कागज़ गुनाहां वाला, तूं ही दाता पाड़ना,
बुरे ते बुराई वाले, पासे तों है ताड़ना[3], (2)
मेरे ते दया करनी, (2)
कोई दिस्स दा ना .....

3. जप–तप कर्मकांड, धूणे वी तपा लए,
भोग के मैं भोग दुःख, जिंदड़ी नूं ला लए, (2)
ईलाज मेरा तैं करना, (2)
कोई दिस्स दा ना .....

4. नाम दा तूं दान दे के, करना सुधार है,
लख–लख जीवां दा तैं, करया उद्धार है, (2)
'अजायब' तेरे दर आ गया, (2)
कोई दिस्स दा ना .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. पाल – महाराज कृपाल सिंह जी 2. नंहिओं सरना – गुजारा नहीं होगा 3. ताड़ना – डांटना

सतगुरु प्यारे मेरी ज़िंदगी सवार दे

सतगुरु प्यारे मेरी, ज़िंदगी सवार दे,
कर्मां दे मारे तेरे, दर ते पुकार दे, (2)

1. तेरे ते गुरुजी मेरा, राई रत्ती[1] जोर ना,
तेरे बाजों दुनियां ते, मेरा कोई होर ना, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

2. शरण मैं तेरी आया, मैनूं ठुकराईं ना,
दुःख में बथेरे[2] पाऐ, होर तड़फाईं ना, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

3. दुखां नाल तपया तूं, दिल मेरा ठार दे,
कर्मां दे मारे तेरे, दर ते पुकार दे, (2)
सतगुरु प्यारे मेरी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. राई रत्ती – जरा सा भी 2. बथेरे – बहुत

सतगुरु प्यारे ने मन मोहया

सतगुरु प्यारे ने मन मोहया, अमृत बाणी सुणा–सुणा, (2)

1. धुर की बाणी सहज समाणी, जन्मां दे दुःख तोड़ देवे, (2)
श्रद्धा धार जो सुणदा बाणी, ओण–जाण है दित्ता मुका,
सतगुरु प्यारे ने .....

2. जिन्हां नूं सतगुरु पूरा मिलया, सच्चा शब्द सुणा देवे, (2)
वडभागी ओह गुरमुख प्यारे, अमृतबाणी जो सुणदे आ,
सतगुरु प्यारे ने .....

3. सतगुरु बाज ना संगत लगदी, संगत बाज ना भरम जाऐ, (2)
उच्चा दर्जा सच्ची संगत, सारे दित्ते भरम नट्ठा[1],
सतगुरु प्यारे ने .....

4. सतसंगत विच मालिक आ के, नाम दे छिट्टे दे रेहा, (2)
उच्चे भाग जिन्हां दे जागे, सतसंगत नित सुणदे आ,
सतगुरु प्यारे ने .....

5. वाह कृपाल दयाल प्यारे, लख शुक्राना 'अजायब' करे, (2)
अवगुणहारी सी दुःखयारी, दया करी गल लाया आ,
सतगुरु प्यारे ने .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. नट्ठा – भगा दिए

सतगुरु ने दुनियां तारी

सतगुरु ने दुनियां तारी, नाम दियां ला के झड़ियां, (2)

1. सिमरन बाजों रूह कुमलाऐ,
मेघ बिना ज्यों खेती जाऐ, (2)
तपदी होई दुनियां ठारी,
नाम दियां ला के .....

2. नाम जपने दी जुगत[1] सिखौंदा,
सिमरन दे के मुक्त करौंदा, (2)
कहे करो सच्चखंड दी तैयारी,
नाम दियां ला के .....

3. दुनियां दे दुःखड़े सिर ते उठावे,
विछड़ेया मालिक फेर मिलावे, (2)
सच्चा बण आया उपकारी,
नाम दियां ला के .....

4. वासी सच्चखंड दा तूं शाह कृपाल वे,
आ गया 'अजायब' तेरे दर ते कंगाल वे, (2)
असीं मंगते तूं दाता हैं भंडारी,
नाम दियां ला के .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. जुगत – तरीका

सतगुरु सच्चा कृपाल दातारेया

सतगुरु सच्चा,
सतगुरु सच्चा कृपाल दातारेया, रुड़या[1] जांदा सेवक,
रुड़या जांदा सेवक, आ के बाहों फड़ तारेया,
सतगुरु सच्चा, (2)

1. जिंद निमाणी भटके दर–दर, मिलया ना कोई सहारा,
कर्मकांड सब कर–कर हारी, मिलया ना कोई प्यारा, (2)
सड़दी मेरी जिंदड़ी, (2) नीं अड़ियो[2], आ के मैनूं ठारेया,
सतगुरु सच्चा .....

2. तैथों विछुड़ी आत्मा तेरी, आपे ही समझा लै,
चंगी[3] हां या माड़ी[4] हां, हुण अपने विच मिला लै, (2)
तेरा विछोड़ा साथों, (2) दाता, जावे ना सहारेया,
सतगुरु सच्चा .....

3. काल ने जाल विछाया डाडा[5], बच के ना कोई जावे,
सच्चा गुरु जिन्हां नूं मिलया, ऐत्थों आन छुड़ावे, (2)
भवसागर विच बेड़ा, (2) साडा, रुड़या जांदा तारेया,
सतगुरु सच्चा .....

4. सन्त परौणे[6] आऐ बथेरे, कोई मिलया ना दिल दा जानी,
ठंड आत्मा किसे ना पाई, गौंदे रहे जुबानी[7], (2)
'अजायब' कृपाल, (2) बिना, कौण सी विचारेया,
सतगुरु सच्चा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. रुड़या – बह जाना 2. अड़ियो – सहेलियो 3. चंगी – अच्छी 4. माड़ी – बुरी 5. डाडा – बड़ा
6. परौणे – मेहमान 7. गौंदे रहे जुबानी – जुबान से गाते रहे

सतगुरु सावन शाह अमृत बरस रेहा

सतगुरु सावन शाह, अमृत बरस रेहा, गुरु प्यारे, असीं आऐ हां तेरे दवारे, (2)

1. सच्चे नाम दियां झड़ियां लाईयां, रूहां सच्चखंड विच पुचाईयां, (2)
लख–लख वारे जावां, बलिहारे जावां सतगुरु प्यारे, असीं आऐ .....

2. सावन सच्चयां तूं चरनी ला लै, गुनाहागारां नूं आन बचा लै, (2)
कई जन्मां तो उक्के[1], तेरे दर ते झुके, करमां दे मारे, असीं आऐ .....

3. सावन बण के नूर बरसाया, कृपाल कदी बण आया, (2)
रूहां तार दयो, तपदे ठार दयो, सावन प्यारे, असीं आऐ .....

4. सावन वसया फुल्ल तां टहक रहे, समय–समय सिर आ के महक रहे, (2)
दया मेहर करो, खाली झोली भरो, जयमल जी दे सितारे, असीं आऐ .....

5. असीं दुःखिऐ हां काल ने घेरे, बक्शो सतगुरु जीव हां तेरे, (2)
असीं मैल भरे, उज्जल कौन करे, तेरे बिना प्यारे, असीं आऐ .....

6. सच्चया सावन सुण फरियादां, दास 'अजायब' करे तेरियां यादां, (2)
सतसंग सोहे[2], बारिश नाम दी होऐ, तेरे सहारे, असीं आऐ .....

7. अमृत नाम प्रवाह चलाया, सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया, (2)
असीं जीव बुरे, औजड़[3] पै के तुरे, औगुणहारे, असीं आऐ .....

8. पिता काबुल सिंह दे प्यारे, माता जीवनी दे राज दुलारे, (2)
भांबड़[4] भख रहे सी, जीव मच[5] रहे सी, आ के ठारे, असीं आऐ .....

9. करे दास 'अजायब' पुकारां, सावन कृपाल कदीं ना विसारां, (2)
मैनूं मदद तेरी, पैज[6] रख लईं मेरी, 'अजायब' दास पुकारे, असीं आऐ .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. उक्के – ऊब जाना 2. सोहे – शोभा देना 3. औजड़ – रास्ते से भटकना 4. भांबड़ – आग की लपटें
5. मच – जलना 6. पैज – लाज

सतगुरु सच्चे मेरे दाता

सतगुरु सच्चे मेरे दाता, दर तेरे ते आ गए, (2)

1. तैथों विछड़े कई जन्मां दे, भोग रहे हां फल कर्मां दे, (2)
कट दे फंद जन्म जन्मां दे, डाडे[1] हां घबरा गए,
सतगुरु सच्चे .....

2. बणे भिखारी तेरे दर दे, दया मेहर सतगुरु जी कर दे, (2)
बारिश नामदान दी कर दे, बूटे हैं मुरझा गए,
सतगुरु सच्चे .....

3. अमृत नाम प्रवाह चला दे, तपदे हिरदे ठंड वरता दे, (2)
झोली खैर[2] नाम दी पा दे, बण के भिखारी आ गए,
सतगुरु सच्चे .....

4. दास 'अजायब' अरजां करदा, कृपाल गुरु जी रख लो पड़दा, (2)
बक्शो सतगुरु तेरा वरदा[3], शरण तेरी हां आ गए,
सतगुरु सच्चे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. डाडे – बहुत 2. खैर – भीख 3. वरदा – शरणागत

सतगुरु सोहणा मेरा है कृपाल नी सईयो

सतगुरु सोहणा, मेरा है कृपाल नीं सईयो,
दीन दयाल नीं सईयो, (2)

1. कई जन्मां तों विछड़ी सी मैं, लभ्भदी प्रीतम प्यारा,
सतगुरु पूरा मिल जाऐ मैनूं, हो जाऐ पार उतारा, (2)
नीं मिल गया माहीं, मेरा नीं शहनशाही, मेरा
करे संभाल नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

2. सईयो नीं मैं दर–दर फिर के, डाडी[1] पागल होई,
दिल दा जानी कोई ना मिलया, ना सुणी अरजोई, (2)
नीं मिल गया प्यारा, मेरा नी दिली सहारा, मेरा
शब्द भंडार नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

3. जल धारे और धूणे तपके, थां–थां[2] तीर्थ न्हाया,
शिवदवाले ते मंदिर पूजे, किसे ना दुःख वंडाया, (2)
नीं मेरा माहीं, आया नीं मैनूं रस्ते, पाया
दवे दीदार नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

4. सोहणा दर्श दिखाओ सब नूं, सुण कृपाल प्यारे,
ऐबां भरी 'अजायब' दी जिंदड़ी लावो पार किनारे, (2)
नीं सच्चा सन्त, आया नीं मेरा कंत, आया
करे प्यार नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. डाडी – बहुत 2. थां थां – जगह जगह

सब पर दया करो गुरु पाल

सब पर दया करो (3) गुरु पाल[1],
सब के कष्ट हरो (3) गुरु पाल,
सब पर दया करो,

1. हम बालक तुम पिता हमारे, तुम बिन बिगड़ी कौन सवारे, (2)
तम्स[2] हरो गुरु ज्योति जगाओ, भटक रहे हैं राह दिखाओ, (2)
भुला दिया अगर तुमने ही हमको, कौन करेगा ध्यान,
सब पर दया करो .....

2. मानव बनकर हम जी पाऐं, इस धरती पर स्वर्ग सजाऐं, (2)
कटे पाप की काली कारा[3], बहे नाम की अमृत धारा, (2)
सब संगत का मान बढ़े नित, सबका हो कल्याण,
सब पर दया करो .....

3. जिसके मन में मूरत तेरी, जिसके मुँह पर तेरा नाम, (2)
पलक झपकते बन जाते हैं, उसके बिगड़े सारे काम, (2)
दया मेहर हो जाऐ तेरी, मेरा बन जाऐ काम,
सब पर दया करो .....

4. कृपाल गुरु बस इतना वर दो, तन मन धन सब निर्मल कर दो, (2)
हर दुविधा से हो छुटकारा, सब में दीखे रूप तुम्हारा, (2)
सच्चे मन से करे तुम्हारा, 'अजायब' गुणगान,
सब पर दया करो .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. पाल – महाराज कृपाल सिंह जी 2. तम्स – अंधेरा 3. कारा – छाया

सन्तां दा कर लै संग मना

सन्तां दा कर लै संग मना, चढ़ जाऐ नाम दा रंग मना
होमैं नूं अंदरों, होमैं नूं अंदरों कढणा ऐं
आदत भैड़ी[1] नूं छडणा ऐं,
सतगुरु दी शरणी, सतगुरु दी शरणी पैणा ऐं,
नाम जप के लाहा लैणा ऐं,

1. तैनूं मिलया मानस जामा ओऐ, तूं सांभ[2] लवीं इंसाना ओऐ, (2)
लाहा लैण प्राणी, (2) आया ऐ, माया ने जाल पसाया ऐ,
सतगुरु दी शरणी .....

2. कर बंदगी सोहणा बंदा ऐ, बंदगी दे बाजों गंदा ऐ, (2)
खाली ना जाऐ, (2) दम अड़्या, ऐहे चम्म[3] किसे नहीं कम अड़्या,
सतगुरु दी शरणी .....

3. सानूं नूरी दर्श दिखा दाता, साडी अक्ख दा पड़दा लाह दाता, (2)
बुरे सहण जुदाईयां, (2) दुःख अड़्या, सानूं तेरे दर्श दी भुख अड़्या,
सतगुरु दी शरणी .....

4. असीं जन्म–जन्म दे मैल भरे, उजले सतगुरु कृपाल करे, (2)
ओह तारण आया, (2) तारेगा 'अजायब' दे काज सवारेगा
सतगुरु दी शरणी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. भैड़ी – बुरी 2. सांभ – संभालना 3. चम्म – चमड़ी

साडा ना कोई वे लोको

साडा ना कोई वे लोको, असीं ना जहान दे,
सावन कृपाल बाजों, किसे नूं नहीं जाण दे, (2)

1. सावन दा नाम सच्चा, ज़िंदगी बणौंदा ऐ,
जन्मां दी मैल लग्गी, पल विच लौहंदा ऐ, (2)
दाता करयो इलाज साडा, होमैं रोग ठान दे[1],
सावन कृपाल बाजों .....

2. सतगुरु कृपाल, दातार प्यारेया,
छड के जहान सारा, तैनूं ही पुकारेया, (2)
साडे ला दयो ध्यान सिधे, सच्चखंड जाण दे,
सावन कृपाल बाजों .....

3. वड्डा काल दा पसारा, दया करके बचा लवो,
माया दे जंजाल विचों, आप ही छुड़ा लवो, (2)
आत्मा ते रहम तेरा, असीं ना पछाण दे,
सावन कृपाल बाजों .....

4. तूं हैं अलख अनामी, तेरा नूरी सरूप[2] है,
देखां मैं जिधर दिस्स दा, तेरा ही रूप है, (2)
दया कृपाल सावन दी, 'अजायब' नूं पाण दे,
सावन कृपाल बाजों .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. ठान दे – हटा दे	2. सरूप – स्वरूप

साडे मिरगां ने खेत उजाड़े

साडे मिरगां ने खेत उजाड़े, जी हर के भजन बिना, (2)

1. कुम्बल–कुम्बल[1] खाई गए, (2)
डुंड रह गए न्यारे–न्यारे, जी हर के भजन बिना,
साडे मिरगा ने .....

2. सिमरन बाजों खेती उजड़ी, (2)
कित्थे ढ़ेर लगने खलवाड़े[2], जी हर के भजन बिना,
साडे मिरगा ने .....

3. सतगुरु बाजों कोई ना साथी, (2)
सब मतलब दे प्यारे, जी हर के भजन बिना,
साडे मिरगा ने .....

4. सिमरन भजन है सतसंग तेरा, (2)
गुरु बिना सब झूठ पसारे, जी हर के भजन बिना,
साडे मिरगा ने .....

5. झूठ पसारा जगत ऐह सारा, (2)
बिना गुरु कौन पार उतारे, जी हर के भजन बिना,
साडे मिरगा ने .....

6. कहे 'अजायब' कृपाल सिमर लो, (2)
नहीं तां काल वंगारे[3], जी हर के भजन बिना,
साडे मिरगा ने .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. कुम्बल कुम्बल – नरम पत्ते 2. खलवाड़े – खलियान 3. वंगारे – ललकारना

सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया

सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया, धन कृपाल गुरु जी,

1. जप–तप कीते धूणे तपाए, जल धारे करके तीर्थ न्हाऐ, (2)
औजड़[1] जांदेयां नूं रस्ते पाया,
धन कृपाल गुरु जी .....

2. कर्मकांड सब कर–कर हारे, भेष वटाऐ न्यारे–न्यारे, (2)
तैथों बिना किसे दुःख ना वंडाया[2],
धन कृपाल गुरु जी .....

3. कोई ना जग विच रेहा सहारा, कित्थों लब्भ जाऐ प्रीतम प्यारा, (2)
आखिर तरस पीया नूं आया,
धन कृपाल गुरु जी .....

4. अंदर जावां बाहर आवां, नूर इलाही देखना चाहवां, (2)
भाग तत्तड़ी[3] दे घर नूं लाया,
धन कृपाल गुरु जी .....

5. बिरहों दा दुःखड़ा वड–वड[4] खावे, 'अजायब' दी कोई पेश ना जावे, (2)
वैद्य बण कृपाल घर आया,
धन कृपाल गुरु जी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. औजड़ – भटकना 2. वंडाया – बंटवाना 3. तत्तड़ी – बेचारी 4. वड वड – काट काटके

सावन कृपाल प्यारे

सावन कृपाल प्यारे, दर्शन दिखांदे क्यों नहीं, (2)

1. असीं हां पापी भारे, कट देवो संकट सारे, (2)
चल के हां आऐ दवारे, (2) चरनां विच लांदे क्यों नहीं,
सावन कृपाल प्यारे .....

2. फिरया संसार सारा, मिलया ना कोई सहारा, (2)
सोहणा जो नूर इलाही[1], (2) सब नूं दिखांदे क्यों नहीं,
सावन कृपाल प्यारे .....

3. हो के मैं आत्मा तेरी, बण गई हां मन दी चेरी[2], (2)
माया दे जाल ने घेरी, (2) आ के बचांदे क्यों नहीं,
सावन कृपाल प्यारे .....

4. मन दियां लहरां मोड़ो, टुट गईयां रूहां जोड़ो, (2)
पापां दा प्याला भन्न के[3], अमृत पिलांदे क्यों नहीं,
सावन कृपाल प्यारे .....

5. सतगुरु मैं जीव नकारा[4], देणा है आप सहारा, (2)
दर्द विछोड़े वाला, (2) 'अजायब' दा ठांदे[5] क्यों नहीं,
सावन कृपाल प्यारे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. इलाही – परमात्मा जैसा 2. चेरी – दासी 3. भन्न के – तोड़ कर 4. नकारा – बेकार 5. ठांदे – मिटाते

सावन केड़यां रंगां विच राजी

सावन केड़यां रंगां विच राजी, मैं की जाणां सार सावन दी, (2)

1. सावन आया फुल्ल सब खिड़ गए, काल पावर दे बूहे भिड़ गए, (2)
जित्त लई सतनाम दी बाजी, मैं की ....

2. सतसंग करके रहे समझौंदे, रूहां सच्चखंड लै जाणियां चौहंदे, (2)
नाम जप लो ना बणयो पाजी[1], मैं की ....

3. सावन शाह बण जग विच आया, जयमल सिंह दा नाम चमकाया, (2)
रोगी होमैं वाले कीते राजी, मैं की ....

4. सावन आओ दर्श दिखाओ, जन्म–जन्म दे रोग मिटाओ, (2)
'अजायब' दुःखिया हो जाऐ राजी, मैं की ....

सावन गुमदा–गुमदा गुम होया

1. सावन गुमदा–गुमदा, गुम होया,
चंगा[2] साऊ[3] ओह जीव करतार दा सी, (2)

2. मुसलमान इसाईयां ते, हिन्दुआं नूं
नाले सिक्खां नूं वी सतकार[4] दा सी, (2)

3. हर घड़ी सरबत दा, भला मंगदा
कदे किसे नूं वी ना ही मार दा सी, (2)

4. नक्श नैण सोहणे अते, उम्र वड्डी,
'अजायब' उस नूं सावन, पुकार दा सी, (2)

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. पाजी – आलसी 2. चंगा – अच्छा 3. साऊ – समझदार 4. सतकार – इज्जत करना

सावन गुरु कृपाल जी

सावन गुरु कृपाल जी, दाते दीन दयाल जी,
असीं रक्खियां आसां तेरियां, रूहां अपणियां आप संभाल जी, (2)

1. सानूं दे के सहारा बचा लवो, तुसीं अपणे चरनी ला लवो, (2)
असीं जूनां फिरियां बथेरियां[1], साडा कट दो चौरासी दा जाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

2. जाल मन उत्ते माया दा पै गया, इक तेरा ही सहारा रह गया, (2)
होर ढाईयां सब्बे ढेरियां[2], देवो आसरा दीन दयाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

3. असीं पापी अवगुणहारे जी, बुरे फस गए हां जीव विचारे जी, (2)
तूं मालिक असीं हां चेरियां[3], साडी करयो आप संभाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

4. तेरे हां पर पापां ने घेरे हां, भले हां बुरे हां पर तेरे ही हां, (2)
करे अरजां 'अजायब' प्यारेया, सुणयो सतगुरु कृपाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बथेरियां – बहुत 2. ढाईयां सब्बे ढेरियां – सारे आसरे छोड़ दिए 3. चेरियां – सेविका

सावन चन्न वरगा है दुनियां तों सोहणा

सावन चन्न वरगा, है दुनियां तों सोहणा, (2)
सावन चन्न वरगा

1. तेरे उत्तों वार, देवां जिंद जान वे,
तेरे बिना सुन्ना, दिस्स दा जहान वे, (2)
मैं तां चन्न असमानी छोहणां[1],
सावन चन्न वरगा .....

2. सावन दा ख्याल मैनूं, हर वेले रैहंदा वे,
तूं मेरा–मेरा तैनूं, सारा जग कैहंदा वे, (2)
तैनूं दिल दा हाल सुनौणा,
सावन चन्न वरगा .....

3. गोरे–गोरे मुखड़े, तिल सोहणा लगदा,
'अजायब' दा तक–तक[2], दिल नहीं रजदा[3], (2)
सावन वरगा जहान ते नहीं होंणा,
सावन चन्न वरगा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. छोहणां – शोभा देना 2. तक तक – देख देखके 3. रजदा – भरता

सावन दयालु ने रिमझिम लाई

सावन दयालु ने, रिमझिम लाई, तूं मौसम रंगीले च, आ के तां देख (2)

1. अम्बरां ते पींघां[1] ने, सत–सत रंगियां(2)तूं प्यारां दी पींघ, चढ़ा के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

2. कोयलां दे गीतां दी, सुर नूं समझ के (2) तूं इक गीत प्यारां दा, गा के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

3. खुशी स्वर्गां दी, मिल जाऊ ऐत्थे (2) तूं जुल्फां दी छां हेठ[2], आ के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

4. मैं भर–भर नैणा दे, जाम पिला दूं (2) तूं इक वारी नज़रां, मिला के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

5. मैं जीवन वी सारा तेरे, नाम लिखा दूं (2) तूं इक वारी मेरे नाल, ला के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

6. मैं पलकां च रख लां, छुपा के तैनूं (2) तूं दिल वाले वेहड़े[3] च, आ के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

7. अमृत जल अज, अम्बरां चों बरसे (2) तूं इक वारी रीझ[4], लगा के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

8. सावन महीने दी, मस्ती च आ के (2) तूं नज़रां दे तीर, चला के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

9. दाम बिना 'अजायब', हो गया तेरा (2) तूं इक वारी मैनूं, अजमा के तां देख (2)
   तूं मौसम रंगीले .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. पींघां – झूला	2. हेठ – नीचे	3. वेहड़े – आंगन	4. रीझ – प्यार से देखना

सावन ते कृपाल दियां मेहरां ने

सावन ते कृपाल दियां मेहरां ने, अज ऐह थान[1] सुहाया ऐ,
नाम दा मींह अमृत वरसा के, सोहणा बाग सजाया ऐ,
आई मौज महापुरुषां दी, जंगल विच मंगल ला दित्ता,
दुःखियां दे दर्द निवारण लई, सतसंगत राह चला दित्ता,

1. ऐह बाग सुहावे[2] सोहणे विच, चंदन दा बूटा लाया है,
रूहां दे बूटे खड़सुक[3] जो, अमृत दा पानी पाया है, (2)
ऐह सोहणा बाग सजाके ते, भुल्लयां नूं रस्ते पा दित्ता, दुःखियां दे .....

2. ऐह गल्लां दा मजबून नहीं, जो करदा ऐ झोली भरदा ऐ,
इस बे–अथाह[4] समुन्द्र विच, सच्चे नाम दा बूटा तरदा ऐ, (2)
सतसंगत दर्जा उच्चा ऐ, सच्चखंड दा भेद बता दित्ता, दुःखियां दे .....

3. ओह कुल भली परिवार भला, सावन दा ना चमकाया ऐ,
कृपाल जी जित्थे बैठ गए, धरती नूं भाग लगाया ऐ, (2)
सानूं भुल्ले भटके रोंदेयां नूं, फड़ सीधे रस्ते पा दित्ता, दुःखियां दे .....

4. दुःखियां दा दर्द निवारण लई, जद सोहणे चक्कर लाया सी,
पहाड़ां दियां कुंदरां[5] विच, सतनाम दा जाप कराया सी, (2)
धरती दे कोने–कोने ते, सच्चे नाम दा जाप करा दित्ता, दुःखियां दे .....

5. की सिफत करां मैं सावन दी, बण आया परउपकारी ऐ,
कृपाल ने कृपा करके ते, तपदी होई दुनियां ठारी ऐ, (2)
रोंदे 'अजायब' दुःखिऐ दा, कृपाल ने दर्द मिटा दित्ता, दुःखियां दे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. थान – जगह 2. सुहावे – सुहावना 3. खड़सुक – खड़े खड़े सूख जाना 4. बे अथाह – जिसका कोई सार नहीं
5. कुंदरां – गुफाएं

सावन दा बेटा सोहणा

सावन दा बेटा सोहणा, कृपाल आ गया
शब्द भंडारी सच्चा, नाम जपा गया, (2)

1. मेहरां वाले सतगुरु दाता, मेहर वरसा दयो,
तेरे दर ते भिखारी आऐ, नामदान पा दयो, (2)
सच्ची, जोत इलाही[1] सोहणा, झलक दिखा गया,
शब्द भंडारी सच्चा .....

2. मिलया ना वैद्य कोई, जन्मां दे रोग नूं,
करयो तरस कट्टो, कर्मां दे भोग नूं, (2)
साडे, दर्दां दा दारू दे के, पीड़ा हटा गया,
शब्द भंडारी सच्चा .....

3. काल ने जाल बिछाया, भरमां विच पौंदा ऐ,
जीवां नूं फड़ के[2] खोटे, कर्मां विच लौंदा ऐ, (2)
कृपाल, सोहणा सतसंग चला के, चिंता मिटा गया,
शब्द भंडारी सच्चा .....

4. आ गई हुण कूड़ मस्या, होया अंधेर है,
सावन देआ चन्नां वे तूं, लौनां क्यों देर है, (2)
कूक[3], 'अजायब' दी सुण के, कृपाल घरे आ गया,
शब्द भंडारी सच्चा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. इलाही – परमात्मा जैसी 2. फड़के – पकड़ कर 3. कूक – पुकार

सावन प्यारे बक्शन हारे

सावन प्यारे बक्शन हारे, दु:खियां दे दर्द निवार दयो, (2)

1. रूहां सड़दियां तपदियां साडियां, (2)
अमृत प्याके ठार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

2. असीं भुल्ल गए तेरे नाम नूं, (2)
साडी बिगड़ी नूं आ के सवार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

3. बेड़ा सागर विच ठिल गया[1], (2)
बनो मल्लाह ते तार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

4. दया करो नाम जपा लवो, (2)
साडी होमैं हंगता नूं मार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

5. हत्थ बन अरजां हैं मेरियां, (2)
गरीब 'अजायब' दी सार लयो, (2)
सावन प्यारे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. ठिल गया – चला गया

सावन शाह आया जग ते

सावन शाह आया जग ते, सावन शाह आया जग ते,
ओस[1] नाम दा जहाज बणाया, आओ जीहनें पार लंघना, (2)
सावन शाह आया जग ते .....

1. गुण किवें गावां ओस दे, ओह तां नूर इलाही आया,
गुरु जयमल सिंह ओसदा, ओहदा नाम आ के चमकाया, (2)
नाम लै के सतगुरु तों ओ हो, नाम लै के सतगुरु तों,
रूहां तारने दा ढंग अपनाया, आओ जीहनें .....

2. होवे खुशहाली ओस थां, झाती[2] जिस थां ते तूं पांवें,
हो जाए तेरी मेहर दातेया, दाणे भुज्जे होऐ कल्लर[3] उगांवें, (2)
ऐस फुलवाड़ी दा, आपे, ऐस फुलवाड़ी दा,
कम अपणा तैं आप चलाया, आओ जीहनें .....

3. बाग परमार्थ दा सारी, दुनियां ते आ के लाया,
बूटे ला के हर थां ते, माली फड़ कृपाल बिठाया, (2)
आप सच्चखंड जाऐ के, दाता जी, आप सच्चखंड जाऐ के,
सतसंग दा महात्म चलाया, आओ जीहनें .....

4. युगों युग चोला बदलें, तेरा नाम बक्शिंद मेहरबाना,
आ गया 'अजायब' चल के, देवीं शब्द भंडार खजाना, (2)
मेरा कोई ना नहीं जाणदा, दाता जी, मेरा कोई ना नहीं जाणदा
सब तेरा ही ऐह खेल रचाया, आओ जीहनें .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. ओस – उसने 2. झाती – झांकना 3. कल्लर – बंजर जमीन

सावन शाह जी आओ

सावन शाह जी आओ, दर्श दिखाओ,
कई जन्मां दे, रोग मिटाओ, (2)

1. दर्श बिना सानूं, चैन ना आवे,
इक–इक पल, युग बीत दा जावे, (2)
काल दी नगरी चों, आण बचाओ,
कई जन्मां दे .....

2. मैं गुनाहागार तूं, बक्शनहारा,
समझो यतीम आ, देवो सहारा, (2)
बेड़ी मझधार चों, पार लगाओ,
कई जन्मां दे .....

3. डाकु लुटेरे, फिरन चुफेरे[1],
दया करो दाता, जीव हां तेरे, (2)
काल दे पंजे चों, आण छुड़ाओ,
कई जन्मां दे .....

4. गरीब 'अजायब' दी सुण अरजोई[2],
तेरे बिना किते, मिलदी ना ढोई[3], (2)
सावन शाह जी आओ, देर ना लगाओ,
कई जन्मां दे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. चुफेरे – चारो तरफ 2. अरजोई – अर्ज 3. ढोई – आसरा

सावन-सावन दुनियां कैहंदी

सावन–सावन दुनियां कैहंदी, मैं ओहदी मस्तानी,
हसदा–हसदा दे गया मैनूं, कृपाल अमर निशानी, (2)
सावन–सावन दुनियां कैहंदी .....

1. जद दा सावन नज़री आया, पलकां विच लुकाया,
अजे तक ना भुल्ल ही सकया, ज्यों सावन मुस्काया, (2)
सावन प्यारा, सावन सोहणा, (2) सावन दिलबर जानी,
हसदा–हसदा .....

2. ओह सी इक नूरानी चेहरा, अक्खां विच समाया,
चोज़[1] निराले शान निराली, अजे समझ ना आया, (2)
नित ही रोवां नित ही गांवां, (2) लोग कहण दिवानी,
हसदा–हसदा .....

3. चिट्टी[2] दाढ़ी चौड़ा मत्था, पगड़ी बन्न सज आया,
परियां तक ओहनूं सजदे[3] करदियां, चन्न वी अम्बर चढ़ आया, (2)
दुनियां ओहनूं बाहर लब्भदी, (2) दे गया किते झकानी[4],
हसदा–हसदा .....

4. चलो नी सईयो सिरसे नूं चलिए, कृपाल ने होका[5] लाया,
सावन दयालु ने रिमझिम लाई, 'अजायब' ने भी गाया, (2)
आओ सब ही दर्शन करिऐ, (2) ओह सूरत नूरानी,
हसदा–हसदा .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. चोज़ – मौज 2. चिट्टी – सफेद 3. सजदे – सलाम 4. झकानी – भुलावा देना 5. होका – आवाज

सावन-सावन पई ढुडेंदी

सावन–सावन पई ढुडेंदी[1], सावन दिल विच वसदा,
सावन मेरा दिलबर जानी, हर साह दे विच वसदा (2)

1. कदी उदासी छा जांदी है, कदे पैर ना धरती लगदा,
रमज[2] सावन दी, समझ ना आवे, पता लगे ना रग[3] दा (2) सावन.....

2. हौंके हावियां[4] विच जिंद सुक्की[5], ते होई फिरां सुदाई[6],
दिल दा महरम किते ना दिस्सया, जद झात[7] अंदर मैं पाई (2) सावन.....

3. दर्श प्यासी वे मैं सावन, इक वारी दर्श दिखा दे,
तूं ते मैं इक्क हो जाईऐ, 'अजायब' दी प्यास बुझा दे (2) सावन.....

सुच्चे नाम दा सच्चा चढ़ा दे

सुच्चे नाम दा, सच्चा चढ़ा दे, रंग आपे,
आंवीं सोहणया, आंवीं सोहणया, कोलों[8] दी जांईं ना तूं लंघ पासे, (2)

1. साडे ऐबां[9] वल ना तक्क वे, लड़ लग्यां[10] दी रख तू पत्त वे, (2)
सुच्चे नाम दा .....

2. लेखा साड नां, गुनाहां वाला फोल वे, बंद अक्खियां तूं, साड्यिां नूं खोल वे, (2)
सुच्चे नाम दा .....

3. सानूं जन्म–मरण दा दुःख वे, बण वैद्य रोग नूं चुक वे[11], (2)
सुच्चे नाम दा .....

4. आ सुन कृपाल प्यारे, हत्थ बन्न[12] 'अजायब' पुकारे, (2)
सुच्चे नाम दा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. पई ढुडेंदी – ढूढंती रही 2. रमज – दिल की बात 3. रग – नाड़ी 4. हौंके हावियां – ठंडी आहें भरना
5. सुक्की – सूख गई 6. सुदाई – पगली 7. झात – देखना 8. कोलों – नज़दीक से 9. ऐबां – बुरी आदतें
10. लड़ लग्यां – साथ रहने वाले 11. चुक वे – उठा लेना 12. हत्थ बन्न – हाथ जोड़कर

सिमरन करिऐ नाम सिमरिऐ

सिमरन करिऐ, नाम सिमरिऐ, ज़िंदगी सफल बना लईऐ,
प्यार गुरु नाल पा लईऐ, (2)

1. सिमरन बाजों बंदे तैनूं, भैड़ियां[1] जूनां विच जाणा पवे,
मन भौंदा[2] नहीं खाना मिलदा, गंद फूस नूं खाणा पवे, (2)
सतसंग जाईऐ नाम ध्याईऐ, मन बदियां तों ठा[3] लईऐ,
प्यार गुरु नाल .....

2. धीयां–पुत्र कुटुम्ब–कबीला, बंदेया ओऐ मिठड़ा जादू ऐ,
नाम तो बिना कुछ नाल नहीं जाणा, ऐह कानून सब ते लागू ऐ, (2)
छड के सारे झगड़े झेड़े, अपणा मन समझा लईऐ,
प्यार गुरु नाल .....

3. अंग साक[4] जो भाई–भैणा, सब मतलब दे प्यारे नें,
अंत वेले कोई नेड़े ना आवे, धोखेबाज सहारे नें, (2)
आखिर वेले आऐगा सतगुरु, ओसे दा शुकर मना लईऐ,
प्यार गुरु नाल .....

4. असीं अड़ गए पुन्न–पापां दे विच, चलदा कोई ना चारा,
साडी कोई पेश ना जावे, गुरु कृपाल जी दयो सहारा, (2)
'अजायब' नूं गुरु पूरा मिलया, गीत गुरु दा गा लईऐ,
प्यार गुरु नाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. भैड़ियां – गंदी   2. मन भौंदा – मनपसंद   3. ठा – उठा   4. अंग साक – संगी साथी

सुण सिक्खा सिक्खी वाले फर्ज़ निभा लवीं

सुण सिक्खा[1] सिक्खी[2] वाले, फर्ज़ निभा लवीं,
दुनियां दे झगड़े ना, गल विच पा लवीं, (2)
सुण सिक्खा सिक्खी वाले,

1. सिक्खी दा निभोंणा तिक्खी, धार तलवार ऐ,
भुल्लया असूल, उर वार ना ओह पार ऐ, (2)
दुई ते दवैत कढ़, मन समझा लवीं,
दुनियां दे झगड़े .....

2. गुरु गोबिंद सिंह सानूं, एकता सिखा गया,
जात–पात वाले सारे, झगड़े मुका गया, (2)
दुःखी दिलां ताईं[3] देखीं, किते ना सता दवीं,
दुनियां दे झगड़े .....

3. काया दा मंदिर हरि ने, रचया जहान है,
घट–घट विच बैठा, आप भगवान है, (2)
भुल्ल नां तूं जावीं सिक्खा, मंदिर ना ढा[4] लवीं,
दुनियां दे झगड़े .....

4. ईरखा ते वैर वाले, झगड़े मुकाई जा,
भाणा मिट्ठा मन ओहदा, शुकर मनाई जा, (2)
'अजायब' आप नाम जप सच्चा, होरां नूं जपा लवीं,
दुनियां दे झगड़े .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सिक्खा – शिष्य 2. सिक्खी – शिक्षा 3. ताईं – तक 4. ढा – तोड़ना

सिर गुरु चरनां ते रखनी आं

<u>सिर गुरु चरनां ते रखनी आं</u>, (2) किते वस हो जाऐ मन मेरा,
सिर गुरु चरनां ते रखनी आं, (2)

1. गुरु दे प्यार विच, सगन मनौंदी आं[1], मैं सगन मनौंदी आं, (2)
मेरे, घर विच पांवीं फेरा,
सिर गुरु .....

2. जाग पैण[2] भाग मेरे, घर विच आ जावें, घर विच आ जावें, (2)
जाऐ, चुकया रैण[3] अंधेरा,
सिर गुरु .....

3. वेहड़ा[4] मेरा सुन्ना, किते आ के फेरा पा जांवी, आ के फेरा पा जांवी, (2)
मन, वेहड़ा करां साफ बथेरा[5],
सिर गुरु .....

4. नाम दा भंडारी आ के, नाम वरता गया[6], नाम वरता गया, (2)
कीता, सतसंग शाम–सवेरा,
सिर गुरु .....

5. रोवे रूह 'अजायब' दी तूं, आजा कृपाल वे, आजा कृपाल वे, (2)
तेरा, सच्चखंड विच है बसेरा[7],
सिर गुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सगन मनौंदी आं – खुशी मना रही हूँ 2. जाग पैंण – जाग जाएं 3. रैण – रात 4. वेहड़ा – आंगन
5. बथेरा – बहुत 6. वरता गया – बांट गया 7. बसेरा – निवास

सोहणा-सोहणा मुखड़ा ते

1. सोहणा–सोहणा मुखड़ा ते सोहणी–सोहणी खिच्च[1] वे,
रूह पई उड्डे हवा दे विच वे, (2)
आ सचमुच, (2) दर्श दिखा दाता, मैं दिल दे दुःखड़े फोलां,
इक वारी, आ इक वारी वेहड़े वड़[2] दाता, मैं वांग[3] पपीहे बोलां,
इक वारी, आ इक वारी, अक्खियां च वस दाता
मुड़ फेर कदी ना खोलां .....

2. वारो वारी कई–कई जन्मां च पई मैं,
जागे मेरे भाग तेरे चरनां च आई मैं, (2)
हुण रख लो, आ रख लो रख लो रक्ख[4] दाता,
मुड़ फेर कदी ना रोलां[5],
इक वारी आ इक वारी .....

3. सच्चा सुच्चा सावन ते सच्चा कृपाल वे,
आ गया 'अजायब' तेरे दर ते कंगाल वे, (2)
करां लख–लख, करां लख–लख वारी यश दाता,
तेरे दर ते जिंदड़ी घोलां[6],
इक वारी आ इक वारी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. खिच्च – आकर्षण	2. वेहड़े वड़ – आंगन में आ	3. वांग – तरह	4. रक्ख – लाज रखना
5. रोलां – मिट्टी में मिलाना	6. घोलां – न्यौछावर करना		

सोहणा सावन शाह दा भंडारा आ गया

सोहणा सावन शाह दा, भंडारा आ गया, (2)
ओह दुःखियां दा बण के, सहारा आ गया, (2)
सोहणा सावन शाह दा, भंडारा आ गया,

1. जित्थे आ गई जोत निराली ऐ,
ओह धरती नसीबां वाली ऐ, (2)
नूरी दर्शन दा, चमकारा[1] पा गया, सोहणा .....

2. कुल मालिक बंदा बण आया ऐ,
विच अपना आप छुपाया ऐ, (2)
कीता प्रेम जिसने, ओह नज़ारा पा गया, सोहणा ....

3. ओह दुःखियां दे दर्द वंडौंदा[2] रेहा,
सच्चे प्रेमियां नूं झलक दिखौंदा रेहा, (2)
आई मौज ओत्थे, अमृत फुहारा ला गया, सोहणा ....

4. तेरे प्यार दियां गल्लां दिल विच वसियां,
तेरे नूर दियां किरणां रूह दे विच धस्सियां, (2)
सच्चे नाम दा तूं माहीं वे, इशारा ला गया, सोहणा ....

5. गांवां दिन–रात तेरे उपकार दातेया,
रूहां भवसागरों कर पार दातेया, (2)
तेरे दर ते 'अजायब', विचारा आ गया, सोहणा ....

कठिन शब्दों के अर्थः-

1. चमकारा – चमक 2. वंडौंदा – बंटवाता रहा

सोहणा शाह कृपाल प्यारा लब्भया

सोहणा शाह कृपाल, प्यारा लब्भया[1],
मैनूं तेरे बिना कोई ना सहारा लब्भया, (2)

1. तेरी याद विच साईयां रहे, झलदे[2] जुदाईयां, (2)
तेरी भाल विच कोई ना, किनारा छडया,
मैनूं तेरे बिना .....

2. सारे तीर्थ न्हाए, होर धुणे वी तपाऐ, (2)
चोले भगवे वी पाऐ, ना प्यारा लब्भया,
मैनूं तेरे बिना .....

3. जग ढूंढ लिया सारा, मिले कोई ना सहारा, (2)
तेरी भाल[3] विच कोई ना, दवारा छडया,
मैनूं तेरे बिना .....

4. 'अजायब' यश तेरा गाए, सच्चा नाम ध्याऐ, (2)
तेरा तक्कया[4] सहारा, जग सारा छडया,
मैनूं तेरे बिना .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. लब्भया – मिला 2. झलदे – झेलना 3. भाल – खोज 4. तक्कया – देखना

हार रानी दे गले विच फेर पैंदा

1. हार रानी दे गले विच फेर पैंदा, मोती सीने च सल्ल[1] पवाऐ पहलां,
पड़दा कपड़े दा तन ते फेर होवे, रूं[2] अपणा आप पंजाऐ[3] पहलां,

2. गहणा सोभदा फेर तन सुंदरी दे, सोना भट्ठियां विच ता खाऐ[4] पहलां,
भांडा किसे दी प्यास बुझाऐ पिच्छों,अपणे आप नूं अग्ग विच पाऐ पहलां,

3. मिट्ठा मुँह हुंदा कई चिरां पिच्छों, गन्ना अपणा रस कढ़वाऐ पहलां,
महल माड़ियां[5] लग्गदे फेर चंगे, इट् अपणा तन सड़ाऐ पहलां,

4. पलंग तख्त उच्चे शोभा फेर पौंदे, लकड़ी अपणा तन चिराऐ पहलां,
करे जग ते परउपकार पिच्छों, अपणे घर दी अग्ग बुझाऐ पहलां,

5. पहरा किसे दे घर दा फेर देवे, अपणें घर दा माल बचाऐ पहलां,
गुरु दा सिक्ख है तां बण दा, शीश तली[6] दे उत्ते टिकाऐ पहलां,

6. किसे ताईं उपदेश ओह फेर देवे, बंदा अपणा मन समझाऐ पहलां,
करे सच्चा प्रचार ओह फेर मगरों, पँजां डाकुआं ते काबू पाऐ पहलां,

7. बंदा काल दे जाल तो तां बचदा, सच्चे गुरु दी शरण विच जाऐ पहलां,
स्टेज गुरु दी उत्ते ओह फेर पहुँचे, अंदर अमृतसर विच न्हाऐ पहलां,

8. होमैं हंगतां कढ के बाहर सिट्टे[7], अंदर गुरु लई वेहड़ा बणाऐ पहलां,
घट–घट विच मालिक फेर दिस्स दा, अंदरों दुई–दवैत हटाऐ पहलां,

9. डर मरने दा सदा ही मुक जाऐ जी, जीवंदेआं ही मर जाऐ पहलां,
फुरने[8] दुनियां दे अंदरों तां जांदे, शब्द गुरु दा अंदर टिकाऐ पहलां,

10. कृपा गुरु कृपाल दी तां होवे, मन मंदिर नूं साफ कराऐ पहलां,
'अजायब' गल्लां सच्चखंड दियां फेर बोले, मुँह सच्चखंड वाला बणाऐ पहलां,

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. सल्ल – छेद	2. रूं – रुई	3. पंजाऐ – पींजना	4. ता खाऐ – ताप खाना	5. माड़ियां – मकान
6. तली – हथेली	7. सिट्टे – फेंके	8. फुरने – ख्याल		

हे सखी, सुन री सखी

हे सखी, सुन री सखी, तोहे, दिल की बात बताऊं री,
पीया मिले तो मैं नाचूं गाऊं, नहीं मिले तो मर जाऊं री, (2)

1. दुःख मैं देखूं रोज ही रोऊं, मनुआ बड़ा कसाई री,
मन पापी मोहे बहुत सतावे, कैसे बचयो जाई री, (2)
तोहे सखी मैं पूछूं हैं री, (2) तूं क्यों ना करे सुनाई री,
हे सखी .....

2. पाँचों विषयों ने मुझको घेरा, इनसे छूट ना जाई री,
एक छोड़े तो दूसरा पकड़े, मैं हो गई दुःखदायी री, (2)
सुन सखी कोई राह बता री, (2) हो जाऊं सुखयारी री,
हे सखी .....

3. सिमरन भजन करूं कभी ना, मैं बातन स्यों वडयारी री,
मान–बड़ाई मेरा पीछा ना छोड़ें, भारी रोक लगाई री, (2)
मान सखी अब मान भी जा री, (2) तैं, कैसे बात बनाई री,
हे सखी .....

4. अब सुन सखी प्यारी मेरी, तेरा दुःख ना, देखा जाई री,
मान कहा अपने गुरु का, श्रद्धा भाव बनाई री, (2)
वे सारे तेरे कष्ट हरेंगे, (2) दयावान सुखदायी री,
हे सखी .....

5. कृपाल गुरु मेरे पीया सखी री, सावन लाल प्यारी री,
उनकी दया अपार सखी री, दुनियां माने सारी री, (2)
मन मेरा उन चरनन् लागा, (2) मौज बड़ी वरताई री,
हे सखी .....

6. पीया–पीया मैं पिया–पिया गाऊं, पीया की बन जाऊं प्यारी री,
पीया बसे मेरे हिऐ सखी री, पीया की बात न्यारी री, (2)
दुनियां की परवाह ना सखी री, (2) दुनियां हुई पराई री,
हे सखी .....

7. 'अजायब' सखी तेरी पगली होई, पीया–पीया की रट लाई री,
तूं भी मान सखी मेरा कहना, उन सा और ना कोई री, (2)
फिर ना कहना कहा नहीं था, (2) दिल की बात बताई री,
हे सखी .....

8. अब चाहे तू नाचे गाए, जैसे तेरा दिल चाहे री,
वे तो तेरे संग सदा री, पल ना छोड़ के जाऐ री, (2)
'अजायब' ने देखा, तूं भी देख री, (2) काहे को पछताऐ री,
हे सखी .....

हमारे प्यारे सतगुरु जैसा

हमारे प्यारे सतगुरु जैसा, हमने न कोई और देखा, (2)
वे तो महान हैं मेरे सतगुरु, (2) उनसा महान न और देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

1. वे हैं दोनों जहाँ के मालिक, दुनियां के दिल में बसने वाले,
हर घट के ज्ञाता हैं वे ज्ञानी, दिलों की बातें जानने वाले, (2)
शब्द स्वरूप है रूप उनका, (2) रूप जो हमने आंखों से देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

2. देखे तो देखने वाला देखे, देखे तो देखता ही रह जाऐ,
प्यारी मूरत प्यारी सूरत, देखने वाला उनका हो जाऐ, (2)
मनमोहक मन को भाने वाला, (2) मनभावन हम सबने देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

3. देखा तो शायद हर नज़र ने देखा, अपने–अपने ख्याल से,
जिसने भी उनको प्यार से देखा, निकला वो इस मझधार से, (2)
वे तो हैं इक महान नाविक, (2) भरकर नाव ले जाते देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

4. वह नाविक गुरु कृपाल है प्यारे, सावन प्यारे का प्यारा,
कृपा का सागर कृपाल है प्यारे, 'अजायब' को जान से भी प्यारा, (2)
वे तो अति सुंदर सलोने, (2) उनका हुआ जिसने देखा,
हमारे प्यारे सतगुरु .....

हे सावन हे कृपाल

हे सावन हे कृपाल, (2)

1. दुर्गुंण क्या है यह मत देखो, दया करो प्रभु दिशा दिखाओ,
तुम तो पारस मणि हो सतगुरु, इस लोहे को स्वर्ण बनाओ, (2)
जुड़ा रहे मन चरन कमल से, इतना सा कर दो उपकार,
हे सावन .....

2. सब में प्रेम भावना भर दो, नफरत का गुरु नाम मिटा दो,
सब के संकट काटो सतगुरु, ताप–शाप संताप मिटा दो, (2)
भक्तिदान दे शक्तिदान दे, भर दो भक्ति का भंडार,
हे सावन .....

3. डगमग–डगमग डोल रही है, इस नईया को पार लगाओ,
मैं हूँ पतित, पतित पावन तुम, अपने नाम की लाज रखाओ, (2)
जन्म–जन्म के बंधन काटो, कब से पड़ा हुआ हूँ द्वार,
हे सावन .....

4. तेरी चिंता राम करेंगे, तज दे चिंता सारी,
गुरु का सेवक हो जाता है, हर सुख का अधिकारी, (2)
'अजायब' कृपाल का नाम सत्य है, सपना है संसार,
हे सावन .....

हे दयाल गुरु कृपाल रक्खियां आसां तेरियां

हे दयाल गुरु कृपाल, (2)
रक्खियां आसां तेरियां, (2)

1. तेरे जैसा कोई होर ना, (2)
मेरे जेहियां[1] बथेरियां[2], (2)
हे दयाल .....

2. जलधारे कर–कर हार गए, (2)
धुणियाँ तपाईयां बथेरियां, (2)
हे दयाल .....

3. दिन–रातीं रोवां याद करां, (2)
छेती[3] आ मिल लाईयां क्यों देरियां, (2)
हे दयाल .....

4. तेरे मिलन दी खातिर सोहणया, (2)
निंदया सुणियां बथेरियां, (2)
हे दयाल .....

5. हुण जागी जिंद 'अजायब' दी, (2)
आखिर सोहणे ने पाईयां फेरियां[4], (2)
हे दयाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. जेहियां – जैसी 2. बथेरियां – बहुत 3. छेती – जल्दी 4. पाईयां फेरियां – फिर से आया

होऐ के दयाल कृपाल घरे आ गया

होऐ के दयाल, कृपाल घरे आ गया,
दया कर आप सच्चा, नाम जपा गया, (2)
होऐ के दयाल

1. नाम तों बगैर दाता, फिरदी मैं सखणीं[1], (2)
तेरे हत्थ डोर साडी, तूं ही पत्त[2] रखणीं, (2)
आत्मा ऐह तेरी ते, तरस तैनूं आ गया,
दया कर आप .....

2. विछड़ी मैं तैथों तेरे, वास्ते मैं पौंदी आं, (2)
औगुणां दी भरी तैथों, भुल्लां बक्शोंदी आं, (2)
आण–जाण वाला गेड़ा[3], सदा ही मुका गया,
दया कर आप .....

3. तुसीं बक्शिंद सानूं, पापियां नूं तार दयो, (2)
दुःखी दिलां ताईं[4] आ के, पल विच ठार दयो, (2)
कर सतसंग सच्चा, रस्ता चला गया,
दया कर आप .....

4. जल–थल विच सारा, तेरा ही पसारा है, (2)
घट–घट विच बैह के, देखदा नजारा है, (2)
ज़िंदगी 'अजायब' दी ते, ठण्ड वरता गया,
दया कर आप .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सखणी – खाली	2. पत्त – इज्जत	3. गेड़ा – चक्कर	4. दिलां ताईं – दिल तक

होया सुख ओहले कौण दुःख फोले

होया सुख ओहले[1], कौण दुःख फोले,
आ सुण कृपाल प्यारेया, होर सुणावां किहनुं मैं, (2)

1. कदम–कदम ते अमृत नूरी, सतगुरु ने बरसाया,
दिल मेरा वस करने खातिर, गुरु कृपाल जी आया, (2)
सच्चा प्यार होवे, बेड़ा पार होवे,
आ सुण कृपाल .....

2. मन मोहणी है सूरत ओहदी, दिल नूं खिचदा नेड़े[2],
जे कोई उसदा बण के आवे, कटदा झगड़े झेड़े, (2)
तैनूं तकदी[3] रवां, दुःख दस्स दी रवां,
आ सुण कृपाल .....

3. ना मैं सोहणी ना गुण पल्ले[4], तूं मेरा कंत प्यारा,
धक्के खांदी दर–दर फिरदी, तक्कया अंत सहारा, (2)
तैनूं याद करां, फरियाद करां,
आ सुण कृपाल .....

4. रब बंदे दा धार के चोला, दुनियां दे विच आया,
घट–घट दे विच वसदा होया, अपना आप छुपाया, (2)
'अजायब' बोल रेहा, दुःख फोल रेहा,
आ सुण कृपाल .....

कठिन शब्दों के अर्थः-

1. ओहले – ओझल	2. नेड़े – निकट	3. तकदी – देखना	4. पल्ले – पास

अनहद की धुन प्यारी साधो

[ब्रह्मानंद जी]

अनहद की धुन प्यारी साधो, अनहद की धुन प्यारी रे, (2)

1. आसन पदम लगाकर करसे, मूंद कान की बारी रे, (2)
झीनी धुन में सुरत लगावो, होत नाद झनकारी रे,
अनहद की धुन .....

2. पहले–पहले रल मिल बाजे, पीछे न्यारी–न्यारी रे, (2)
घंटा शंख बांसुरी वीणा, ताल मृदंग नगारी रे,
अनहद की धुन .....

3. दिन–दिन सुनत नाद जब बिकसे, काया कम्पत सारी रे, (2)
अमृत बूंद झरे मुख मांही, योगी जन सुखकारी रे,
अनहद की धुन .....

4. तन की सुध सब भूल जात है, घट में होए उजयारी रे, (2)
'ब्रह्मानंद' लीन मन होवे, देखी बात हमारी रे,
अनहद की धुन .....

अपना कोई नहीं है जी

[कबीर साहब]

अपना कोई नहीं है जी, कि अपना सतगुरु प्यारा जी, (2)

1. ना कर बंदे मेरी–मेरी, दम दा की भरवासा, (2)
जीवन तेरा ऐसे जैसे, पानी विच पतासा,
अपना कोई नहीं .....

2. ना कर बंदे खुदी तुकब्बर[1], सिर पे मौत निमानी, (2)
इक दिन पगले ऐसा आवे, तू डूबे बिन पानी,
अपना कोई नहीं .....

3. माटी ओढ़ना माटी पहनना, माटी का सिरहाना जी, (2)
इक दिन पगले ऐसा आवे, माटी में मिल जाना जी,
अपना कोई नहीं .....

4. जब तक तेल दीप में बाती, जगमग–जगमग हो रही, (2)
जल गया तेल निखुट गई बाती, लाश सिवयों[2] को तोर लई[3],
अपना कोई नहीं .....

5. पाटा चोला हुआ पुराना, कब लग सीवे दर्जी, (2)
दिल का महरम[4] कोई ना मिलया, सब मतलब के गरजी ,
अपना कोई नहीं .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. तुकब्बर – अहंकार 2. सिवयों – श्मशान 3. तोर लई – भेजी गई 4. महरम – हमराज

अपने सेवक की आपे राखै

[गुरु बानी]

अपने सेवक की आपे राखै, आपे नाम जपावै, (2)

1. यहं–यहं काज कीर्त सेवक की, (2)
तहां–तहां उठ धावै, (2)
अपने सेवक .....

2. निकटी होऐ दिखावै सेवक को, (2)
जो–जो कहे ठाकुर पह सेवक, (2)
तत्काल होऐ आवै,
अपने सेवक .....

3. तिस सेवक के हों बलिहारी, जो अपने प्रभ भावै, (2)
तिसकी सोऐ सुनी मन हरया, (2)
तिस, 'नानक' परसन आवै,
अपने सेवक .....

असीं मैले सतगुरु जी

[गुरु अर्जुनदेव जी]

असीं मैले सतगुरु जी, ऊजल कर दे ऊजल कर दे, (2)

1. हम मैले तुम ऊजल करते, (2)
हम निर्गुण तू दाता, ऊजल करदे .....

2. हम मूर्ख तुम चतुर स्याने, (2)
तू सर्वकला का ज्ञाता, ऊजल करदे .....

3. हम ऐसे तू ऐसा माधो, (2)
हम ऐसे तू ऐसा, ऊजल करदे .....

4. हम पापी तुम पाप खंडन, (2)
नीको ठाकर देसा, ऊजल करदे .....

5. तुम सब साजे साज निवाजे, (2)
जीओ पिंड ते प्राणा, ऊजल करदे .....

6. निर्गुणहारे गुण नहीं कोई, (2)
तुम दान दयो मेहरबाना, ऊजल करदे .....

7. तुम भला करो हम भलो ना जाने, (2)
तू सदा–सदा दयाला, ऊजल करदे .....

8. तुम सुख दाई पुरख विधाते, (2)
तुम राखो अपने वाला, ऊजल करदे .....

9. तुम निधान अटल सुलतान, (2)
जिआ जंत सब जांचे, ऊजल करदे .....

10. कहो 'नानक' हम एहो हवाला, (2)
राख संतन के पाछे, ऊजल करदे .....

आई रब्बी जोत अज

[पाठी जी]

आई रब्बी जोत अज, खुशियां मना लईऐ,
मिट्ठी ओहदी बानी, मिट्ठे गीत ओहदे गा लईऐ, (2)
आई रब्बी जोत अज,

1. मन मोहनी जोत, लाल सिंह दे घर आई है,
माता हरनाम कौर दा, नाम रोशनाई है, (2)
फक्कर[1] अजायब दे दर्शन पा लईऐ, मिट्ठी ओहदी .....

2. मिट्ठी–मिट्ठी धुन अंदरों, सब नूं सुनौंदा ऐ,
विछुड़ियां रूहां, मालिक नाल मिलौंदा ऐ, (2)
दुई ते दवैत छड मन समझा लईऐ, मिट्ठी ओहदी .....

3. कटदा कलेश, जेहड़ा शरण ओहदी औंदा ऐ,
कर सतसंग जमण–मरण, मुकौंदा ऐ, (2)
श्रद्धा विश्वास असीं अपना पका लईऐ, मिट्ठी ओहदी .....

4. भागां भरया दिन, भागां नाल आया ऐ,
आई रब्बी जोत सोहणा, दर्शन पाया ऐ, (2)
'पाठी जी' रल मिलके खुशी मना लईऐ, मिट्ठी ओहदी .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. फक्कर – फकीर

आ सजणा देखवां दर्शन तेरा

[गुरु बानी]

आ सजणा देखां दर्शन तेरा, तूं घर आ सजणा, (2)

1. आओ सजणा देखां दर्शन, (2)
देखां दर्शन तेरा,
तूं घर आ .....

2. घर अपनेड़े खड़ी मैं तक्कां, (2)
मैं मन चाओ घनेरा,
तूं घर आ .....

3. चाओ घनेरा सुण प्रभ मेरा, (2)
मैं तेरा भरवासा,
तूं घर आ .....

4. दर्शन देख भई नैह केवल, (2)
जन्म–मरण दुःख नासा,
तूं घर आ .....

5. सगली जोत जाता तूं सोई, (2)
मिलया भाए सुभाए,
तूं घर आ .....

6. 'नानक' साजन को बल जाईऐ, (2)
साच मिले घर आऐ,
तूं घर आ .....

आओ रल मिल दर्शन करिऐ

[पाठी जी]

आओ रल मिल दर्शन करिऐ, आ गई इक जोत रब दी, (2)

1. जाण ना सकिऐ ओह सर्व निवासी,
नूर इलाही ओह घट–घट वासी, (2)
करे रक्खया संभाल सारे जग दी, आ गई इक .....

2. मन दे मंदिर साफ जिन्हां दे,
बैठा ओह अंदर आप तिन्हां दे[1], (2)
जोत ओसे मंदिर विच जग दी, आ गई इक .....

3. जोत रूहानी चंदन महके,
संगत फुलवाड़ी विच फुल्ल पया टहके, (2)
जोत सबनूं प्यारी लग दी, आ गई इक .....

4. कदी सावन शाह नाम रखाया,
कदे कृपाल दा रूप वटाया, (2)
कदी विच अजायब दे फबदी[2], आ गई इक .....

5. पिता लाल सिंह ने खुशियां मनाईयां,
माता हरनाम कौर नूं देओ वधाईयां, (2)
'पाठी जी' मन लो वधाई सब दी, आ गई इक .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. तिन्हां दे – उनके 2. फबदी – जंचना

आ सजणा चल

[गुरमेल सिंह]

आ सजणा चल, शगन मनाईऐ, (2)
रलके[1] मनाईऐ सारे, हसिऐ ते गाईऐ, आ सजणा .....

1. जन्म दिहाड़ा, अजायब सोहणे सजण दा,
भागां नाल आया दिन, साडे हसण दा, (2)
खुशियां च सारे कैहंदे, जश्न मनाईऐ, आ सजणा .....

2. जन्म दिहाड़ा तेरे, नाल सोहणा लगदा,
देखो नीं सईयो मेरा, सोहणा गुरु फब्बदा[2] , (2)
सारे रल मिल अज, खुशियां मनाईऐ, आ सजणा .....

3. सामने तूं बैठा प्यारे, बहुत सोहणा लगदा,
तेरे बगैर जीणा, चंगा नहियों लगदा, (2)
सारे असीं चाहिए दिन, ऐदां[3] ही मनाईऐ, आ सजणा .....

4. गुरु कृपाल बड़ा, खुश अज लगदा,
माता–पिता नूं दिन, शोभा दिंदा लगदा, (2)
वंडदा रहे दया कोई, बाकी न बचाईऐ, आ सजणा .....

5. अजायब 'गुरमेल' ऐस, लायक ता नी लगदा,
जीव निमाणा वस, ओहदे वी नी लगदा, (2)
मन सजणा ओहदी, जिंदगी बणाईऐ, आ सजणा .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. रलके – मिलकर 2. फब्बदा – जंचना 3. ऐदां – इसी तरह

आजा प्यारे सतगुरु आजा

[सन्त कृपाल सिंह जी]

आजा प्यारे सतगुरु आजा, अपनी सूरत मैनूं वखा जा[1], (2)

1. सीधी सादी सूरत तेरी, प्यारी–प्यारी मूरत तेरी, (2)
चेहरा रब दा जलवा दिस्से, दिल नूं लुभावन वाले आजा,
आजा प्यारे .....

2. सोहणा मत्था चिट्टी[2] पगड़ी, नूर चमके हर लिव लगड़ी[3], (2)
अक्खियां प्रेम प्याले भरियां, भरोटे[4] नूर पलटे आजा,
आजा प्यारे .....

3. जुल्फां तेरियां रेशम तारां, नूर इलाही दियां देण चमकारां, (2)
इक–इक वाल सिर दे उत्तो, दोवें आलम वारां आजा,
आजा प्यारे .....

4. मुखड़ा सुहावा सहज धुन बानी, सुण–सुण पावां कंत निशानी, (2)
रसीले बैण[5] अति मिठ्ड़ी बोली, मिटावन तपत हिरदे दी आजा,
आजा प्यारे .....

5. सुच्ची दाढ़ी छाती ते आवे, बग्गी[6] हो–हो नूर बरसावे, (2)
लाली नाम दी भा पई मारे, गरीबी सिखावन वाले आजा,
आजा प्यारे .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. वखा जा – दिखा जा 2. चिट्टी – सफेद 3. लगड़ी – लगना 4. भरोटे – भौहें 5. बैण – वचन
6. बग्गी – सफेद

आज खुशी दिन आया जी

[गुरु बानी]

आज खुशी दिन आया जी, मनाया संगतां ने, (2)

1. अविचल नगर गोबिंद गुरु का, (2)
नाम जपत सुख पाया जी,
मनाया संगतां ने .....

2. मन इच्छे से ही फल पाऐ, (2)
करते आप वसाया जी,
मनाया संगतां ने .....

3. आप वसाया सर्व सुख पाया, (2)
पुत भाई सिक्ख बिगासे जी,
मनाया संगतां ने .....

4. गुण गावे पूरण परमेश्वर, (2)
कारज आया रासे जी,
मनाया संगतां ने .....

5. आप स्वामी आपे राखा, (2)
आप पिता आप माया जी,
मनाया संगतां ने .....

6. कहो 'नानक' सतगुरु बलिहारी, (2)
जिन ऐहो थान सुहाया जी,
मनाया संगतां ने .....

आओ सईयो दर्शन करिऐ

[पाठी जी]

आओ सईयो दर्शन करिऐ, सावन दी अक्ख दे तारे दा,
गुरु कृपाल दुलारे दा, अजायब सन्त प्यारे दा, (2)

1. रल मिल याद मनोंदियां सईयां, नाम तेरे दियां धुम्मां पईयां[1], (2)
अरशां तों परियां आ गईयां, स्वागत कर दियां ऐस भंडारे दा,
अजायब सन्त प्यारे .....

2. सावन कृपाल सन्त प्यारे, अजायब हैं राज दुलारे, (2)
तपदे हिरदे आके ठारे, नाम रोशन कृपाल दुलारे दा,
अजायब सन्त प्यारे .....

3. सतसंग करके शुकर मनावे, नामदान दा मींह बरसावे, (2)
नाम गुरु दा हरदम गावे, गुण गाया ना जाऐ दातारे दा,
अजायब सन्त प्यारे .....

4. भागां भरया दिन अज आया, शुभ दिहाड़ा आण मनाया, (2)
मिल के संगतां हरि यश गाया, कृपाल प्यारे दा,
अजायब सन्त प्यारे .....

5. पिता लाल सिंह ने लाड लडाया,
माता हरनाम कौर ने कुख तों जाया, (2)
कृपाल गुरु जी ने चरनी लाया,
खुशियां भरया भजन, 'पाठी जी' विचारे दा,
अजायब सन्त प्यारे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. धुम्मां पईया – धूम मचना

इक जोत इलाही आई ऐ

[पाठी जी]

इक जोत इलाही आई ऐ, दु:खियां दा बणया सहाई ऐ, (2)

1. ओह सावन दी अक्ख दा तारा ऐ,
ओह दु:खियां दे दिलां दा सहारा ऐ, (2)
जिस नाम दी धाक बिठाई ऐ, इक जोत .....

2. ओह गुरु कृपाल दा चन्न[1] अड़ियो[2],
ओहदे माता–पिता हैं धन अड़ियो, (2)
उस कीती सच दी कमाई ऐ, इक जोत .....

3. आओ सोहणे दा दर्शन पा लईऐ,
जीवन अपना सफल बणा लईऐ, (2)
होवे दरगाह विच सहाई ऐ, इक जोत .....

4. नाम जपने दी जुगत सिखौंदा ओह,
दौलत नाम दी मुफ्त लुटौंदा ओह, (2)
प्रीत गुरु चरनां विच लाई ऐ, इक जोत .....

5. हरनाम कौर दी कुख दा जाया ऐ,
लाल सिंह दा अजायब सदाया ऐ, (2)
संगत नूं 'पाठी जी' वल्लों वधाई ऐ, इक जोत .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. चन्न – बेटा 2. अड़ियो – सखियो

इक दर्दमंद दिल की हालत

[परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज]

इक दर्दमंद दिल की, हालत तुम्हें बताऐं,
क्या चीज़ है मोहब्बत, आओ तुम्हें सुनाऐं, (2)

1. अफशाऐ राज़े उल्फत, तौहीन–ए–आशिकी है, (2)
मिट जाऐं लब पे लेकिन, (2) क्यों नाम उनका लाऐं,
इक दर्दमंद दिल .....

2. दुनियां से क्या गर्ज़ है, दुनियां से पूछना क्या, (2)
मैं तुझसे पूछता हूं, (2) क्या चीज़ हैं वफाऐं,
इक दर्दमंद दिल .....

3. बीमार ने ये कहकर, फुर्कत में जान दे दी, (2)
अब कौन राह देखे, (2) वह आऐं या न आऐं,
इक दर्दमंद दिल .....

4. मुझको जगाने वाले, अब खुद भी जागते हैं, (2)
मजबूर दिल की आहें, (2) खाली गई न जाऐं,
इक दर्दमंद दिल .....

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

[कबीर साहब]

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है, (2)

1. जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है, (2)
   उठ जाग मुसाफिर .....

2. उठ नींद से अक्खियां खोल जरा और अपने गुरु से ध्यान लगा, (2)
   यह प्रीत करन की रीत नहीं, (2) गुरु जागत है तू सोवत है,
   उठ जाग मुसाफिर .....

3. जो कल करना सो अज कर ले, जो अज करना सो अब कर ले, (2)
   जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, (2) फिर पछताऐ क्या होवत है,
   उठ जाग मुसाफिर .....

4. नादान भुगत करनी अपनी, ऐ पापी पाप में चैन कहाँ, (2)
   जब पाप की गठड़ी शीश धरी, (2) तब शीश पकड़ क्यों रोवत है,
   उठ जाग मुसाफिर .....

उडके गुरां नूं मिलिऐ

[गुरु बानी]

उडके गुरां नूं मिलिऐ, जे खम्ब विकदे होण बजारी, (2)

1. खम्ब विकंदड़े जे लहां, (2) घिना सामी तोल, जे खम्ब .....
2. तन जुड़ाई आपने, (2) लहां सो साजन टोल, जे खम्ब .....
3. सज्जण सच्चा पातशाह, (2) सिर शाहां दे शाह, जे खम्ब .....
4. जिस पास बैठयां सोहिऐ, (2) सबना दा बैसाहो, जे खम्ब .....

ऐहे जन्म तुम्हारे लेखे

[गुरु रविदास जी]

ऐहे जन्म तुम्हारे लेखे, लेखे विच ला लो गुरु जी, (2)

1. हम सर दीन, दयाल ना तुम सर, (2) अब पतियार क्या कीजै,
   लेखे विच .....
2. बचनी तोर, मोर मन माने, (2) जन को पूरण कीजै,
   लेखे विच .....
3. हौं बल–बल जाओं, रमैया कारणै, (2) कारण कबण अबोल,
   लेखे विच .....
4. बहुत जन्म बिछुरे थे माधो, (2) ऐहे जन्म तुम्हारे लेखे,
   लेखे विच .....
5. कहे 'रविदास', आस लग जीवो, (2) चिर भयो दर्शन देखे,
   लेखे विच .....

ओ अक्ल के अंधे देख ज़रा

ओ अक्ल के अंधे देख ज़रा, तैनूं सतगुरु दित्तियां अक्खियां ने, (2)
हर कदम ते ठोकर खाना ऐं, ऐहे अक्खियां कास नूं रखियां ने, (2)

1. कई मारे मर गए अक्खियां दे, कई तारे तर गए अक्खियां दे, (2)
ऐ ज़हर ते अमृत अक्खियां विच, ऐ रमजां किसने लिखियां ने,
ओ अक्ल के .....

2. इक अक्ख कौडी दे मुल्ल दी ऐ, इक अक्ख मोती नाल तुलदी ऐ, (2)
इक अक्ख दे वैरी हजारां ने, इक अक्ख दियां लक्खां सखियां ने,
ओ अक्ल के .....

3. तेरी अक्ख माया तों रजदी[1] नहीं, सतगुरु वाले पासे लगदी नहीं, (2)
हुण भुल्लके असल टिकाणे नूं, जा होर टिकाणे फसियां ने,
ओ अक्ल के .....

4. ऐ पै गईयां होर हिसाबा नूं, पए वेखण रोज़ किताबां नूं, (2)
कदी झात ना[2] मारी दिलबर वल, जिसने तैनूं दित्तियां अक्खियां ने,
ओ अक्ल के .....

5. राह बिखड़ा[3] मंजिल दूर तेरी, मगरूरों अक्ख बेनूर[4] तेरी, (2)
जदों चलदे आं डिग्ग[5] पैने आं, आसां सतगुरु दियां रखियां ने,
ओ अक्ल के .....

6. दास न दास ओ प्रेमी सी, निर्मल परवाने सड़दे ने, (2)
की रीस[6] करां परवाने दी, थां–थां ते मर दियां सखियां ने,
ओ अक्ल के .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. रजदी – तृप्त 2. झात ना – देखा नहीं 3. बिखड़ा – मुश्किल 4. बेनूर – बिना नूर
5. डिग्ग – गिरना 6. रीस – नकल

ओह सोहणा ऐनां सोहणा सी

[परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज]

1. ओह सोहणा ऐनां सोहणा सी, जां दिस्स दा सी चन्न चढ़दा सी,
मन मोती लै–लै हञ्जुंआ दे, दरबार ओहदे विच जड़दा सी,

2. ओहदे चार चुफेरे देखी मैं, घुमदी सी मस्ती कुदरत दी,
ओह इक्को इक ही वेखी मैं, दुनियां ते हस्ती कुदरत दी,

3. ओहनूं वेख–वेख के फुल्लां ते, इक नवीं जवानी औंदी ऐ,
कलियां दे हासे खिड़दे सी, अक्खियां विच मस्ती गौंदी ऐ,

4. ओहदे नैणा चों लै चमक–दमक, बिजली चमकारे सिक्खे सी[1],
ऐसे लई भिन्नी रैनड़िऐ, पऐ चमकन तारे सिक्खे सी,

5. ओहदा तेज सी ऐनां मत्थे दा, चन्न सूरज भी शरमौंदे सी,
अक्खियां दी मस्ती तक–तक के, नरगिस[2] नूं झूटे[3] औंदे सी,

6. ओह सोलह कला सम्पूर्ण सी, हर साज दी मिट्ठी तान सी ओह,
बेसमझां लई इंसान सी ओह, पर भगतां लई भगवान सी ओह,

7. ओह केहो जेहा सी कैसा सी, नहीं दित्ती जा तस्बीह[4] सकदी,
जे कवि कोई गलती कर बैठे, ओहदी मूर्खता नहीं जी सकदी,

8. ओह नूर इलाही शांतमई, जद मस्ती दे विच औंदा सी,
डुबे होए पापी बंदेया दे, बन्ने ते बेड़े लौंदा सी,

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. सिखे सी – सीखे थे 2. नरगिस – फूल 3. झूटे – झूले 4. तस्बीह – मिसाल

9. ओह निगाह नाल ही देंदा[1] सी, कर दौलतमंद फकीरां नूं,
सी कासे[2] हत्थ फड़ा देंदा, कई हैंकड़ खां[3] अमीरां नूं,

10. ओह चमकां दे दे धरती दे, ज़र्रे[4] नूं सूरज करदा सी,
जिहनूं लोकी कारू केहंदे सी, ओह कूकर[5] ओहदे दर दा सी,

11. ओह सी परतख प्रमाण नहीं, कोई शै भी ओहदे तुलदी नहीं,
ऐह दुनियां दी दौलत दिस्स दी जो, ओहदी धूड़ी दे वी मुल्ल दी नहीं,

12. ओह अक्ख जां गहरी करदा सी, सागर दा सीना सड़दा सी[6],
ओह घूरी[7] वट जां वेंहदा सी, सूरज ना डरदा चढ़दा सी,

13. ओहनूं चन्न सितारे अम्बर वी, झुक–झुक के सजदे करदे सी,
बन–बन के बद्दल सावण दे, ओहदा आ–आ पानी भरदे सी,

14. ओह कौन सी महरम दस्स देवां, ओह सावन सिंह प्यारा सी,
ओह जयमल सिंह दियां अक्खां दा, अरशां[8] तों आया तारा सी,

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. देंदा – देना 2. कासे – कटोरा 3. हैंकड़ खा– घमंडी 4. जर्रे– कण कण 5. कूकर – कुत्ता
6. सड़दा सी – जलता था 7. घूरी – गुस्से से देखना 8. अरशां – आकाश

क्या हुआ जे जन्म लिया

[मस्ताना जी]

क्या हुआ जे जन्म लिया पर कदर जन्म दा पाया ना,
सतगुरु की भक्ति वाला, इस पर रंग चढ़ाया ना, (2)

1. दर–दर बंदे फिरे भटकता, खोज अंदर दा लाया ना, (2)
सतगुरु तेरे कोल सी वसदा, नज़र तेरी विच आया ना, क्या हुआ .....

2. बिना दाग तैनूं चोला सी मिलया, दागो दाग कराया ई, (2)
कभी नाम का साबुन ला के, इक भी दाग मिटाया ना, क्या हुआ .....

3. काम क्रोध मोह लोभ लुटेरे, ये भी तेरे पीछे हैं, (2)
लुटया खूब खबर ना कीती, भेद इन्हों का लाया ना, क्या हुआ .....

4. कभी ना आया साध संगत में, कभी भी हर गुण गाया ना, (2)
देश तेरे की अपरम्पार माया, भेद तू उसका लाया ना, क्या हुआ .....

काहे रे वन खोजन जाई

[गुरु तेगबहादुर जी]

काहे रे वन खोजन जाई, (2)

1. सर्व निवासी सदा अलेपा, (2) तो ही संग समाई (2) काहे रे ....
2. पोपह मध ज्यों वास वसत है, (2) मुक्कर माहे जैसे छाई (2) काहे रे ....
3. तैसे ही हर वसे निरंतर, (2) घट ही खोजो भाई (2) काहे रे ....
4. बाहर भीतर ऐको जाना, (2) ऐह गुरु ज्ञान बताई (2) काहे रे ....
5. जन 'नानक' बिन आपा चीने, (2) मिटे ना भरम की काई (2) काहे रे ....

करूं बेनती दोउ कर जोरी

[स्वामी जी महाराज]

1. करूं बेनती दोउ कर जोरी, अरज सुनो राधास्वामी मोरी,

2. सतपुरुष तुम सतगुरु दाता, सब जीवन के पिता और माता,

3. दया धार अपना कर लीजे, काल जाल से न्यारा कीजे,

4. सतयुग त्रेता द्वापर बीता, काहु न जानी शब्द की रीता,

5. कलयुग में स्वामी दया विचारी, परगट करके शब्द पुकारी,

6. जीव काज स्वामी जग में आए, भवसागर से पार लगाए,

7. तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सतनाम सतगुरु गत चीन्हा,

8. जगमग जोत होत उजियारा, गगन सोत पर चन्द्र निहारा,

9. सेत सिंहासन छत्र बिराजे, अनहद शब्द गैब धुन गाजे,

10. क्षर अक्षर निःअक्षर पारा, बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा,

11. लोक अलोक पाऊं सुख धामा, चरन सरन दीजे बिसरामा

करौं बेनती सुनो मेरे मीता

[गुरु अर्जुनदेव जी]

करौं बेनती सुनो मेरे मीता, (2) सन्त टहल की वेला, (2)

1. इहां खाट चलो हर लाहा, (2) आगे बसन सुहेला, (2)
   करौं बेनती .....

2. औध घटे दिन सौ रैना रे, (2) मन गुर मिल काज सवारे, (2)
   करौं बेनती .....

3. एहो संसार बेकार संसे में, (2) तरयो ब्रह्मज्ञानी, (2)
   जिसे जगाऐ पियावे ऐह रस, (2) अकथ कथा तिन जानी, (2)
   करौं बेनती .....

4. जां को आऐ सोई बेहाजो, (2) हर गुर ते मनो बसेरा, (2)
   निज घर महल पावो सुख सहजे, (2) बोहर न होएगो फेरा, (2)
   करौं बेनती .....

5. अंतरयामी पुरख विधाते, (2) श्रद्धा मन की पूरे, (2)
   'नानक' दास ऐहो सुख मांगे, (2) मोको कर सन्तन की धूरे, (2)
   करौं बेनती .....

गुरु समान नहीं दाता जग में

[कबीर साहब]

गुरु समान नहीं दाता जग में, गुरु समान नहीं दाता, (2)

1. वस्तु अगोचर दई सतगुरु ने, (2)
भली बताई बाता, जग में .....

2. काम क्रोध कैद कर राखे, (2)
लोभ को लीनो नाथा, जग में .....

3. काल करे सो हाल ही कर ले, (2)
फिर ना मिले ये साथा, जग में .....

4. चौरासी में जाऐ पड़ोगे, (2)
फिर भुगतो दिन राता, जग में .....

5. शब्द पुकार–पुकार कहत है, (2)
कर ले सन्तन साथा, जग में .....

6. सुमिर बंदगी कर साहेब की, (2)
काल निवाऐ माथा जग में .....

7. कहत 'कबीर' सुनो ऐ धर्मन, (2)
मानो बचन हमारा, जग में .....

8. परदा खोल मिलो सतगुरु से, (2)
आओ लोक दयारा, जग में .....

कोई गुण ना गुरु जी विच मेरे

[गुरु बानी]

कोई गुण ना गुरु जी विच मेरे, औगुणा दा मैं भरया, (2)

1. सब अवगुण मैं गुण नहीं कोई, (2)
क्यों कर कंत मिलावा होई,
औगुणा दा .....

2. ना मैं रूप ना बांके नैणा, (2)
ना कुल ढंग ना मीठे वैणा,
औगुणा दा .....

3. हम अवगुण भरे एक गुण नाहीं, (2)
अमृत छाड़ बिखे बिख खाही,
औगुणा दा .....

4. माया मोह भरम भए भूले, (2)
सुत दारा स्यों प्रीत लगाई,
औगुणा दा .....

5. एक उत्तम पंथ सुणयों गुरु संगत, (2)
तहं मिलत यम त्रास मिटाई,
औगुणा दा .....

6. एक अरदास भाट कीरत की, (2)
गुरु रामदास, राख्यो शरणाई,
औगुणा दा .....

गुरु बिन कौन सहाई नरक में

[ब्रह्मानंद जी]

गुरु बिन कौन सहाई नरक में, गुरु बिन कौन सहाई रे, (2)

1. मात–पिता सुत बंधव नारी, स्वार्थ के सब भाई रे, (2)
परमार्थ का बंधु जगत में, सतगुरु बंध छुड़ाई रे,
गुरु बिन कौन .....

2. भवसागर जल दुस्तर भारी, गर्भ से दुःख दाई रे, (2)
गुरु खेवटिया पार लगा के, ज्ञान जहाज बिठाई रे,
गुरु बिन कौन .....

3. जन्म–जन्म का मेट अंधेरा, संसा सकल[1] नसाई[2] रे, (2)
पार ब्रह्म परमेश्वर पूर्ण, घट में दे दिखाई रे,
गुरु बिन कौन .....

4. गुरु के वचन धार हिरदे में, भाव भक्ति मन लाई रे, (2)
'ब्रह्मानंद' करो नित सेवा, मोक्ष पदार्थ पाई रे,
गुरु बिन कौन .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. सकल – सब 2. नसाई – भगा देना

गुरु बिना कौन मिटावै भव दुःख

[ब्रह्मानंद जी]

गुरु बिना कौन मिटावै भव दुःख, गुरु बिना कौन मिटावै रे, (2)

1. गहरी नदिया वेग बड़ो है, बहत जीव सब जावै रे, (2)
कर कृपा गुरु पकड़ भुजा से, खैंच तीर पर लावै रे,
गुरु बिना .....

2. काम क्रोध मद लोभ चोर मिल, लूट–लूट कर खावै रे, (2)
ज्ञान खड़ग देकर कर मांही, सबको मार भगावै रे,
गुरु बिना .....

3. जाना दूर रात अंधियारी, गैला[1] नजर ना आवै रे, (2)
सीधे मार्ग पर पग धरकर, सुख से धाम पुगावै[2] रे,
गुरु बिना .....

4. तन मन धन सब अर्पण करके, जो गुरुदेव रिझावै रे, (2)
'ब्रह्मानंद' भवसागर दुस्तर[3] सो सहजे तर जावै रे,
गुरु बिना .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. गैला – रास्ता 2. पुगावै – पहुंचावे 3. दुस्तर – मुश्किल

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर

[गुरु बानी]

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर,
गुरु बिना मैं नाहीं होर, (2)

1. गुरु की टेक रहो दिन–रात,
जांकी कोए ना मेटे दात, (2) गुरु गुरु .....

2. गुरु परमेश्वर एको जान,
जो तिस भावे सो परवान, (2) गुरु गुरु .....

3. गुरु चरनीं जां का मन लागै,
दुःख दर्द भरम तां का भागै, (2) गुरु गुरु .....

4. गुरु की सेवा पाऐ मान,
गुरु ऊपर सदा कुरबान, (2) गुरु गुरु .....

5. गुरु का दर्शन देख निहाल,
गुरु के सेवक की पूर्ण घाल, (2) गुरु गुरु .....

6. गुरु के सेवक को दुःख ना व्यापै,
गुरु का सेवक दह दिस जापै, (2) गुरु गुरु .....

7. गुरु की महिमा कथन ना जाऐ,
पारब्रह्म गुरु रहा समाऐ, (2) गुरु गुरु .....

8. कहो 'नानक' जां के पूरे भाग,
गुरु चरनी तां का मन लाग, (2) गुरु गुरु .....

गुरु सतगुरु का जो सिक्ख अखाऐ

[गुरु बानी]

गुरु सतगुरु का जो सिक्ख अखाऐ,
सो भलके उठ हर नाम ध्याऐ, (2)

1. उद्यम करे भलके परभाती, (2)
स्नान करे अमृतसर न्हावै,
गुरु सतगुरु .....

2. उपदेश गुरु हर–हर जप जापै, (2)
सब किल विख पाप दोख लैह जावै,
गुरु सतगुरु .....

3. फिर चढ़े दिवस गुरबानी गावै, (2)
बेहंदेयां उठदेयां हर नाम ध्यावै,
गुरु सतगुरु .....

4. जो सास ग्रास ध्याऐ मेरा हर–हर, (2)
सौ गुरु सिक्ख गुरु मन भावै,
गुरु सतगुरु .....

5. जिस नौ दयाल होवै मेरा स्वामी, (2)
तिस गुरु सिक्ख गुरु उपदेश सुणावै,
गुरु सतगुरु .....

6. जन 'नानक' धूड़ मांगै तिस गुरसिक्ख की, (2)
जो आप नाम जपै अवरै नाम जपावै,
गुरु सतगुरु .....

गुरु साजन लाधा जी

[गुरु बानी]

गुरु साजन लाधा जी, सारा जग ढूंढ के, (2)

1. गुरमुख ढूंढ ढुंडेंदयां, (2) गुरु साजन लाधा, जी सारा जग .....
2. कंचन काया कोट गढ़ (2) विच हर–हर सिधा, जी सारा जग .....
3. हर–हर हीरा रत्न है, (2) मेरा तन–मन बीधा, जी सारा जग .....
4. धुर भाग बड़े हर पाया (2) 'नानक' रस गुधा, जी सारा जग .....

गुरुदेव मेरी नैया उस पार लगा देना

गुरुदेव मेरी नैया, उस पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना, (2)

1. मुमकिन है कि झंझटो में, मैं तुमको भूल जाँऊ, (2)
पर नाथ कहीं तुम भी, (2) मुझको ना भुला देना, गुरुदेव .....

2. दल–बल के साथ माया, घेरे जो आ के मुझको, (2)
तुम देखते ना रहना, (2) झट आ के बचा लेना, गुरुदेव .....

3. तुम ईष्ट मैं हूँ सेवक, तुम देव मैं पुजारी, (2)
यह बात अगर सच है, (2) सच करके दिखा देना, गुरुदेव .....

4. आँखों में समा जा ओ, पलकों में रहा करना, (2)
दरिया भी इसी में है, (2) मौजों में रहा करना, गुरुदेव .....

घट ही में अविनाशी साधो

[ब्रह्मानंद जी]

घट ही में अविनाशी साधो, घट ही में अविनाशी रे, (2)

1. काहे रे नर मथुरा जावे, काहे जावे काशी रे, (2)
तेरे तन में बसे निरंजन, जो बैकुंठ विलासी रे,
घट ही में .....

2. नहीं पाताल नहीं स्वर्गलोक में, नहीं सागर जल राशी रे, (2)
जो जन सुमिरन करत निरंतर, सदा रहे तिन पासी रे,
घट ही में .....

3. जो तूं उसको देखना चाहे, सबसे होए उदासी रे, (2)
बैठ एकांत ध्यान नित कीजै, होए जोत प्रकाशी रे,
घट ही में .....

4. हिरदे में जब दर्शन होवे, सकल मोहतम नासी रे, (2)
'ब्रह्मानंद' मोक्ष पद पावे, कटे जन्म की फाँसी रे,
घट ही में .....

चरन कमल तेरे धोऐ-धोऐ पीवां

[गुरु बानी]

चरन कमल तेरे धोऐ–धोऐ पीवां, मेरे सतगुरु दीन दयाला, (2)

1. पारब्रह्म परमेश्वर सतगुरु, आपै करने हारा, (2)
चरन धूड़ तेरी सेवक मांगै, तेरे दर्शन को बलिहारा, (2)
चरन कमल .....

2. मेरे राम राय ज्यों, राखै त्यों रहियै, (2)
तुध भावै तां नाम जपावै, सुख तेरा दित्ता लईयै, (2)
चरन कमल .....

3. मुक्त भुगत जुगत तेरी सेवा, जित तूं आप कराई, (2)
तहां बैकुंठ जहां कीर्तन तेरा, तू आपै श्रद्धा लाई, (2)
चरन कमल .....

4. सिमर सिमर सिमर नाम जीवां, तन–मन होऐ निहाला, (2)
चरन कमल तेरे धोऐ–धोऐ पीवां, मेरे सतगुरु दीन दयाला, (2)
चरन कमल .....

5. कुरबान जाई उस वेला सुहावा, जित तुमरे दवारे आई, (2)
'नानक' को प्रभ भऐ कृपाला, सतगुरु पूरा पाया, (2)
चरन कमल .....

चलो नीं सईयो सिरसे नूं चलिऐ

[सन्त कृपाल सिंह जी]

चलो नीं सईयो सिरसे नूं चलिऐ, (2)
तांघां[1] सोहणे यार दियां, चलो नीं सईयो सिरसे नूं चलिऐ,

1. आप सदा मालिक संग रैहंदे, रात–दिने असीं दुःखड़े सैहंदे, (2)
हरदम गहरे गमां विच बैहंदे (2), आर दी आं ना पार दी आं,

2. भागे भरियां रूहां तेरियां, नाल तेरे जो हरदम रहियां, (2)
असां मुसीबतां लख–लख सहियां (2), बैठ गोटियां गाल दी आं,

3. पा के गल्लां–गल्लां विच दुःखड़ा, जग सारा पया दिस्से रुखड़ा, (2)
छेती आण विखावीं मुखड़ा (2), दुःखड़ी तेरे दीदार दी आं,

4. पूरी आस उम्मीद ना होई, हद्दों बाहर बैठ मैं रोई, (2)
तैं बिन प्रीतमा ज्यौंदयां मोई (2), जान तेरे तों वार दी आं,

5. तूं मालिक मैं बांदी तेरी, दर्शन पीया देईं इक वेरी, (2)
जल्दी करीं ना लावीं देरी (2), भुखड़ी तेरे दीदार दी आं,

6. कित्थे गयों हाय सावन प्यारे, बांदी रो–रो उम्र गुजारे, (2)
गिननी आं रात बैठ मैं तारे (2), दिन तक–तक राह गुजार दी आं,

7. सौ–सौ वारी मैनूं ख्वाबां आईयां, भुल्ल गयों मैनूं मेरे साईयां, (2)
पहले नाल मेरे क्यों लाईयां (2), गल्लां ऐह आज़ार दियां,

8. सावन प्यारे तुध बिन मोई आं[2], दर्शन बिन मैं पागल होई आं, (2)
परदेओं बाहर आ सावन रोई आं (2), गल्लां कर हुण प्यार दियां,

9. मैत्थों चंगियां जुत्तियां तेरियां (2), मैं तत्ती दूर पावां फेरियां, (2)
हाय छेती आवीं यमां ने घेरी आं (2), दुःखड़ी सावन दीदार दी आं,

कठिन शब्दों के अर्थः-

1. तांघां – व्याकुल होकर इंतजार करना 2. मोई आं – मर गई हां

चन्द लख चढ़ जावे जी

[गुरु बानी]

चन्द लख चढ़ जावे जी, प्यारेयो सतगुरु बाज हनेरा, (2)

1. बलिहारी गुर आपणें, (2) देयो हाड़ी सद वार, प्यारेयो .....
2. जिन मानस ते देवते कीऐ, (2) करत ना लागी वार, प्यारेयो .....
3. जे सौ चंदा उगवै, (2) सूरज चढ़े हजार, प्यारेयो .....
4. ऐते चानण होंदया, (2) गुरु बिन घोर अंधार, प्यारेयो .....

चार पदार्थ जे को मांगै

[गुरु अर्जुनदेव जी]

1. चार पदार्थ जे को मांगै, (2) साध जना की सेवा लागै, (2)
2. जे को अपना दुःख मिटावै, (2) हर–हर नाम रिदे सद गावै, (2)
3. जे को अपनी शोभा लोरै, (2) साध संग ऐहो होमैं छोरै, (2)
4. जे को जन्म–मरन ते डरै, (2) सन्त जना की शरनी परै, (2)
5. जिस जन को हर दर्श प्यासा, (2)'नानक' तांकै बल–बल जासा, (2)

चिट्टा कपड़ा ते रूप सुहावना

[गुरु नानकदेव जी]

चिट्टा कपड़ा ते रूप सुहावना, चिट्टा कपड़ा,
चिट्टा कपड़ा ते रूप सुहावना, दुनियां ते छड जावणां बंदेया,
बंदेया, दुनियां ते छड जावणा, चिट्टा कपड़ा,

1. कप्पड़ रूप सुहावणा, (2) छड दुनियां अंदर जावणा, दुनियां ते .....
2. मंदा–चंगा आपणा, (2) आपे ही कीता पावणा, दुनियां ते .....
3. हुक्म किऐ मन भांवदे, (2) राह भीड़े अग्गे जावणा, दुनियां ते .....
4. नंगा दोजख चालया, (2) दीसे खड़ा डरावणा, दुनियां ते .....
5. कर औगुण पछोतावणा, (2) कर औगुण पछोतावणा, दुनियां ते .....

छोटी जात दा कबीर जुलाहा

[कबीर साहब]

छोटी जात दा कबीर जुलाहा, नाम जप उच्चा हो गया, (2)

1. मुस–मुस रोवे कबीर जी की माई, (2) ऐह बालक कैसे जीवे रघुराई, (2)
   नाम जप उच्चा .....
2. तनना–बुनना तज्यो कबीरा, (2) हरि का नाम लिख लेहो शरीरा, (2)
   नाम जप उच्चा .....
3. ओछी मत मेरी जात जुलाहा, (2) हरि का नाम लेहो मैं लाहा, (2)
   नाम जप उच्चा .....
4. कहत 'कबीर' सुनो मेरी माई, (2) हमरा इनका दाता इक रघुराई, (2)
   नाम जप उच्चा .....

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी

[गुरु अर्जुनदेव जी]

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, (2) सो दुःख कैसा पावै, (2)

1. बोल ना जाने माया मद माता, (2) मरना चीत ना आवै, (2)
जिसके सिर ऊपर .....

2. मेरे राम राय, तू सन्तां का सन्त तेरे, (2) तेरे सेवक को भौ किछ नाहीं, (2)
यम नहीं आवे नेरे, (2)
जिसके सिर ऊपर .....

3. जो तेरे रंग राते स्वामी, (2) तिनका, जन्म–मरन दुःख नासा, (2)
तेरी बक्श ना मेटे कोई, (2)
सतगुरु का दिलासा, (2)
जिसके सिर ऊपर .....

4. नाम ध्यायन, सुख फल पायन, (2) आठ पहर आराधै, (2)
तेरी शरण तेरे भरवासै, (2)
पंच दुष्ट लै साधै, (2)
जिसके सिर ऊपर .....

5. ज्ञान ध्यान किछ कर्म ना जाणा, (2) सार ना जाणा तेरी, (2)
सब ते वड्डा सतगुरु 'नानक', (2)
जिन कल राखी मेरी, (2)
जिसके सिर ऊपर .....

जी सतगुरु प्यारे आ मिलो

[गुरु अर्जुनदेव जी]

जी सतगुरु प्यारे आ मिलो मैनूं, (2) तरस रही जान है मेरी, (2)

1. जी तेरा कीता जातो मैं नाहीं, (2) जी मैनूं जोग कीतोई, (2)
जी सतगुरु प्यारे .....

2. जी निरगुण हारे कोई गुण नाहीं, (2) जी आपै तरस पेयोई, (2)
जी सतगुरु प्यारे .....

3. जी तरस पया मैं रहमत होई, (2) जी सतगुरु साजन मिलया, (2)
जी सतगुरु प्यारे .....

4. जी 'नानक' नाम मिलै तां मैं जीवां, (2) जी तन–मन थीवै जी हरया, (2)
जी सतगुरु प्यारे .....

जी जुग भावे चार जीविए

[गुरु बानी]

जी जुग भावे चार जीविए, बिना भजन नहीं छुटकारा, (2)

1. बड़े–बड़े जो दीसे लोग, तिनको व्यापै, चिंता रोग, (2)
जी जुग भावे .....

2. कौन बड़ा, माया वडियाई, सोई बड़ा जिन, हर लिव लाई, (2)
जी जुग भावे .....

3. भूमि अभूम, ऊपर नित लूजै, छोड़ चले, तृष्णा नहीं बूझै, (2)
जी जुग भावे .....

4. कहो 'नानक' ऐहो, तत्त विचारा, बिन हर भजन नहीं छुटकारा, (2)
जी जुग भावे .....

जां होऐ कृपाल तां प्रभु मिलाऐ

[फरीद साहब]

जां होऐ कृपाल तां प्रभु मिलाऐ, (2)

1. तप–तप, लोहे–लोहे, हाथ मरोरो, (2) (2)
बाबल होई, सो–सो लोरो, जां होऐ कृपाल .....

2. तै सहे मन मह, किया रोष, (2) (2)
मुझ अवगुण सह, नाहीं दोष, जां होऐ कृपाल .....

3. तै साहेब की मैं, सार ना जाणी, (2) (2)
जौवन खोऐ, पाछे पछतानी, जां होऐ कृपाल .....

4. काली कोयल तूं, कित गुण काली, (2) (2)
अपने प्रीतम के हौं, बिरहो जाली, जां होऐ कृपाल .....

5. पिरह वहून, कतह सुख पाऐ, (2) (2)
जां होऐ कृपाल तां, प्रभु मिलाऐ, जां होऐ कृपाल .....

6. बिघ्न खूटी, मुंध अकेली, (2) (2)
ना कोई साथी, ना कोई बेली, जां होऐ कृपाल .....

7. कर कृपा प्रभ, साध संग मेली, (2) (2)
जां फिर देखां तां मेरा अल्लाह बेली, जां होऐ कृपाल .....

8. वाट हमारी, खरी उडीणी, (2) (2)
खंड्यो तिखी बहुत पईंणी, जां होऐ कृपाल .....

9. उस ऊपर है, मार्ग मेरा, (2) (2)
सेख 'फरीदा' पंथ, समार सवेरा, जां होऐ कृपाल .....

जाग मुसाफिर जाग

[कबीर साहब]

जाग मुसाफिर जाग, घना दिन सो लिया रे, (2)

1. पहले सोया मात गर्भ में, औंधा पांव पसार, (2)
भक्ति करके बाहर आयों, भूल गयो करतार,
जन्म तेरा हो लिया रे,
जाग मुसाफिर जाग .....

2. दूजा सोया पिता गोद में, हस–हस दांत दिखाऐ, (2)
बहन–भाई तेरा करे लाड रे, मंगला चरन गाऐ,
लाड तेरा हो लिया रे,
जाग मुसाफिर जाग .....

3. तीजा सोया तिरिया सेज पर, गले में बहियां डाल, (2)
तिरिया जाल में फंस गया बंदे, ये है मोह का जाल,
विवाह तेरा हो लिया रे,
जाग मुसाफिर जाग .....

4. चौथा सोया बूढ़ा बन के, कोने में खाट घलाऐ, (2)
हलन चलन की शक्ति कोनी, लीनी सेव कराऐ,
बुढ़ापा आ गया रे,
जाग मुसाफिर जाग .....

5. पांचवें सोऐ शमशानों में, लम्बे पांव पसार, (2)
कहत 'कबीर' सुनो रे साधो दीनो अग्नि में डार,
दाग तेरा हो लिया रे,
जाग मुसाफिर जाग .....

जो बक्शो हमको बड़ी है बक्शिश

[सन्त कृपाल सिंह जी]

जो बक्शो हमको बड़ी है बक्शिश, अगर न बक्शो तो चारा क्या है, (2)

1. ना घर ना दर है, जमीं ना ज़र है, है सब तुम्हारा हमारा क्या है, (2)
जो बक्शो हमको .....

2. इधर भी तुम हो, उधर भी तुम हो,यहाँ भी तुम हो, वहाँ भी तुम हो, (2)
न हम हैं तुम बिन, न वह है तुम बिन, (2)
जहाँ का तुम बिन सहारा क्या है,
जो बक्शो हमको .....

3. खुदाई तेरी, जुदाई तेरी, जुदा भी तुम हो, खुदा भी तुम हो, (2)
उठा दो गर तुम, वो हम का परदा, (2)
बिगड़ता उसमें तुम्हारा क्या है,
जो बक्शो हमको .....

4. कमां के अंदर, है पत्ता–पत्ता, है ताबे फरमान, जर्रा–जर्रा, (2)
किसी की मानो, रहम है वल्लाह, (2)
अगर ना मानो इज़ारा क्या है,
जो बक्शो हमको .....

5. है रंक तेरा, शहनशाह तेरा, यह कुफ्र है कहना मेरा–मेरा, (2)
है जैसा उसको, समझना वैसा, (2)
सिवाय उसके कफारा क्या है,
जो बक्शो हमको .....

जे तूं ना औंदा रामा

[गुरु बानी]

जे तूं ना औंदा रामा, प्रहलाद डोल जांदा, (2)
जे तूं ना औंदा साहिबा, संसार डोल जांदा, (2)

1. जुग–जुग भक्ति उपाय कै, (2) पैज रखदा आया रामा, प्रहलाद .....

2. हरनाकश्यप दुष्ट हर मारिया, (2) प्रहलाद तराया रामा, प्रहलाद .....

3. अहंकारिआं निंदकां पीठ दे, (2) नामदेव मुख लाया रामा, प्रहलाद .....

4. जिन 'नानक' ऐसा हर सेविया, (2) लै अंत छुड़ाऐ रामा, प्रहलाद ....

जे पारस होणा ऐं

[गुरु अमरदेव जी]

जे पारस होणा ऐं जिंदड़िऐ, पढ़ सतगुरु दी बाणी, (2)

1. आओ सिक्ख सतगुरु के प्यारेयो, (2) गाओ सच्ची बाणी, जिंदड़िऐ .....

2. बाणी तां गावो गुरु केरी, (2) बाणियां सिर बाणी, जिंदड़िऐ .....

3. जिनको नादर कर्म होवै, (2) हिरदे तिना समानी, जिंदड़िऐ .....

4. पीवो अमृत सदा रहो हर रंग, (2) जपयो सारंग पानी, जिंदड़िऐ .....

5. कहै 'नानक' सदा गाओ, (2) ऐहो सच्ची बानी, जिंदड़िऐ .....

जावां बलिहार जी

[गुरु बानी]

जावां बलिहार जी, मैं अपने गुरां तों, (2)

1. बलिहारी गुरु आपणें, (2) देयो हाड़ी सदवार जी, मैं अपने .....

2. जिन मानस ते देवते कीऐ, (2) करत ना लागी वार जी, मैं अपने .....

3. जे सौ चँदा उगवै, (2) सूरज चढ़े हजार जी, मैं अपने .....

4. ऐते चानण होंदयां, (2) गुर बिन घोर अँधार जी, मैं अपने .....

जो मांगे ठाकुर अपने ते

[गुरु अर्जुनदेव जी]

जो मांगे ठाकुर अपने ते, सोई—सोई देवे, (2)

1. चतुर दिसा कीनो बल अपना, सिर ऊपर कर धारयो, (2)
कृपा कटाख अवलोकन कीनो, दास का दुःख विदारयो, (2)
जो मांगे ठाकुर .....

2. हर जन राखै गुरु गोबिंद, राखै गुरु गोबिंद, (2)
कंठ लाऐ अवगुण सब मेटै, दयाल पुरख बखशिंद, (2)
जो मांगे ठाकुर .....

3. जो मांगे ठाकुर अपने ते, सोई—सोई देवै, (2)
'नानक' दास मुख ते जो बोलै, इहाँ ऊहाँ सच होवै, (2)
जो मांगे ठाकुर .....

ठाकुर तुम शरनाई आया

[गुरु अर्जुनदेव जी]

ठाकुर तुम शरनाई आया, (2)

1. उतर गया मेरे मन का संशय (2) जी, जब तेरा दर्शन, दर्शन पाया, (2)
ठाकुर तुम .....

2. अन बोलत मेरी बिरथा जानी (2) जी, अपना नाम, नाम जपाया, (2)
ठाकुर तुम .....

3. दुःख नाठे सुख सहज समाऐ (2) जी,आनंद, आनंद, आनंद, गुण गाया, (2)
ठाकुर तुम .....

4. बाँह पकड़ कढ लीने जन अपने (2) जी, गृह अँध कूप, कूप ते माया, (2)
ठाकुर तुम .....

5. कहो 'नानक' गुरु बंधन काटे (2) जी, बिछुरत आन, आन मिलाया, (2)
ठाकुर तुम .....

तती वाओ नां लगदी जी

[गुरु अर्जुनदेव जी]

तती वाओ नां लगदी जी, गुरां दी शरण पयां, (2)

1. ताती वाओ ना लागई, (2) पारब्रह्म शरनाई, गुरां दी .....
2. चौगिरद्ध हमारे राम कार, (2) दुःख लगे ना भाई जी, गुरां दी .....
3. सतगुरु पूरा भेटया, (2) जिन बणत बनाई जी, गुरां दी .....
4. राम नाम औखद दिया, (2) ऐका लिव लाई जी, गुरां दी .....
5. राख लिया तिस राखण हार, (2) सब व्याध मिटाई जी, गुरां दी .....
6. कहो 'नानक' कृपा भई, (2) प्रभ भयो सहाई जी, गुरां दी .....

तू मेरा पिता तू है मेरा माता

[गुरु अर्जुनदेव जी]

तू मेरा पिता, तू है मेरा माता, तू मेरा बंधप, तू मेरा भ्राता, (2)
तू मेरा राखा सबनी थांईं, तां भौ केहा काड़ा जिओ, तू मेरा .....

1. तुमरी कृपा ते तुध पछाना, तूं मेरी ओट तूं है मेरा माना, (2)
तुध बिन दूजा अवर ना कोई, सब तेरा खेल अखाड़ा जिओ, तू मेरा .....

2. जीया जंत सब तुध अपाऐ, जित–जित भाणा तित्त–तित्त लाऐ, (2)
सब किछ कीता तेरा होवै, नाहीं किछ असाड़ा जीओ, तू मेरा .....

3. नाम ध्याये महासुख पाया, हर गुण गाऐ मेरा मन सितलावा, (2)
गुरु पूरे बजी वधाई, 'नानक' जीता बिखाड़ा जिओ, तू मेरा .....

तेरे चरना दा आसरा होर आसरा ना कोई

[गुरु तेगबहादुर जी]

तेरे चरना दा आसरा, होर आसरा ना कोई, (2)

1. चित्त चरन कमल दा आसरा, (2) चित्त चरन कमल संग जोड़िऐ, होर .....

2. मन लोचे बुरयाईयां, (2) गुरु शब्दी ऐहो मन होड़िऐ, होर .....

3. बाहें जिन्हां दी पकड़िऐ, (2) सिर दीजै बाहें ना छोड़िऐ, होर .....

4. 'गुरु तेग बहादुर' बोलया, (2) धर पईऐ धर्म ना छोड़िऐ, होर .....

तेरा नाम रसमुल्ला जी

[बाबा सोमनाथ जी]

तेरा नाम रसमुल्ला[1] जी, जिन्होंने स्वाद लिया (2)

1. बंद करे जो नव द्वारा, रंध्र दसवें में चित्त जो ठहरा, (2)
इन्द्री मन को रोक लिया,
जिन्होंने स्वाद लिया .....

2. आवत धुर से अनहद बानी, सुनत झीनी अंतर श्रवणी, (2)
दो नैनी ध्यान लगाया जी,
जिन्होंने स्वाद लिया .....

3. मंत्र गुरु वाक्य अंतर सुमिरे, शांत चित्त मन एकाग्र धरे, (2)
जंत्र शब्द बजाया जी,
जिन्होंने स्वाद लिया .....

4. संहस कमल से त्रिकुटी आऐ, पारब्रह्म में सुन्न समाऐ, (2)
महासुन्न से भंवर गया जी,
जिन्होंने स्वाद लिया .....

5. सतलोक और अलख अगम, निजगति राधास्वामी धाम, (2)
दास 'सोम' समाया जी,
जिन्होंने स्वाद लिया .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. रसमुल्ला – रसवाला

तेरे नाम दा भरोसा भारी

[कबीर साहब]

तेरे नाम दा भरोसा भारी, रक्खीं लाज प्यारेयां दी, (2)
रक्खीं लाज प्यारेयां दी, रक्खीं लाज प्यारेयां दी,
तेरे नाम दा .....

1. नाम जपो जी ऐसे–ऐसे, ध्रुव प्रहलाद जपयो हर जैसे, (2)
ध्रुव प्रहलाद जपयो हर जैसे,
रक्खीं लाज .....

2. दीन दयाल भरोसे तेरे, सब परिवार चढ़ायो बेड़े, (2)
सब परिवार चढ़ायो बेड़े,
रक्खीं लाज .....

3. जां तिस भावे तां हुक्म मनावे, इस बेड़े को पार लंघावे, (2)
इस बेड़े को पार लंघावे,
रक्खीं लाज .....

4. गुरु प्रसाद ऐसी बुद्ध समानी, चूक गई फिर आवन–जानी, (2)
चूक गई फिर आवन–जानी,
रक्खीं लाज .....

5. कहो 'कबीर' भज सारंग पानी, उरवार पार सब एको दानी, (2)
उरवार पार सब एको दानी,
रक्खीं लाज .....

दर्शन देख जीवां गुरु तेरा

[गुरु बानी]

दर्शन देख जीवां गुरु तेरा, पूर्ण कर्म होये प्रभ मेरा, (2) (2)

1. ऐहे बेनंती सुन प्रभ मेरे, (2) देह नाम कर अपने चेरे, (2)
दर्शन देख .....

2. अपनी शरन राख प्रभ दाते, (2) गुर प्रसाद किनै विरलै जाते, (2)
दर्शन देख .....

3. सुन्हो बिनो प्रभ मेरे मीता, (2) चरन कमल वसहो मेरे चीता, (2)
दर्शन देख .....

4. 'नानक' एक करे अरदास, (2) बिसर नाहीं पूरन गुण तास, (2)
दर्शन देख .....

देखा है जब से हमने सावन जमाल तेरा

[सन्त कृपाल सिंह जी]

देखा है जब से हमने, सावन जमाल तेरा,

1. मजनूं बना रहा है, मुझ को ख्याल तेरा, देखा है .....

2. हर गीत गा रहा है, हर बाल–बाल तेरा,
हर बाल–बाल तेरा, हर बाल–बाल तेरा, देखा है .....

3. बंदा तो चीज़ क्या है, हरि जानों हर मुल्क ने,
माना कमाल तेरा, सावन जमाल तेरा, देखा है .....

दुःख भंजन तेरा नाम जी

[गुरु अर्जुनदेव जी]

दुःख भंजन तेरा नाम जी, दुःख भंजन तेरा नाम, (2)

1. आठ पहर आराधियै, पूर्ण सतगुरु ज्ञान, (2)
पूर्ण सतगुरु ज्ञान जी, दुःख भंजन .....

2. जित घट वसै पारब्रह्म, सोई सुहावा थान जी (2)
सोई सुहावा थान जी, दुःख भंजन .....

3. यम कंकर नेड़ ना आवई, रसना हर गुण गाओ जी (2)
रसना हर गुण गाओ जी, दुःख भंजन .....

4. सेवा सुरत ना जाणयां, ना जाणे आराध जी (2)
ना जाणे आराध जी, दुःख भंजन .....

5. ओट तेरी जग जीवणा, मेरे सतगुरु अगम अगाध जी (2)
मेरे सतगुरु अगम अगाध जी, दुःख भंजन .....

6. भऐ कृपाल गोसाईयां, नट्ठे सोग संताप जी (2)
नट्ठे सोग संताप जी, दुःख भंजन .....

7. तत्ती वाओ ना लगई, सतगुरु राखै आप, जी (2)
सतगुरु राखै आप जी, दुःख भंजन .....

8. गुरु नारायण दाईज़ गुरु, गुरु सच्चा सिरजनहार जी (2)
गुरु सच्चा सिरजनहार जी, दुःख भंजन .....

9. गुरु तूट्ठे सब किछ पाया, जन 'नानक' सद बलिहार जी (2)
जन 'नानक' सद बलिहार जी, दुःख भंजन .....

दयो जी वधाईयां सतगुरु आऐ

[पाठी जी]

दयो जी वधाईयां सतगुरु आऐ, लाहा खट्ट लो आ,
प्रेमियों खुशियां लयो मना, बई[1] सज्जनो दर्शन कर लो आ, (2)

1. माता हरनाम कौर जी दे घर विच, धारेया जन्म सी आ,
लाल सिंह जी दा लाल प्यारा, सन्तां दी शरण पया, (2)
सतसंग ला के नाम जपा के, तारियां हैं रूहां आ,
प्रेमियों खुशियां .....

2. जोत निराली है मतवाली, भाणे दे विच आया,
परउपकारी कट दा बीमारी, जो वी शरण पया, (2)
वेस[2] फकीरी शान अमीरी, रखया ऐ पड़दा पा,
प्रेमियों खुशियां .....

3. शब्द भंडारा मालिक प्यारा, बैठा रेहा लुटा,
अजायब सदावे ऐब नठावें[3], दुःखियां दा दर्द गया, (2)
'पाठी' बोले भेद नूं खोले, सच्चा मालिक मिल गया,
प्रेमियों खुशियां .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. बई – भाई, 2. वेस – भेष, 3. नठावें – भगावे

धुन घट विच वज रही जी

[गुरु अंगददेव जी]

धुन घट विच वज रही जी,
प्यारेयो गुरु बिन जुगत ना पाईऐ, (2)

1. अक्खां बाजो देखना, (2) बिन कन्नी सुनना जी, प्यारेयो गुरु .....

2. पैरां बाजो चलना, (2) बिन हत्थी करना जी, प्यारेयो गुरु .....

3. जीभा बाजों बोलना, (2) एयों जीवत मरना जी, प्यारेयो गुरु .....

4. 'नानक' हुक्म पछाण के, (2) एयों खसमें मिलना जी, प्यारेयो गुरु .....

धन-धन सतगुरु मेरा

[गुरु अर्जुनदेव जी]

धन–धन सतगुरु मेरा, जेहड़ा विछड़ेयां नूं मेलदा, (2)

1. जैसा सतगुरु सुणी दा, (2) तैसो ही मैं डीठ, जेहड़ा .....

2. विछड़ेयां मेले प्रभु, (2) हर दरगाह दा बसीठ, जेहड़ा .....

3. हरनामो मंत्र दरड़ाऐंदा, (2) कट्टे होमैं रोग, जेहड़ा .....

4. 'नानक' सतगुरु तिन्हां मिलाया, (2) जिन धुरों पया संजोग, जेहड़ा .....

नाच रे मन नाच रे

[मस्ताना जी]

नाच रे मन नाच रे, तू सतगुरु आगे नाच रे,
धन सतगुरु का बोलिऐ, तेरा कटे जन्म का पाप रे, (2)

1. राम भजन बिना मुक्ति कोई ना, राम बसाले काया में, (2)
कनक कामनी स्यों न्यों ना छूटे, क्यों फस गया त्रिगुणी माया में, (2)
बिन सतगुरु तेरा कोई ना साथी, ना बेटा ना बाप रे, (2)
धन सतगुरु का .....

2. लोभ मोह बाजार मांडया, बाजे कठन कठारी हो, (2)
कामदेव की बजे पखावज, नाचे ममता नारी हो, (2)
पाँच ठगों से प्यार तोड़ के, कर सतगुरु का जाप रे, (2)
धन सतगुरु का .....

3. गोरख नाथ मछंदर हारे, जब माया ने आँख दिखाई हो, (2)
गोरख नाथ का घोड़ा बना, ऊपर चढ़ ऐड़ लगाई हो, (2)
फिर न्यों बोली, वाह–वाह मेरा टरड़ा घोड़ा, नाचे आपो आप रे, (2)
धन सतगुरु का .....

4. ब्रह्मा, विष्णु, शिवजी हारे, जब माया ने रूप दिखाया हो, (2)
भस्मासुर का रूप धार, शिवजी को पकड़ हिलाया हो, (2)
नेजाधारी का फिर नेजा टूट गया, जब लगी कामदेव की थाप रे, (2)
धन सतगुरु का .....

5. श्रृंगी ऋषि, दुरवासा मुनि भी, कर–कर के तप हार गऐ, (2)
बड़े–बड़े बलि आऐ इस दुनियां में, काल शिकारी ने मार लिऐ, (2)
वेद व्यास कहे पारासुर ऋषि को, तुझे नन्हा कहूं के बाप रे, (2)
धन सतगुरु का .....

6. साठ हजार वर्ष तप किया नारद ने, एक घड़ी में खोया था, (2)
कामदेव की लगी चोट जब, मूंड पकड़कर रोया था, (2)
बंदर का फिर मुँह करवा लिया, विष्णु को दिया श्राप रे, (2)
धन सतगुरु का .....

7. घोर कलू[1] में सच्चा सतगुरु, सच्ची ताकत आई हो, (2)
परम सन्त का जिंदा राम, तैने माया पकड़ नचाई हो,(2)
कहे 'मस्ताना' जी कर सच्चा सौदा, फिर नहीं साँच को आँच रे, (2)
धन सतगुरु का .....

कठिन शब्दों के अर्थः-

1. कलू – कलियुग

नाम गुरु दा सच्चा होर कूड़ दा पसारा

[गुरु बानी]

नाम गुरु दा सच्चा, होर कूड़ दा पसारा, (2)

1. कूड़ राजा कूड़ प्रजा, (2)
कूड़ सब संसार, होर कूड़ दा .....

2. कूड़ मंडप कूड़ माड़ी, (2)
कूड़ बैसण हार, होर कूड़ दा .....

3. कूड़ सोना कूड़ रूपा, (2)
कूड़ पहनन हार, होर कूड़ दा .....

4. कूड़ काया कूड़ कप्पड़, (2)
कूड़ रूप अपार, होर कूड़ दा .....

5. कूड़ मियाँ कूड़ बीवी, (2)
खप होए खार, होर कूड़ दा .....

6. कूड़ कूड़े नेहो लागा, (2)
विसरया करतार, होर कूड़ दा .....

7. किस नाल कीजे दोस्ती, (2)
सब जग चलण हार, होर कूड़ दा .....

8. कूड़ मीठा कूड़ माख्यो, (2)
कूड़ डोबे पूर, होर कूड़ दा .....

9. 'नानक' वखाणे बेनती, (2)
तुध बाजों कूड़ों कूड़, होर कूड़ दा .....

नाम तुम्हारा हिरदै वासै

[गुरु अर्जुनदेव जी]

नाम तुम्हारा हिरदै वासै, सन्तन का संग पावौ, (2)

1. मांगो राम ते इक दान, राम ते इक दान, (2)
सगल मनोरथ पूरन होवै, सिमरो तुम्हरा नाम, (2)
नाम तुम्हारा हिरदै .....

2. चरन तुम्हारे हिरदै वासै, सन्तन का संग पावौ, (2)
सोग अग्न महं मन ना व्यापै, आठ पहर गुण गावौ, (2)
नाम तुम्हारा हिरदै .....

3. स्वस्थ बेवस्थ हर की सेवा, मध्यन्त प्रभ जापन, (2)
'नानक' रंग लगा परमेश्वर, बोहड़ जन्म ना छापन, (2)
नाम तुम्हारा हिरदै .....

नाम मिले नाम मिले तां जीवां

[गुरु बानी]

नाम मिले, नाम मिले तां जीवां, सतगुरु नाम मिले, (2)

1. तेरा कीता जातो नाहीं, (2) मैनूं जोग कितोई, सतगुरु .....

2. निर्गुणहारे कोई गुण नाहीं, (2) आपै तरस पयोई, सतगुरु .....

3. तरस पया मैं रहमत होई, (2) सतगुरु सजण मिलया, सतगुरु .....

4. 'नानक' नाम मिलै तां जीवां, (2) तन–मन थीवै हरेया, सतगुरु .....

प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो

[गुरु बानी]

प्रेम कियो, तिन ही प्रभ पायो, (2) प्रेम कियो

1. कहाँ भयो जो दोऊ लोचन मूँद कै, (2) बैठ रहो बक ध्यान लगायो, प्रेम .....
2. नात फिरयो लिए सात समुंद्रन, (2) लोक गयो परलोक गवायो, प्रेम .....
3. वास कियो विख्यान सो बैठ के, (2) ऐसे ही ऐस सो बैस बतायो, प्रेम .....
4. साँच कहों सुन लेहों सब्भै जन, (2) प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो, प्रेम .....

पाऐ लगों मोहे, करो बेनती

[गुरु अर्जुनदेव जी]

पाऐ लगों मोहे, करो बेनती, कोऊ सन्त, मिले वडभागी, (2)

1. प्रभ मिलवै को प्रीत मन लागी, (2) प्रभ मिलवै को प्रीत मन लागी, (2)
   पाऐ लगों .....
2. मन अरपो धन राखो आगै, (2) मन की मत मोहे सगल त्यागी, (2)
   पाऐ लगों .....
3. जो प्रभ की हर कथा सुनावै, (2) अनदिन फिरो तिस पीछै वैरागी, (2)
   पाऐ लगों .....
4. पूर्व कर्म अंकुर जब प्रगटै, (2) भेंटेयो पुरख रसिक बैरागी, (2)
   पाऐ लगों .....
5. मिटयो अंधेर मिलत हर 'नानक', (2) जन्म–जन्म की सोई जागी, (2)
   पाऐं लगो .....

पाखंड में कुछ नाहीं साधो

[कबीर साहब]

पाखंड में कुछ नाहीं साधो, पाखंड में कुछ नाहीं रे, (2)
पाखंडिया नर भोगे चौरासी, खोज करो मन माहीं रे, (2)

1. चुंच पंख बिन उड़ मेरे हंसला, उड़ता दीसे नाहीं रे, (2)
लाख कोस की खबर मंगा दे, तो भी मानू नाहीं रे,
पाखंड में कुछ .....

2. गुफा खुदा कर माहे वड़ बैठे, बैठो दीसे नाहीं रे, (2)
देही पलट कर जग भरमावे, तो भी मानू नाहीं रे,
पाखंड में कुछ .....

3. चिखा चिना[1] कर माहे वड़ बैठे, जलतो दीसे नाहीं रे, (2)
देही पलट कर सिंघ बन आवे, तो भी मानू नाहीं रे,
पाखंड में कुछ .....

4. जटा बंधा के महंत बन बैठे, अक्खियां खोले नाहीं रे, (2)
आध में जा के तकिया लगावे, तो भी मानू नाहीं रे,
पाखंड में कुछ .....

5. कागा सेती प्रीत लगा के, हंस बनेगा नाहीं रे, (2)
कहे 'कबीर' शब्द संग मिल के, हंसा तूं हो जाई रे,
पाखंड में कुछ .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. चिखा चिना – चिता बनाना

बिसर गई सब तात पराई

[गुरु बानी]

बिसर गई सब तात पराई, जब ते साध संगत मोहे पाई, (2)

1. ना को वैरी नाहीं बेगाना, सगल संग हमको बन आई, (2) बिसर .....

2. जो प्रभ कीनो सो भल मान्यो, ऐह सुमत साधु ते पाई, (2) बिसर .....

3. सब में रव रेहा प्रभ एको, पेख–पेख 'नानक' बिगसाई, (2) बिसर ....

भावें लख-लख तीर्थ न्हालै

[गुरु नानकदेव जी]

भावें लख–लख तीर्थ न्हालै, तेरी मुक्ति ना होणी सतसंग तों बिना, (2)

1. न्हावण चले तीर्थी, (2) मन खोटे तन चोर, तेरी मुक्ति ना .....

2. इक भौ लत्थी न्हातेयां, (2) दो भौ चड़ियस होर, तेरी मुक्ति ना .....

3. बाहरों धोती तूंबड़ी, (2) अंदर विष नकोर, तेरी मुक्ति ना .....

4. साध भले अण न्हातेयां, (2) चोर सो चोरां चोर, तेरी मुक्ति ना .....

मेरा सतगुरु प्रीतम प्यारा

[मस्ताना जी]

मेरा सतगुरु प्रीतम प्यारा, मैं भुल्ल गई नाम तुम्हारा, (2)

1. मैं हूं आत्मा तेरी सतगुरु, तूं मेरा पिता प्यारा, (2)
कैसे तुमसे बिछुड़ गई, मुझे बीत गया युग सारा,
शहनशाह बीत गया युग सारा, (2) मेरा सतगुरु प्रीतम .....

2. भजन करन को आई थी मैं, करके कौल करारा, (2)
जन्म–मरन मैं कैसे फँस गई, मेटो भरम हमारा,
शहनशाह मेटो भरम हमारा, (2) मेरा सतगुरु प्रीतम .....

3. तीन लोक का पिंजरा घड़ दिया, काल ने जाल पसारा, (2)
पाप–पुन्न की डाल हथकड़ी, मुझे जेली करके डारा,
शहनशाह जेली करके डारा, (2) मेरा सतगुरु प्रीतम .....

4. ठाकुर मंदिर पुजत–पुजत, युग बित गया कई हज़ारा, (2)
कोई खोजी हो तो जिंदा राम से मिला दे, बैठा घट में राम हमारा,
शहनशाह घट में राम हमारा, (2) मेरा सतगुरु प्रीतम .....

5. लाख चौरासी के बंधन में, बांधेया जीव हमारा, (2)
कर्म–धर्म सब कर–कर हारी, मैं नहा लई तीर्थ सारा,
शहनशाह नहा लई तीर्थ सारा, (2) मेरा सतगुरु प्रीतम .....

6. सत लोक ऊपर देश अलख, आगे अनामी अगम अपारा, (2)
कहे 'मस्ताना जी', ले लो दवाई, अब आ गया वैद्य हमारा,
शहनशाह आ गया वैद्य हमारा, (2) मेरा सतगुरु प्रीतम .....

मेहरांवालेया साईंयां रखीं चरनां दे कोल

[भाई नंद लाल जी]

मेहरांवालेया साईंयां रखीं चरनां दे कोल,
रखीं चरनां दे कोल, रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

1. मेरी फरियाद तेरे दर अग्गे, होर सुनावा कीहनूं, (2)
खोल ना दफ्तर ऐबां वाले, दर तो धक्क ना मैनूं, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

2. तैं जेहा मैनूं होर ना कोई, मैं जेहे लक्ख तैनूं, (2)
जे मेरे विच ऐब ना होंदे, तूं बख्शेंदा कीहनूं, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

3. जे अवगुण वेखें साहिबा, तां कोई नाहीं ठाव, (2)
जेते रोम शरीर दे, उस तों वद गुनाहों, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

4. औक्खे वेले को नहीं, ना बाबुल वीर ना मांव, (2)
सबै धक्का देवंदे, मेरी कोई ना पकड़े बाँह, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

5. तूं पापी पार लंघावंदा, तेरा बक्शनहारा नांव, (2)
बिन मंगया सब कुछ देवंदा, मेरा ठाकुर अगम अगाह, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

6. वेख ना लेख मत्थे दे मेरे, कर्मां ते ना जावीं, (2)
रखीं लाज बिरद दी सतगुरु, अपनी भक्ति लावीं, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

7. ऊंचे टीले चढ़–चढ़ वेखां, बिट–बिट अक्खीं झाकां, (2)
दरद विछोड़े प्रीतम वाले, मैं रो–रो मारां हाकां, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

8. लंघ गया गुरु कलगियां वाला, मेरी अक्खीं अग्गे सईयों, (2)
जानी पिच्छे जान असाडी, नैना रस्ते गईयों, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

9. रस्ते विच गुरु जी तेरे, ऐह दिल फरश विछावां, (2)
सोहणे चरन तुहाडे जोड़ा, ऐह दो नैण बणावां, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

10. विछड़ गया तेरे चरनां तो मैं, खोटेयां कर्मां करके, (2)
हरि जी मैनूं बक्श लवो, प्रभु अपनी कृपा करके, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

11. जवानी गई बुढ़ेपा आया, उमरां लग्गी किनारे, (2)
बीते जो तेरे चरनां दे विच, सोई भले दिहाड़े, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

12. बिरहों अग्नि अंदर जिवड़ा, ज्यों कोयला हो जावे, (2)
जिवें रसायनी सोने वाला, उलझ–उलझ मर जावे, (2)
रखीं चरनां दे कोल, मेहरांवालेया .....

मिल मेरे प्रीतमा जीओ

[गुरु बानी]

मिल मेरे प्रीतमा जीओ, तुध बिन खड़ी निमाणी, (2)
मैं नैणी नींद, ना आवै जीओ, भावै अन्न ना पाणी (1)
मिल मेरे प्रीतमा जीओ, तुध बिन खड़ी निमाणी, (2)

1. पाणी अन्न ना भावै, भरिऐ हावै, पिर बिन क्यों सुख पाईऐ, (2)
गुरु आगै करुं बेनती, जे गुरु भावै, मिल मेरे .....

2. ज्यों मेलै तिवें मिलाईऐ, आपे मेल लऐ सुख दाता, (2)
आप मिलया घर आऐ, मिल मेरे .....

3. 'नानक' कामण सदा सुहागण, ना पिर मरै ना जाऐ, (2)
मिल मेरे .....

मेरे दीन दयाला जी सुन लो बेनतियां

[गुरु बानी]

मेरे दीन दयाला जी, सुन लो बेनतियां, (2)

1. दीन दयाल सुनो बेनती, (2) हर प्रभ हर राया जी, सुन लो .....

2. हौं मांगों शरन हर नाम की, (2) हर–हर मुख पाया जी, सुन लो .....

3. भगत वछल हर बिरध है, (2) हर लाज रखाया जी, सुन लो .....

4. जन 'नानक' शरणागति, (2) हर नाम तराया जी, सुन लो .....

मैं खड़ी उडीकां जी

[गुरु बानी]

मैं खड़ी उडीकां जी, संगत दे वाली नूं, (2)

1. पंथ दे साहेब नित खड़ी, (2) मूंद यौवन वाली जी, संगत दे .....
2. हर–हर नाम चेताऐ गुर, (2) हर मार्ग चाली जी, संगत दे .....
3. मेरा तन–मन नाम उद्धार, (2) होमैं विष जाली जी, संगत दे .....
4. जन 'नानक' सतगुरु मेल हर, (2) मिलया वन माली जी, संगत दे .....

मना रे तेरी आदत ने

[कबीर साहब]

मना रे तेरी आदत ने, कोई बदलेगा हरिजन सूर, (2)

1. चोर जुआरी क्या बदलेंगे, माया के मजदूर, (2)
भांग धतूरा चिलम छूतरा, रहे नशे में चूर, मना रे .....
2. पाँच विषयों में लटपट रहता, सदा मतंगे चूर, (2)
इनको सुख सपने में भी नाहीं, रहे मालिक से दूर, मना रे .....
3. सुरत सिमरत वेद की रीति, सतसंग करो जरूर, (2)
जन्म–जन्म के पाप कटेंगे, हो जाएंगे माफ कसूर, मना रे .....
4. भक्ति प्रेम गुरु रामानंद लाई, कबीर करी भरपूर, (2)
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, वाजे अनहद धूर, मना रे .....

महरम होऐ सो जाने

[कबीर साहब]

महरम होऐ, सो जाने, साधो,
ऐसा देश हमारा, साधो, ऐसा देश हमारा, (2)

1. वेद–कतेब, पार नहीं पावत, (2)
कहन–सुनन से न्यारा, साधो, ऐसा देश .....

2. जात वर्ण कुल, क्रिया नाहीं, (2)
संध्या नेम उचारा, साधो, ऐसा देश .....

3. बिन जल बूँद, परत यहाँ भारी, (2)
नहीं मीठा नहीं खारा, साधो, ऐसा देश .....

4. सुन्न महल में, नौबत वाजे, (2)
किंगरी बीन सितारा, साधो, ऐसा देश .....

5. बिन बादल यहाँ, बिजली चमके, (2)
बिन सूरज उजियारा, साधो, ऐसा देश .....

6. बिना सीप यहाँ, मोती उपजे, (2)
बिन सुर शब्द उचारा, साधो, ऐसा देश .....

7. जोत ले जाए, ब्रह्म यहाँ दरसे, (2)
आगे अगम अपारा, साधो, ऐसा देश .....

8. कहो 'कबीर' वहाँ, रहन हमारी, (2)
बूझे गुरु मुख्तदारा, साधो, ऐसा देश .....

मलायक से बशर से

[सन्त कृपाल सिंह जी]

मलायक से, बशर से, हूर से, सबसे सिवा निकले,
हमारे शहनशाह दोनों जहानों से जुदा निकले, (2)
मलायक से .....

1. खुली जब आँख तो इन्सां के जामें में खुदा निकले, (2)
समझते थे उन्हें हम क्या इलाही और वह क्या निकले,
हमारे शहनशाह .....

2. खुदा जल्वानुमा उनमें खुदा में वह फ़ना निकले, (2)
ना वह उनसे जुदा निकला ना वह उससे जुदा निकले,
हमारे शहनशाह .....

3. मोहब्बत में वह कुछ इक दूसरे की मुब्तिला निकले, (2)
खुदा उन पर फिदा निकला, खुदा पर वह फिदा निकले,
हमारे शहनशाह .....

4. वजूदे खाके आलम में वह इसरारे बकां निकले, (2)
इसी कूचे खुदा खुद था इलाही वह खुद खुदा निकले,
हमारे शहनशाह .....

5. चलो दीदार कर लो आज ही सतसंग में उनका, (2)
खुदा जाने कयामत कब हो और क्या माजरा निकले,
हमारे शहनशाह .....

मैनूं छड्ड के कल्ली नूं तुर चलया

[बुल्लेशाह]

मैनूं छड्ड के कल्ली नूं तुर चलया, ते मेरे पल्ले की रह गया, (2)

1. फुल्लां नालों कूलेया, बहारां नालों प्यारेया,
आजा इक वारी मेरे दिल दे सहारेया,
आवीं वैदा दुखड़े हटान वालेया,
गल्ल सुण जावीं माहीं मेरे जाण वालेया, ते मेरे पल्ले .....

2. दस्स मैनूं किन्नें तैनूं कित्ता मजबूर वे,
केड़ी गल्लों प्यारेया वे चला मैत्थों दूर वे,
हो के अपना ते गैरां संग रल्लेया, ते मेरे पल्ले .....

3. मुख चन्न जेहा मेरे वल्लों मोड़ के,
मैनूं गमां दे चनाह विच रोड़ के,
दस्स ज़िंदगी गुजारां किवें कल्लेयां, ते मेरे पल्ले .....

4. तेरे राहां विच राह बण गईयां,
मुक जाण वाला साह बण गईयां,
की लब्भया बणा के मैनूं झल्लेया, ते मेरे पल्ले .....

5. मैनूं प्यार दे चबारे ते चढ़ा के,
पौड़ी खिच लई तूं अक्खियां मिला के,
जदों याद तेरी औंदी दिन ढल्लेयां, ते मेरे पल्ले .....

मैं क्यों कर तोड़ा जी

[गुरु बानी]

मैं क्यों कर तोड़ा जी, गुरु जी लग्गी प्रेम वाली डोरी, (2)

1. गलियां चीकड़ दूर कर, (2) मेरा नाल प्यारे न्यों, गुरु जी .....

2. जे चला तां भीजै कांबली, (2) जे रहां तां टूटे न्यों, गुरु जी .....

3. भीजो सीजो कांबली, (2) अल्लाह बरसै मेहों, गुरु जी .....

4. जाऐ मिलां तिना साजना, (2) मेरा टूटे नाहीं न्यों, गुरु जी .....

लख पापी तर गए जी

[गुरु बानी]

लख पापी तर गए जी, तेरा दर ऐसा, तेरा दर ऐसा, (2)

1. धन–धन राजा जनक है, (2) जिन सिमरन कियो विवेक, तेरा दर .....

2. एक घड़ी के सिमरने, (2) पापी तरे अनेक, तेरा दर .....

3. ऐसा सिमरन जाण कै, (2) सन्तां ने पकड़ी टेक, तेरा दर .....

4. 'नानक' सिमरन सार है, (2) मैनूं विसरै घड़ी ना एक, तेरा दर .....

लोच रेहा गुरु दर्शन दे तांई

[गुरु अर्जुनदेव जी]

लोच रेहा, गुरु दर्शन दे तांईं, मेरा मन लोच रेहा, (2)

1. मन लोचै गुर दर्शन ताईं (2) विलप करै चात्रक की न्याईं, मेरा .....

2. त्रिखा न उतरै शांत न आवै (2) बिन दर्शन सन्त प्यारे, मेरा .....

3. हौं घोली जीओ घोल घुमाई (2) गुर दर्शन सन्त प्यारे, मेरा .....

4. तेरा मुख सुहावा सहज धुन बानी (2) चिर होया देखे सारंग पानी, मेरा .....

5. धन सो देश जहाँ तूं वसया (2) मेरे साजन मीत मुरारे, मेरा .....

6. हौं घोली जीओं घोल घुमाई (2) तिस सच्चे गुर दरबारे, मेरा .....

7. इक घड़ी ना मिलते तां कलयुग होता (2) हुण कद मिलीऐ प्रिय तुध भगवंता, मेरा .....

8. मोहे रैण न विहावै नींद न आवै (2) बिन देखे गुर दरबारे, मेरा .....

9. हौं घोली जीओ घोल घुमाई (2) तिस सच्चे गुर दरबारे, मेरा .....

10. भाग होया गुरु सन्त मिलाया (2) प्रभ अविनाशी घर मांहे पाया, मेरा .....

11. सेव करी पल चसा ना विछुड़ा (2) जन नानक दास तुम्हारे, मेरा .....

12. हौं घोली जीओ घोल घुमाई (2) जन 'नानक' दास तुम्हारे, मेरा .....

रे मन स्याना हो जा

[मस्ताना जी]

रे मन स्याना हो जा, घेर लिया रे तैने टोटा, (2)
सच्चा सौदा करले रे, तेरा कर्जा हो गया मोटा, (2)

1. गर्भवास में करार किया, सतगुरु ने फंद छुड़ाया, (2)
बाल अवस्था खेलकूद में, जवानी में मद छाया, (2)
जवानी बीत बुढ़ापा आ गया, सिर धर लिया पाप बरोटा,
रे मन स्याना .....

2. कौडी–कौडी करके माया जोड़ी, जोड़या था माल बथेरा, (2)
ना कभी आया सन्त शरण में, तैने किया था मेरा–मेरा, (2)
चिड़िया जैसा रैन बसेरा, अंत खाक में लेटया,
रे मन स्याना .....

3. कभी–कभी रे मन साधु बन जाऐ, लम्बा शंख बजाता, (2)
झोली खपर घाल खाक में, घर–घर अलख जगाता, (2)
फिर मांग–मांग कर खाता रे, बिन भजन पराया रोटा,
रे मन स्याना .....

4. फिर जा मंदिर में टल्ल बजावे, लम्बा तिलक लगा के, (2)
आप घड़े उसे आप ही पूजे, पत्थर में राम बना के, (2)
धन पूजा का खा–खा मूर्ख, बन गया संडा झोटा,
रे मन स्याना .....

रब्बा लख-लख शुकर मनावां

[बुल्लेशाह]

रब्बा लख–लख शुकर मनावां, जे कदे मेरा यार मिल जावे, (2)

1. मैं किधरे मेरा माहीं किधरे,
सोहणा मिलदा नज़र न आवे, (2)
दिल दी कूक सुणे ओ शाला, किते इक वारी आ जावे,
ओहदा बण के फिरां मैं परछावां, जे कदे .....

2. की मेरे नाल कर गयों हद वे,
मेरे मगरों विछोड़ेया तूं लथ वे, (2)
जा वे मेरी जान नूं तू डाडा रोग लाया,
दस्स खां विछोड़ेया मैं तेरा की गंवाया,
ओहदे राहां विच अक्खियां विछावां, जे कदे .....

3. ओने केड़ी गल्लों नज़रां ने फेरियां,
रातां जाग–जाग लंघदियां मेरियां, (2)
लग्गे दिल उत्ते जख्म दिखावां, जे कदे .....

4. माहीं मिल पऐ तां खिड़–खिड़ हस पां,
मैं वी उजड़ी निमाणी किते वस पां, (2)
ओहदे प्यार दा मैं जापां सरनावां, जे कदे .....

5. नाहीं बोलेया ते नाहीं मैत्थों रुस्या,
अल्लाह जाने माहीं किवें मैत्थों खुस्सेया, (2)
ओहदे पैरां दी मैं धूड़ बन जावां, जे कदे .....

वंडदा हरदम नाम खज़ाने

[पाठी जी]

वंडदा[1] हरदम नाम खज़ाने, रज्ज के झोलियां भर लईऐ,
आया ऐ कृपाल दा बेटा, आओ दर्शन कर लईऐ, (2)

1. छूत–छात दे भरम हटा के, सीधे रस्ते पौंदा ऐ,
सच्चा नाम जपा के सबनूं, मालिक नाल मिलौंदा ऐ, (2)
ढो–ढुकाया रब सच्चे, तपदी होई जिंदड़ी ठार लईऐ,
आया ऐ कृपाल .....

2. मानस जामा लाल अमुल्ला[2], सन्त शरण विच जोड़ लईऐ,
परमार्थ दे रस्ते चल के, मन बदियां तों मोड़ लईऐ, (2)
सोहणे माहीं दे दर्शन करके, भवसागर तों तर लईऐ,
आया ऐ कृपाल .....

3. सीधी साधी सूरत दिस्सदी, विच्चों गहर गंभीर होया,
मालिक दी खोज करने खातिर, सुख छड्डे फकीर होया, (2)
जे बक्शे जाण गुनाह असाडे, सिर चरणां ते धर लईऐ,
आया ऐ कृपाल .....

4. जिस माहीं दा अज भंडारा, उस गरीबी धारी ऐ,
बचन मन कृपाल सावन दे, डुबदी दुनियां तारी ऐ, (2)
ऐसे सन्त दी संगत करके, जन्म सवल्ला[3] कर लईऐ,
आया ऐ कृपाल .....

5. लाल सिंह हरनाम कौर दा, बणया पुत्र प्यारा ऐ,
गरीब अजायब नाम औसदा, पर दुखियां दा सहारा ऐ, (2)
होण वधाईयां संगत नूं, 'पाठी जी' पल्ला फड़ लईऐ,
आया ऐ कृपाल .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. वंडदा – बांटना   2. लाल अमुल्ला – अमूल्य लाल   3. सवल्ला – सफल

सईयो नीं अज शुभ दिहाड़ा आया ऐ

[पाठी जी]

सईयो नीं अज शुभ दिहाड़ा आया ऐ,
भागजिन्हां दे चंग्गे दर्शन पाया ऐ, (2)

1. जिस थां सतगुरु बैठ गए, धरती नूं भाग लगाऐ,
जंगलां ते पहाड़ां दे विच, सोहणे बाग सजाऐ, (2)
खेल रचाया ऐ, भाग जिन्हां दे .....

2. दूर–दूर तों संगत आई, खुशियाँ खूब मनाईयां,
दर्शन करने खातिर परियाँ, स्वर्गां तों चल आईयां, (2)
मंगल गाया ऐ, भाग जिन्हां दे .....

3. सावन ते कृपाल गुरु ने, अजब ही खेल रचा के,
राजस्थान दे टिब्बेयां[1] दे विच, चंदन बूटा ला के, (2)
महक खिंडाया ऐ, भाग जिन्हां दे .....

4. माता हरनाम कौर नूं देओ वधाईयां, जिस दी कुख दा जाया,
पिता लाल सिंह नूं खुशियां होईयां, नाम अजायब रखाया, (2)
कुल तराया ऐ, भाग जिन्हां दे .....

5. बक्शो मेहरां वाले दाता, असीं हां औगुणहारे,
संगत जी अज खुशियां दे विच, दयो वधाईयां सारे, (2)
'पाठी' ने गाया ऐ, भाग जिन्हां दे .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. टिब्बेयां – टीले

सच्चया गुरु मेहरबाना

[गुरु बानी]

सच्चया गुरु मेहरबाना, मेरा रंग दे मजीठी चोला,

1. काया रंगण जे थीऐ प्यारे, (2) पाईऐ नाओं मजीठ,
मेरा रंग दे .....

2. रंगण वाला जे रंगै साहेब, (2) ऐसा रंग न डीठ,
मेरा रंग दे .....

3. चोले जिनके रत्तड़े प्यारे, (2) कंत तिना के पास,
मेरा रंग दे .....

4. धूड़ तिना की जे मिलै, (2) कहो 'नानक' की अरदास,
मेरा रंग दे .....

सत संगत बाजों जी

[गुरु बानी]

सत संगत बाजों जी, तरया भवसागर नहीं जाणा, (2)

1. एक घड़ी आधी घड़ी, (2) आधी हूँ ते आध, तरया .....

2. भगत ना सेती गोष्ठी, (2) जो कीन्हों सो लाभ, तरया ....

3. ऐह मानस जन्म दुर्लभ है, (2) होत ना बारम्बार, तरया .....

4. ज्यों वन फल पक्के भोऐं गिरै, (2) बोहर ना लागै डार, तरया .....

5. सत संगत सोई जाणिऐ, (2) जित्थे इक्को नाम वखाणीऐ, तरया .....

सत संगत जग सार साधो

[ब्रह्मानंद जी]

सत संगत जग सार साधो, सत संगत जग सार रे, (2)

1. काशी नहाऐ, मथुरा नहाऐ, नहाऐ हरिद्वार रे, (2)
चार धाम तीर्थ फिर आऐ, मन का नहीं सुधार रे,
सत संगत जग .....

2. वन में जाऐ कियो तप भारी, काया कष्ट अपार रे, (2)
इन्द्री जीत करे वस अपने, हृदय नहीं विचार रे,
सत संगत जग .....

3. मंदिर जाऐ करे नित पूजा, राखे बड़ो अचार रे, (2)
साधु जन की कदर ना जाने, मिले ना सिरजनहार रे,
सत संगत जग .....

4. बिन सतसंग ज्ञान नहीं उपजे, कर ले यत्न हजार रे, (2)
'ब्रह्मानंद' खोज गुरु पूरा, उतरो भवजल पार रे,
सत संगत जग .....

सतगुरु के गुण गा ले बंदे

[मस्ताना जी]

सतगुरु के गुण गा ले बंदे, जन्म–मरण मुक जाऐगा,
शरण पड़े की लाज है उसको, यम से तुझे बचाऐगा, (2)

1. यह दुनियां है चार दिनों की, जगत मुसाफिर खाना है,
यह देश नहीं तेरा बंदे, तेरा और टिकाना है, (2)
खाली हाथ जगत में आया, हाथ पसारे जाऐगा,
शरण पड़े की .....

2. ऐसा मस्त हुआ विषयों में, जीवन अपना धूल किया,
घेर लिया माया ठगनी ने, भूल गया तूं भूल गया, (2)
सतगुरु के दरबार में जाकर, क्या पूंजी दिखलाऐगा,
शरण पड़े की .....

3. झूठे हैं सब जग के नाते, झूठा बहन–भ्राता है,
साथ तेरे जाने वाला, इक सतगुरु का नाता है, (2)
बिन सतगुरु के पागल मनुआ, भव में गोते खाऐगा,
शरण पड़े की .....

4. कर्मकांड में उम्र गुजारी, प्रीत नाम से लाई ना,
मड़ी मसानी रहा पूजता, अंदर झाती पाई ना, (2)
नाम शब्द बिना कहें 'मस्ताना जी' हीरा जन्म गवांऐगा,
शरण पड़े की .....

सतगुरु पूरा जिन सुणया पेखया

[गुरु बानी]

सतगुरु पूरा जिन सुणया पेखया, (2)
से फिर गर्भास ना परया रे, (2)

1. कोट ब्रह्मांड को ठाकुर स्वामी (2), सर्व जीयां का दाता रे (2)
प्रतिपाले नित्त सार समाले (2), इक, गुण नहीं मूर्ख जाता रे (2)
सतगुरु पूरा जिन .....

2. हर आराध ना जाना रे, (2) हर–हर गुरु–गुरु करता रे (2)
हर जीओ नाम परयो रामदास (2)
सतगुरु पूरा जिन .....

3. दीन दयाल कृपाल सुख सागर (2), सर्व घटा भरपूरी रे (2)
पेखत सुनत सदा है संगे (2), मैं मूर्ख जाणेया दूरी रे (2)
सतगुरु पूरा जिन .....

4. हर बेअंत हो मित्त कर वरनो (2), क्या जाना होऐ कैसो रे (2)
करो बेनती सतगुरु अपने (2), मैं मूर्ख देहो उपदेशो रे (2)
सतगुरु पूरा जिन .....

5. मैं मूर्ख की केतक बात है (2), कोट अपराधी तरेया रे (2)
गुरु 'नानक' जिन सुणया पेखया (2), से फिर गर्भास ना परया रे (2)
सतगुरु पूरा जिन .....

सतगुरू प्रीतम प्यारा

[गुरु बानी]

सतगुरु प्रीतम प्यारा, कोई आण के मिलावै, (2)

1. कोई आण मिलावै, मेरा प्रीतम प्यारा, (2)
हौं तिस पै आप वेचाई, जी कोई आण .....

2. दर्शन हर देखन कै ताईं, (2)
हर देखन कै ताईं, जी कोई आण .....

3. कृपा करे तां सतगुरु मेलै, (2)
हर–हर नाम ध्याई, जी कोई आण .....

4. जे सुख दे तां तुझे अराधी, (2)
दुःख भी तुझे ध्याई, जी कोई आण .....

5. जे भुख दे तां इत्त ही रज्जां, (2)
दुःख विच सुख मनाई, जी कोई आण .....

6. तन–मन काट–काट सब अरपी, (2)
विच अग्नि आप जलाई, जी कोई आण .....

7. पक्खा फेरी पानी ढोवां, (2)
जो देवै सो खाई, जी कोई आण .....

8. 'नानक' गरीब ढह पया द्वारै, (2)
हर मेल लेहो वडयाई, जी कोई आण .....

सतगुरु सावन शाह

[बाबा सोमनाथ जी]

सतगुरु सावन शाह, मेरा चित्त हर लिया जी, (2)

1. जित्त देखूं तित्त तू आप दिखाई,
गति मति तन की स्थिति भूल गई, (2)
चंद्र चकोर ध्यान लाया जी,
मेरा चित्त हर .....

2. दिन को चैन ना रात को शयना,
मन में मेरे तूं घर कीनां, (2)
कौन सुने कहाँ जाना जी,
मेरा चित्त हर .....

3. नयन बहे जस झरना नीर,
कान कलेजे विच लागी तीर, (2)
जान चाहत अब जीया जी,
मेरा चित्त हर .....

4. तुझ बिन जाऊं कौनी ओर,
एक तू ही है, अंदर–बाहर, (2)
मन मंदिर अंदर वसया जी,
मेरा चित्त हर .....

5. दास 'सोमनाथ' ध्यान में रहे नित्त,
आस एक तेरे बालक पित–मात, (2)
फांस काट दियो माया जी,
मेरा चित्त हर .....

सगल सृष्टि का राजा दुःखिया

[गुरु अर्जुनदेव जी]

सगल सृष्टि का राजा दुःखिया,
हर का नाम जपत होऐ सुखिया, (2)

1. लाख करोरी बंधन परै, (2)
हर का नाम जपत निस तरै, सगल सृष्टि .....

2. अनक माया रंग तिख ना बुझावै, (2)
हर का नाम जपत आघावै, सगल सृष्टि .....

3. यह मार्ग ऐह जात अकेला, (2)
हर का नाम संग होत सुहेला, सगल सृष्टि .....

4. ऐसा नाम मन सदा ध्याईऐ, (2)
नानक गुरमुख परमगत पाईऐ, सगल सृष्टि .....

5. यह मार्ग के गने जाऐ ना कोसा, (2)
हर का नाम उंहा संग तोसा, सगल सृष्टि .....

6. यह पैंडे महां अंध गंवारा, (2)
हर का नाम संग होत उजियारा, सगल सृष्टि .....

7. यह पंथ तेरा को ना स्यानूं, (2)
हर का नाम तहं नाल पछानूं, सगल सृष्टि .....

8. यह महा भयान तपत बहो धाम, (2)
तहं हर के नाम की तुम ऊपर छाम, सगल सृष्टि .....

9. यह त्रिखा मन तुझ अकरखै, (2)
तहं 'नानक' हर हर अमृत वरखै, सगल सृष्टि .....

सभै घट राम बोलै रामा बोले

[गुरु बानी]

सभै घट राम बोलै रामा बोले,
राम बिना को बोलै रे, सभै घट राम बोलै, (2)

1. एकल माटी कुंचर चिट्टी, (2) भाजन को बहु नाना रे, सभै .....
2. अस्थावर जंगम कीट पतंगम, (2) घट–घट राम समाना रे, सभै .....
3. एकल चिंता राख अनंता, (2) और तजहो सब आसा रे, सभै .....
4. परणवै नामा भऐ नेह कामा, (2) को ठाकुर को दासा रे, सभै .....

साडे वल मुखड़ा मोड़ प्यारेया

[बुल्लेशाह]

साडे वल मुखड़ा मोड़ प्यारेया, साडे वल मुखड़ा मोड़, (2)

1. आपे ही तूं कुंडियां लाईयां, (2) आपे खिचदा डोर प्यारेया, साडे .....
2. अरश–फरश तों बांगा मिलियां, (2) मक्के पै गया शोर प्यारेया, साडे .....
3. डोली पा के लै चले खेड़े, (2) उजर न चलदा जोर प्यारेया, साडे .....
4. जे माऐं तैनूं खेड़े प्यारे, (2) डोली पा किसे होर प्यारेया, साडे .....
5. 'बुल्लेशाह' असीं मरना नाहीं, (2) मर गया कोई होर प्यारेया, साडे .....

सन्त का मार्ग धर्म की पौड़ी

[गुरु बानी]

सन्त का मार्ग धर्म की पौड़ी, को वडभागी पाए, (2)

1. गुर पूरे कृपा धारी, प्रभ पूरी लोच हमारी, (2)
कर स्नान गृह आऐ, आनंद मंगल सुख पाऐ,
सन्त का मार्ग .....

2. सन्तों राम–नाम निस तरिऐ, राम–नाम निस तरिऐ, (2)
उठत–बैठत हर–हर ध्याईऐ, अनदिन शुक्रत करिऐ,
सन्त का मार्ग .....

3. सन्त का मार्ग धर्म की पौड़ी को वडभागी पाऐ, (2)
कोट जन्म के किल–विख ना सहे, हर चरनीं चित्त लाऐ,
सन्त का मार्ग .....

4. उसत्त करो सदा प्रभ अपने, जिन पूरी कल राखी, (2)
जिया जंत सब भऐ पवित्रा, सतगुरु की सच साखी,
सन्त का मार्ग .....

5. बिघन विनासन सब दुःख नासन, सतगुरु नाम दरड़ाया, (2)
खोए पाप भऐ सब पावन, जन 'नानक' सुख घर आया,
सन्त का मार्ग .....

साधुआं धूड़ी कर इशनान

[गुरु बानी]

साधुआं धूड़ी कर इशनान, मिल के साधुआं, (2)

1. माघ मजन संग साधुआं (2) धूड़ी कर इशनान, मिल के .....
2. हर का नाम ध्याऐ सुन (2) सबना नों कर दान, मिल के .....
3. जन्म कर्म मल ऊतरै (2) मन ते जाऐ गुमान, मिल के .....
4. काम क्रोध ना मोहियै (2) बिनसे लोभ सुआन, मिल के .....
5. सच्चे मार्ग चलदेयां (2) उसत्त करे जहान, मिल के .....
6. अठसठ तीर्थ सगल पुन्न (2) जीव दया परवान, मिल के .....
7. जिस नूं देवे दया कर (2) सोई पुरख सुजान, मिल के .....
8. जिन्नां मिलया प्रभ आपना (2) 'नानक' तिस कुरबान, मिल के .....
9. माघ सुच्चे ते काडिऐ (2) जिन पूरा गुरु मेहरवान, मिल के .....

साडा हाल मरीदां दा कहना

[गुरु बानी]

साडा हाल मरीदां दा कहना, मित्र प्यारे नूं, (2)

1. तुध बिन रोग रजाईयां दे ओढण, (2) नाग निवासां दे रहना, मित्र .....

2. सूल सुराही खंजर प्याला, (2) विंग कसाईयां दे सहना, मित्र .....

3. यारड़े दा सानूं सत्थर चंगा, (2) भट्ठ खेड़यां दे रहना, मित्र .....

सावन कभी आओ कभी आओ

[सन्त कृपाल सिंह जी]

सावन कभी आओ, कभी आओ, कभी आओ,
उजड़ी हुई दुनियां को मेरी, आ के बसाओ, (2)

1. तुम पास नहीं कौन सुने मेरी कहानी,
सावन कभी आओ तो सुनो मेरी जुबानी, (2)
मैं तेरे सिवा किसको कहूं यह तो बताओ, उजड़ी हुई .....

2. यौवन पे जवानी है और चांदनी रातें,
तुम भूल गए सावन क्यों प्यार की बातें, (2)
जब प्रीत लगाई है तो अब तोड़ निभाओ, उजड़ी हुई .....

3. आँखों ने तेरी याद में सौ अश्क बहाऐ,
आहों ने मेरे सीने में तूफान उठाऐ, (2)
रोते हुए हिरदे को मेरे आ के हँसाओ, उजड़ी हुई .....

सावन कृपाल प्यारे आऐ अजायब दुलारे

[पाठी जी]

सावन कृपाल प्यारे, आऐ अजायब दुलारे,
जी अज सारे होण खुशियां, (2)

1. घर–घर खुशी मनौंदे सारे, सावन झड़ियां लाईयां,
गीत प्यार दे गावन नूं, अरशां[1] तों परियां आईयां, (2)
मोहनी मूरत दिल नूं ठारे, अमृत दे पैण फुहारे, जी अज .....

2. घट–घट दे विच मालिक वसदा, प्रेम दा सबक सिखौंदे,
परमार्थ दा रस्ता दस्स के, मालिक नाल मिलौंदे, (2)
सतसंगत दिन आया, ओह सोहणा नूर सुहाया, जी अज .....

3. जित्थे सतगुरु बैठ गए, धरती नूं भाग लगाया,
वाशना[2] फैली नाम दी, जंगल विच मंगल लाया, (2)
सब गीत गुरु दे गाओ, ज़िंदगी नूं सफल बनाओ, जी अज .....

4. बूटे लाऐ सावन ने, कृपाल ने पानी पाया,
मेहनत करी अजायब सन्त, सावन दा नां चमकाया, (2)
कृपाल सुणी अरजोई, अजायब ते कृपा होई, जी अज .....

5. लाल सिंह दा लाल प्यारा, नाम अजायब रखाया,
पुत्र बन हरनाम कौर दा, जग विच खेल रचाया, (2)
'पाठी जी' संगता आईयां, संगत नूं दयो वधाईयां, जी अज .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. अरशां – आकाश 2. वाशना – खुशबू

सावन दा तूं लाल जी

सावन दा तूं लाल जी, कृपाल जी, सारे जग दा तूं वाली,
आई तेरे दरबार जी, झोली भर दयो खाली, (2)

1. मेरे जेईयां तैनूं लक्खां ते हजारां,(2)
मैं वी तां खड़ी सतगुरु तैनूं पुकारां,(2)
फसी हां विच मझधार दे, तेरे द्वार वे,
आई रूलदी रूलांदी, गले लगा ले सतगुरु प्यारेया
मेरी पेश ना जांदी, सावन दा तूं .....

2. कीते सी कौल दाता, आ के निभा जा,(2)
भुल्ल जा भुल्ल मेरी, दिल च समा जा,(2)
खुले हैं सारे रास्ते, तेरे वास्ते मेरे सतगुरु प्यारे,
कट लवांगी सारे दुःखड़े
इक तेरे सहारे, सावन दा तूं .....

3. चंदा वी रो–रो के, बदलां च लुक गया,(2)
मेरियां अक्खियां दा, पानी वी सुक गया,(2)
मुक गई सारी रात वे, होई प्रभात वे,
तूं अजे वी ना आया, की करां मेरे सोहणया
दिल भर–भर आया, सावन दा तूं .....

4. सारी उम्र तेरी, तांघ विच रोवांगी,(2)
झूठी है सेज, सच्ची, सेज उत्ते सोवांगी,(2)
दासी कहे कृपाल वे, दीन दयाल वे,
झूठा जग है सारा, सच्चा रिश्ता है
तुम्हारा हमारा, सावन दा तूं .....

सावन गले लगाकर

[सन्त कृपाल सिंह जी]

सावन गले लगाकर, बाहों का हार डालो,
शैदा बना के अपना, उल्फ़त में मार डालो, (2) सावन गले .....

1. आँखों में बस रहे हो, घर दिल में कर चुके हो, (2)
अब तो हया का पर्दा, रुख से उतार डालो, सावन गले .....

2. मजनूं की कब्र पर ये, कुत्बा लगा हुआ था, (2)
नाम–ए–वफा पे सब कुछ, तन–मन भी वार डालो, सावन गले .....

3. उल्फ़त में हाय अब तो, इक जान बच रही है, (2)
उसको भी ए 'जमाल' अब, बाज़ी में हार डालो, सावन गले .....

साहिबा जी तेरे दर्शन दी लोड़

[गुरु बानी]

साहिबा जी तेरे दर्शन दी लोड़, सतगुरु मेरा,(2) (2)

1. दर्शन देख जिवां गुरु तेरा, (2) पूर्ण कर्म होवे प्रभ मेरा, (2)
साहिबा जी तेरे .....

2. ऐहो बेनंती सुनो प्रभ मेरे, (2) देहो नाम कर अपने चेरे, (2)
साहिबा जी तेरे .....

3. अपनी शरण राखो प्रभ दाते, (2) गुरु प्रसाद किनै विरले जाते, (2)
साहिबा जी तेरे .....

4. सुनो बिनो प्रभ मेरे मीता, (2) चरन कमल बसहो मेरे चीता, (2)
साहिबा जी तेरे .....

5. 'नानक' एक करै अरदास, (2) बिसर नाहीं पूरण गुण तास, (2)
साहिबा जी तेरे .....

साँस-साँस सिमरो गोबिंद

[गुरु अर्जुनदेव जी]

साँस–साँस सिमरो गोबिंद, मन अंतर की उतरै चिंत, (2)

1. पूरे गुरु का सुन उपदेश, (2) पारब्रह्म निकट कर पेख, (2)
साँस–साँस .....

2. आस अनित त्यागो तरंग, (2) सन्त जनां की धूर मन मंग, (2)
साँस–साँस .....

3. आप छोड़ बेनती करो, (2) साध संग अग्न सागर तरो, (2)
साँस–साँस .....

4. हर धन के भर लेहो भंडार, (2) 'नानक' गुरु पूरे नमस्कार, (2)
साँस–साँस .....

सुनो बेनती मेरी सतगुरु जी

[कबीर साहब]

सुनो बेनती, मेरी सतगुरु जी, (2)

1. करबत भला ना करवट तेरी, (2) लाग गले सुनो बेनती मेरी, सुनो .....

2. हौं वारी मुख फेर प्यारे, (2) करवट दे मोहे काहे को मारे, सुनो .....

3. जे तन चीरे अंग ना मोरां, (2) पिंड परे तों प्रीत ना तोरां, सुनो .....

4. हम तुम बीच भयो नहीं कोई, (2) तुम सो कंत नार हम सोई, सुनो .....

5. कहत 'कबीर' सुनो रे लोई, (2) अब तुमरी प्रतीत ना होई, सुनो ....

सोई धरत नसीबां वाली

[गुरु बानी]

सोई धरत नसीबां वाली, जित्थे मेरा गुरु वसदा, (2)

1. से धरत भई हरियावली जी, (2) जित्थे मेरा सतगुरु बैठा आऐ,
   जित्थे मेरा .....
2. सो जंत भऐ हरियावले जी, (2) जिन्हां मेरा सतगुरु देखया जाऐ,
   जित्थे मेरा .....
3. धन–धन पिता, धन–धन कुल, (2)धन–धन सो जननी, जिन गुरु जणेया माऐ,
   जित्थे मेरा .....
4. धन–धन गुरु जिन नाम अराधया(2)आप तरया जिन्हां डिट्ठा, तिन्हां लऐ छुड़ाऐ,
   जित्थे मेरा .....
5. हर सतगुरु मेलो दया कर,(2) जन 'नानक' धोवां पाऐ,
   जित्थे मेरा .....

सोई थान सुहावा

[गुरु बानी]

सोई थान सुहावा, प्यारेया, सोई थान सुहावा, (2)

1. जित्थे जाऐ बहे मेरा सतगुरु जी, (2) सोई थान सुहावा प्यारेया, सोई ....
2. गुरु सिक्खीं सो थान भालया, (2) लै धूड़ मुख लावां प्यारेया, सोई.....
3. गुरु सिक्खां दी घाल थाऐं भई, (2) जिन हर नाम ध्यावा प्यारेया, सोई.....
4. जिनां 'नानक' सतगुरु पूज्या, (2) तिन हर पूज करावा प्यारेया, सोई.....

सोहणे सतगुरु दा अज जन्म दिहाड़ा ऐ

सोहणे सतगुरु दा, अज जन्म दिहाड़ा ऐ,
जन्म दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ,
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ, (2)

1. अज जन्म दिहाड़े दी, बड़ी शान निराली ऐ,
मेरे सोहणे प्रीतम ते, अज वखरी[1] लाली ऐ, (2)
चोला बदल के तूं, अजायब सदाया ऐं,
सोहणे सतगुरु .....

2. ऐह नूरी मुखड़ा जी, अज जग विच आया ऐ,
लक्खां दुःखी गरीबां नूं, गुरां आण बचाया ऐ, (2)
पिता लाल सिंह नूं जी, अज लाल थमाया ऐ,
सोहणे सतगुरु .....

3. तेरे चोज़[2] निराले ने, तेरी शान निराली ऐ,
तूं आ के प्रीतम जी, करदा रखवाली ऐं, (2)
नूर पुराना ऐ, नवां चोला पाया ऐ,
सोहणे सतगुरु .....

4. रब जग विच आया ऐ, जावां बलिहारी मैं,
कोई पुछदा ना मैनूं, फिरां विचारी मैं, (2)
अपनी जाण मैनूं, रब आण बचाया ऐ,
सोहणे सतगुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ :-

1. वखरी – अलग 2. चोज़ – मौज

5. नानक बन आवे तूं, कदे दास कबीरा जी,
कदी अंगद अर्जुन तूं, कदे शाह फकीरा जी, (2)
तुलसी बण गोबिंद ने, स्वामी सदाया ऐ,
सोहणे सतगुरु .....

6. कदी बण जयमल आवें, शिवदयाल स्वामी जी,
रब बण अजायब आवें, कृपाल अनामी जी, (2)
रब सावन बणया ऐ, अमृत बरसाया ऐ,
सोहणे सतगुरु .....

7. अल्लाह ईश्वर दा, मैं जन्म मनौंदी आं,
तूं बक्श लवीं मैंनूं, तेरे तरले पौंदी[1] आं, (2)
'जत्थेदार' निमाणे ने, तेरा भेद ना पाया ऐ,
सोहणे सतगुरु .....

कठिन शब्दों के अर्थ:-

1. तरले पौंदी – मिन्नतें करना

हरि मो को ले चल अपने धाम

[सन्त कृपाल सिंह जी महाराज]

हरि मो को ले चल अपने धाम, (2)

1. मन इन्द्री रस लोभ लुभाना, बसियो हाड मांस को चाम, (2)
हरि मो को .....

2. तन–मन के पिंजरे में बैठकर, भूल गयो अपना धाम, (2)
मोह माया का रूप हो गयो, बसियो जादू के धाम,
हरि मो को .....

3. अब निकसूं कस निकसियां जाऐ, कर बैठयो इसमें बिसराम, (2)
हरि सतगुरु मोहे आन बचावो, नहीं तो पड़ा रहूँ इस धाम,
हरि मो को .....

4. बात बनाऊं करु कुछ नाहीं, कस पहुंचू प्रीतम तोरे गाम, (2)
घट के पट खोलो मोर हरि ज्यों, मैं तो आन पड़ा तेरी छाम,
हरि मो को .....

5. मैं अवगुण भरा कोई गुण नाहीं, किस मुँह से करूं प्रणाम, (2)
आपन बिरद आप कर राख्यो, हरि जी दास ऊपर सिर छाम,
हरि मो को .....

हौं कुरबाने जाओं मेहरबाना

[गुरु अर्जुनदेव जी]

हौं कुरबाने जाओं मेहरबाना, हौं कुरबाने जाओं,
हौं कुरबाने जाओं तिन्हां के, लैण जो तेरा नाओं,
लैंण जो तेरा नाओं, तिन्हां के हौं सद कुरबाने जाओं, (2)

1. ऐह तन माया पाया प्यारे, लीतड़ा लभ रंगाए,
मेरे कंत ना भावै चोलड़ा प्यारे,
क्यों तन से जे जाऐ,(2) (2)
हौं कुरबाने .....

2. काया रंगण जे थिऐ प्यारे, पाईऐ नौं मजीठ,
रंगण वाला जे रंगै साहब,
ऐसा रंग ना डीठ,(2) (2)
हौं कुरबाने .....

3. चोले जिनके रतड़े प्यारे, कंत तिन्हां के पास,
धूड़ तिन्हां की जे मिलै जी,
कहो नानक की अरदास,(2) (2)
हौं कुरबाने .....

4. आपै साजे आपै रंगे, आपै नदर करे,
'नानक' कामण कंते भावै,
आपै ही रावै,(2) (2)
हौं कुरबाने .....